उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का परिचय एवं परामर्श

(Introduction and counselling of Children with special need)

इकाई संख्या	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
खण्ड 1.	**विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा (Concept of Children with special needs (CWSN)**	
इकाई-1	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा, प्रकार एवं आवश्यकताएं (Concept, Type and Needs of Children with special needs)	1-26
इकाई-2	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं विकास:भारतीय एवं पाश्चात्य (Historical perspective and Development of Children with special needs: Indian and western)	27-48
इकाई-3	नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (Children with special needs in NEP Context)	49-60
खण्ड 2	**विशेष आवश्यकता वाले बच्चों से संबंधित शैक्षिक प्रावधान (Educational Provision related to CWSN)**	
इकाई-4	CWSN के लिए शैक्षिक प्रावधान (Educational provisions for CWSN)	61-80
इकाई-5	CWSNके लिए पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दे और चिंताएं (Curricular issues and concerns of CWSN)	81-92
इकाई-6	समावेशी व्यवस्था में CWSN के शिक्षण की पद्धति (Methodology of teaching of CWSN in an Inclusive Set-up)	93-107
खण्ड 3	**विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निर्देशन और परामर्श की आवश्यकता (Need of Guidance and Counselling to CWSN)**	
इकाई-7	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक समस्याएँ (Socio-Emotional Problems of children with special needs)	108-121
इकाई 8.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता- पिता के मनोवैज्ञानिक मुद्दे (Psychological Issues of Parents of children with special needs)	122-130
इकाई 9.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निर्देशन एवं परामर्श की तकनीकें (Techniques of Guidance and Counseling children with special needs	131-143

इकाई 1. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा,प्रकार एवं आवश्यकताएं (Concept, Type and Needs of Children with special needs)

इकाई संरचना

1.1प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा

1.4 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रकार

1.4 .1 संवेदी अक्षमताएं(Sensory Disabilities)

1.4.2 गामक अक्षमताएं(Locomotors Disabilities)

1.4.2.1 बहुअक्षमताएं-(Multiple Disabilities)

1.4.3 तंत्रिका विकासात्मक अक्षमताएं(Neuro developmental disabilities)

1.4.3.1 विशिष्ट अधिगम अक्षमताएं(Spesific Learning Disabilities)

1.4.3.2 बौद्धिक अक्षमता(Intellectual Disability)

1.4.3.3.ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (ASD)

1.4.4 व्यवहारिक या भावनात्मक अक्षमता /Behavioural or Emotional

1.4.4.1 व्यवहारिक या भावनात्मक अक्षमता के प्रकार/Types ofBehavioural or Emotional Disability

1.5 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकताएं)Needs of Children with special needs)

1.6 सारांश

1.7 शब्दावली

1.8 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नऔर उनके उत्तर

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तावना- दुनिया की पंद्रह प्रतिशत आबादी - कम से कम एक अरब लोग - किसी न किसी तरह की विकलांगता से पीड़ित हैं, चाहे वह जन्म से ही मौजूद हो या जीवन में बाद में प्राप्त हुई हो। उनमें से लगभग 240 मिलियन बच्चे हैं। विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन (UNCRPD-2006) विकलांगता के साथ जीने को दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और संवेदी विकलांगता के रूप में परिभाषित करता है जो – अपने वातवरण के साथ बातचीत में - दूसरों के साथ समान आधार पर समाज में किसी की भागीदारी में बाधा डालती है। विकलांग बच्चे और किशोर व्यापक जीवन के अनुभवों के साथ एक अत्यधिक विविध समूह हैं। वे हर समुदाय में रहते हैं, और अलग-अलग विकलांगताओं के साथ पैदा होते हैं या प्राप्त करते हैं, जो उनके परिवेश के संबंध में, कार्यात्मक कठिनाइयों का कारण बनते हैं - जैसे देखना, चलना, संवाद करना, खुद की देखभाल करना या दोस्त बनाना। लेकिन विकलांग बच्चे किस हद तक काम करने, समाज में भाग लेने और संतुष्ट जीवन जीने में सक्षम हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें किस हद तक समायोजित और शामिल किया जाता है। उनकी कहानी चाहे जो भी हो, हर बच्चे को आगे बढ़ने का पूरा अधिकार है।

1.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की को परिभाषित कर सकेंगे।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को वर्गीकृत कर पाएंगे।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकताएंको जान पाएगें

1.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा

CRPD के अनुसार, अक्षम बच्चों में "वे बच्चे शामिल हैं जिनमें दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी अक्षमता है जो विभिन्न बाधाओं के साथ मिलकर समाज में समान आधार पर उनकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डाल सकती है"। विकलांग बच्चे अत्यधिक विविध जनसंख्या समूह हैं। इनमें वे बच्चे शामिल हैं जो किसी आनुवंशिक स्थिति के साथ पैदा हुए थे जो उनके शारीरिक, मानसिक या सामाजिक विकास को प्रभावित करती है; वे बच्चे जिन्हें कोई गंभीर चोट, पोषण संबंधी कमी या संक्रमण हुआ जिसके परिणामस्वरूप दीर्घकालिक कार्यात्मक परिणाम हुए; या वे जो पर्यावरणीय विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आए जिसके परिणामस्वरूप विकास में देरी हुई या सीखने की अक्षमता हुई। विकलांग बच्चों में वे बच्चे भी शामिल हैं जिन्होंने तनावपूर्ण जीवन की घटनाओं के परिणामस्वरूप चिंता या अवसाद विकसित किया।

मनोविज्ञान की APA डिक्शनरी के अनुसार विकलांग बच्चे , जिन्हें विशेष शिक्षा, विशेष स्वास्थ्य सेवा या अन्य कार्यात्मक आवश्यकताओं या सेवाओं की आवश्यकता होती है। ऐसे बच्चों में विकासात्मक, सीखने, बौद्धिक, शारीरिक, संवेदी, भावनात्मक और/या व्यवहार संबंधी विकलांगताएँ हो सकती हैं। विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 की धारा 2 के खंड (S) में परिभाषित विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का अर्थ है 'दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी विकलांगता वाला व्यक्ति, जो बाधाओं के साथ बातचीत में, दूसरों के साथ समान रूप से समाज में उसकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डालता है।'

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) वे हैं जिन्हें विशेष सहायता और देखभाल की आवश्यकता है। इन बच्चों की विकलांगता का प्रकार उनकी विशेष आवश्यकताओं को निर्धारित करता है। बार-बार चिकित्सा परीक्षण, अस्पताल में रहना, उपकरण और विकलांगता के लिए आवास सभी CWSN की विशेष आवश्यकताओं का हिस्सा हो सकते हैं।विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने अनुमान लगाया है कि दुनिया की लगभग 15% आबादी किसी न किसी प्रकार की विकलांगता से ग्रस्त है, और उनमें से 2-4% को काम करने में काफी संघर्ष करना पड़ता है। हमारे देश में इस मुद्दे के दायरे से पूरे देश में सभी समाजों को चुनौती मिलती है। कुछ विकलांगताएँ लाइलाज हैं। हालाँकि, प्रारंभिक पहचान, विशेष शिक्षा और प्रशिक्षण विकलांग बच्चों को स्वतंत्र जीवन जीने में बहुत मदद कर सकते हैं|

1.4 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रकार

CWSN की विभिन्न स्थितियों और अक्षमताओं को चार प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

संवेदी अक्षमताएं/ Sensory Disabilities	**गामक और बहु अक्षमताएं / Locomotors and MultipleDisabilities**
तंत्रिका विकासात्मक अक्षमताएं / NeurodevelopmentalDisabilities	**व्यवहारिक या भावनात्मक अक्षमताएं / Behavioural or Emotional Disabilities**

1.4.1 संवेदी अक्षमताएं/Sensory Disability

संवेदी अक्षमताएं (संवेदी क्षति) इंद्रियों की अक्षमता है (जैसे दृष्टि, श्रवण, गंध, स्पर्श, स्वाद)। चूंकि हमारे आस-पास की दुनिया के बारे में 95% जानकारी हमारी दृष्टि और श्रवण से आती है, इसलिए संवेदी विकलांगता इस बात को प्रभावित कर सकती है कि कोई व्यक्ति अपने आस-पास की दुनिया से जानकारी कैसे इकट्ठा करता है।

संवेदी अक्षमता" में पाँचों इंद्रियों में से कोई भी शामिल हो सकती है, लेकिन शैक्षिक उद्देश्यों के लिए, यह आम तौर पर सुनने, देखने या सुनने और देखने दोनों से संबंधित अक्षमता को संदर्भित करता है।संवेदी अक्षमता पहुँच को प्रभावित करती है - दृश्य और/या श्रवण जानकारी तक पहुँच। अधिकांश सामग्री जानकारी कक्षा में दृश्य और/या श्रवण रूप से प्रस्तुत की जाती है। यह महत्वपूर्ण है कि दृष्टि और/या श्रवण हानि का अनुभव करने वाले बच्चों की शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए उचित रूप से पहचान की जाए।

1.4.1 संवेदी अक्षमता के प्रकार

संवेदी हानि या संवेदी क्षति तब होती है जब किसी व्यक्ति को देखने, सुनने या यहां तक कि दोनों में कठिनाई होती है। संवेदी हानि का प्रभाव हर व्यक्ति पर अलग-अलग होता है। संवेदी क्षति मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

- दृष्टिबाधिता (Visual impairment)
- श्रवणबाधिता (Hearing impairment)
- श्रवण-दृष्टिबाधिता (Deaf-blindness)

1.4.1.2 दृष्टि बाधिता

दृष्टि बाधिता (Visual impairment) व्यक्ति अर्थात ऐसे व्यक्ति जिन्हें देखने से सम्बंधित समस्या है। परिणामस्वरूप इनको दैनिक कार्यों से लेकर शिक्षा संबंधी आदि सभी कार्यों में अनेकों कठिनाई उठानी पड़ती है।कोई भी व्यक्ति संपूर्ण या आंशिक रूप से दृष्टिबाधित हो सकता है।आंशिक रूप से दृष्टि बाधित व्यक्ति प्रायः सामान्य विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।ऐसे बालक उपचार एवं संबंधी यंत्र की सहायता से शिक्षा ग्रहण करने में समर्थ होते हैं । तथा अपने प्रतिदिन के कार्य भी कर सकते हैं।परन्तु गंभीर रूप से दृष्टिहीन बालकों की शिक्षा संबंधी सहायता विशिष्ट शिक्षा (Special Education) एवं आवश्यक सहायक सामग्रियों द्वारा प्रदान की जाती हैं।

RPWD ACT 2016 के अनुसार

दृश्य हानि - (क) "अंधापन" से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है, जिसमें किसी व्यक्ति में सर्वोत्तम सुधार के पश्चात निम्नलिखित में से कोई भी स्थिति हो - (i) दृष्टि की पूर्ण अनुपस्थिति; या (ii) सर्वोत्तम संभव सुधार के साथ बेहतर आँख में दृश्य तीक्ष्णता 3/60 से कम या 10/200 (स्नेलन) से कम हो; या (iii) दृष्टि क्षेत्र की सीमा 10 डिग्री से कम का कोण बनाती हो। (ख) "कम दृष्टि" से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है, जिसमें किसी व्यक्ति में निम्नलिखित में से कोई भी स्थिति हो, अर्थात्: (i) सर्वोत्तम संभव सुधार के साथ बेहतर आँख में दृश्य तीक्ष्णता 6/18 से अधिक न हो या 20/60 से कम 3/60 या 10/200 (स्नेलन) तक हो; अथवा (ii) दृष्टि क्षेत्र की सीमा 40 डिग्री से कम से लेकर 10 डिग्री तक का कोण।

दृष्टि बाधिता के प्रकार

आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम 2016 में निर्दिष्ट जो यूएनसीआरपीडी अधिनियम के अनुरूप है, "दृश्य हानि" को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

1 "अंधापन" का अर्थ है एक ऐसी स्थिति जिसमें किसी व्यक्ति में सर्वोत्तम सुधार के बाद निम्नलिखित में से कोई भी स्थिति हो: i) दृष्टि की पूर्ण अनुपस्थिति; या ii) बेहतर आँख में दृश्य तीक्ष्णता 3/60 से कम या 10/200 (स्नेलन) से कम हो, सर्वोत्तम संभव सुधार के साथ; या iii) दृष्टि के क्षेत्र की सीमा 10 डिग्री से कम के कोण को कम करती है।

2 "कम दृष्टि" का अर्थ है एक ऐसी स्थिति जिसमें किसी व्यक्ति में निम्नलिखित में से कोई भी स्थिति हो। (i) दृश्य तीक्ष्णता 6/18 से अधिक नहीं या सर्वोत्तम संभव सुधार के साथ बेहतर आँख में 3/60 से कम; या दृष्टि क्षेत्र की सीमा 40 डिग्री से कम कोण तक 10 डिग्री तक। यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये दो मानदंड क्या हैं और हम उनके आधार पर दृश्य हानि की डिग्री को कैसे वर्गीकृत करते हैं।

कम दृष्टि विश्व स्वास्थ्य संगठन "कम दृष्टि" को 20/70 और 20/400 के बीच की दृश्य तीक्ष्णता के रूप में परिभाषित करता है, जिसमें सबसे अच्छा संभव सुधार हो, या 20 डिग्री या उससे कम का दृश्य क्षेत्र हो। "अंधापन" को 20/400 से भी खराब दृश्य तीक्ष्णता के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें सबसे अच्छा संभव सुधार हो, या 10 डिग्री या उससे कम का दृश्य क्षेत्र हो।

श्रवण बाधिता का अर्थ एवं परिभाषाएं

श्रवण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें ध्वनि की जागरूकता,भिन्नता, पहचान तथा समझने का बोध होता है। श्रवणबाधिता का सरल एवं सामान्य शब्दों मे अर्थ है कि सुनने की क्षमता में कमी। यह क्षति व्यक्ति को दूसरों की बात और वातावरण की अन्य ध्वनियों को सुनने में समस्या उत्पन्न करती है। अतः हम कह सकते हैं की किसी व्यक्ति द्वारा पूरी तरह से आवाज सुनने में अक्षम होना श्रवण बधिरता कहलाता है। भाषा के विकास के लिए 'सुनना' एक जरूरी प्रक्रिया है। एक छोटा बच्चा आस पास के लोगों के संवाद को सुनकर ही अपनी भाषा का विकास करता है।श्रवण विकलॉगता एक छिपी हुई विकलाँगता है। क्योकिं कोई भी व्यक्ति जो श्रवण विकलाँगता से ग्रसित है वह किसी भी प्रकार के शारीरिक लक्षण प्रकट नहीं करता है जिससे यह प्रतीत हो कि वह इस विकलाँगता से ग्रसित है। इस विकलाँगता को पहचानने के लिए सूक्ष्म निरीक्षण की आवश्यकता होती है। श्रवण विकलाँगता व्यक्ति के स्वतंत्र रूप से सोचने तथा सीखने पर गहरा प्रभाव डालती है। श्रवण हमें खतरों से भी सावधान करता है। जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त श्रवण प्रक्रिया हमें वातावरण पर नियंत्रण करने में सहायता करती है। ध्वनि तथा कान सुनने की प्रक्रिया के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। ध्वनि की सूक्ष्मता को मापने की इकाई को डेसिबल (डी0बी0) (db) कहते हैं।

श्रवण बाधिता की कुछ परिभाषाएं निम्नवत हैं –

निःशक्त जन (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण तथा पूर्ण भागीदारी) अधिनियम 1995 के अनुसार:-"अगर किसी व्यक्ति को सामान्य वार्तालाप के दौरान व्यवहार की गयी आवृत्तियों में अपने बेहतर कान से 60 डी0बी0 या उससे तेज आवाज को सुनने में कठिनाई होना श्रवणबाधिता कहलाता है"

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन 1991 के अनुसारः-"श्रवणबाधित उसे कहा जाता है जो सामान्य रूप से सामान्य ध्वनि को सुनने में अक्षम है"

IDEA ने "श्रवणबाधिता के अंतर्गत बहरापन तथा ऊँचा सुनना दो संप्रत्यय को परिभाषित किया है। इसके अनुसार ऊँचा सुनना का अर्थ है सुनने की क्षमता में कमी चाहे स्थायी हो या अस्थिर एक बच्चे के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रतिकूलता से प्रभावित करती है बहरेपन से तात्पर्य है की बच्चे में श्रवण क्षति इतनी गंभीर है कि वह भाषाई सूचनाओं की प्रक्रिया श्रवण के माध्यम से, प्रवर्धन के बिना या उसके साथ भी करने में सक्षम नहीं हैं"।

श्रवण बाधिता के प्रकार -

RPWD act 2016 के अनुसार- श्रवण दोष सुनने में आंशिक या पूर्ण अक्षमता है। यह एक विकलांगता है जिसे बहरे और कम सुनने वाले दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

- "बधिर" का अर्थ है ऐसे व्यक्ति जिनके दोनों कानों में वाणी आवृत्तियों में 70 डीबी श्रवण हानि है।
- "कम सुनने वाले" का अर्थ है ऐसे व्यक्ति जिनके दोनों कानों में वाणी आवृत्तियों में 60 डीबी से 70 डीबी श्रवण हानि है।

श्रवण दृष्टि बाधिता (Deaf-blindness)

जो व्यक्ति देख एवं सुन सकता है उसे दुनिया का अनोखा अनुभव होता है। जो लोग देख और सुन सकते हैं, उनके लिए दुनिया बाहर तक फैली हुई है जहाँ तक उसकी आँखें और कान पहुँच सकते हैं। देख और सुन नहीं सकने वाले छोटे बच्चे के लिए दुनिया शुरू में बहुत संकीर्ण होती है। यदि बच्चा अत्यधिक बहरा और पूरी तरह से अंधा है, तो दुनिया का उसका अनुभव केवल वहीं तक फैलता है जहां तक उसकी उंगलियां पहुंच सकती हैं। यदि कोई उन्हें छू नहीं रहा है तो ऐसे बच्चे प्रभावी रूप से अकेले होते हैं। दुनिया के बारे में उनकी अवधारणाएँ इस बात पर निर्भर करती हैं कि उन्हें किससे शारीरिक रूप से संपर्क करने का अवसर मिला है।

यदि कोई व्यक्ति देखने एवं सुनने दोनों में अक्षम है, तो कहा जाता है कि व्यक्ति श्रवण दृष्टि बाधित है।श्रवण दृष्टि बाधिता, दृष्टि और श्रवण हानि का एक संयोजन है जो किसी व्यक्ति की संचार करने, जानकारी तक पहुंचने और घूमने-फिरने की क्षमता को प्रभावित करता है। इसे कभी-कभी "दोहरी संवेदी हानि" या "बहु-संवेदी हानि" भी कहा जाता है। दोहरी संवेदी हानि के कई कारण हैं जिनमें बीमारी, दुर्घटना, आनुवांशिक सिंड्रोम या उम्र बढ़ने की प्रक्रिया शामिल है। हेलेन केलर इतिहास में सबसे प्रसिद्ध श्रवण दृष्टि बाधित लोगों में से एक हैं, जो अपनी राजनीतिक सक्रियता, व्याख्यान, लेखन और कला स्नातक की डिग्री हासिल करने वाले पहले श्रवण दृष्टि बाधित व्यक्ति होने के लिए प्रसिद्ध हैं।

1.4.2 गामक अक्षमताएं/Locomotors Disabilities- शारीरिक अक्षमताओं में मस्कुलर डिस्ट्रॉफी, मिर्गी, सेरेब्रल पाल्सी,जैसी स्थितियाँ शामिल हैं। इन स्थितियों में, CWSN को मुख्य रूप से गति और संतुलन की समस्या होती है। सेरेब्रल पाल्सी में, मस्तिष्क को नुकसान होने के कारण मांसपेशियों का समन्वय बिगड़ जाता है। यह बच्चे के जन्म के समय या उससे पहले होता है। सेरेब्रल पाल्सी एक

प्रगतिशील स्थिति नहीं है; जिसका अर्थ है कि यह समय के साथ खराब नहीं होती है। हालाँकि, मांसपेशियों का उपयोग न होने से समय के साथ विकलांगता की सीमा बढ़ सकती है। मस्कुलर डिस्ट्रॉफी (एमडी) न्यूरोमस्कुलर आनुवंशिक विकारों का एक समूह है जो मांसपेशियों की कमजोरी और मांसपेशियों के द्रव्यमान के समग्र नुकसान का कारण बनता है। एमडी एक प्रगतिशील स्थिति है; जिसका अर्थ है कि यह समय बीतने के साथ खराब हो जाती है।

RPWD act 2016 के अनुसार-

गामक अक्षमता/ Locomotors disability - किसी व्यक्ति की मस्कुलोस्केलेटल या तंत्रिका तंत्र या दोनों की बीमारी के कारण स्वयं और वस्तुओं की गति से जुड़ी विशिष्ट गतिविधियों को निष्पादित करने में असमर्थता, जिसमें शामिल हैं-

(ए) "कुष्ठ रोग से ठीक हुआ व्यक्ति" का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जो कुष्ठ रोग से ठीक हो गया है, लेकिन निम्न से पीड़ित है-

(i) हाथों या पैरों में संवेदना की हानि के साथ-साथ आंख और पलक में संवेदना की हानि और पक्षाघात, लेकिन कोई स्पष्ट विकृति नहीं है;

(ii) स्पष्ट विकृति और पक्षाघात, लेकिन उनके हाथों और पैरों में पर्याप्त गतिशीलता है, जिससे वे सामान्य आर्थिक गतिविधि में संलग्न हो सकें;

(iii) अत्यधिक शारीरिक विकृति और साथ ही वृद्धावस्था, जो उसे कोई लाभकारी व्यवसाय करने से रोकती है, और अभिव्यक्ति "कुष्ठ रोग से ठीक हुआ" तदनुसार व्याख्या की जाएगी;

(बी) "सेरेब्रल पाल्सी" का अर्थ है शरीर की गतिविधियों और मांसपेशियों के समन्वय को प्रभावित करने वाली गैर-प्रगतिशील तंत्रिका संबंधी स्थिति का समूह, जो मस्तिष्क के एक या अधिक विशिष्ट क्षेत्रों को नुकसान के कारण होता है, जो आमतौर पर जन्म से पहले, जन्म के दौरान या जन्म के तुरंत बाद होता है;

(सी) "बौनापन" का अर्थ है एक चिकित्सा या आनुवंशिक स्थिति जिसके परिणामस्वरूप वयस्क की ऊंचाई 4 फीट 10 इंच (147 सेंटीमीटर) या उससे कम होती है;

(डी) "मांसपेशी डिस्ट्रोफी" का अर्थ है वंशानुगत आनुवंशिक मांसपेशी रोग का एक समूह जो मानव शरीर को हिलाने वाली मांसपेशियों को कमजोर करता है और मल्टीपल डिस्ट्रोफी वाले व्यक्तियों के जीन में गलत और गायब जानकारी होती है, जो उन्हें स्वस्थ मांसपेशियों के लिए आवश्यक प्रोटीन बनाने से रोकती है। यह प्रगतिशील कंकाल की मांसपेशियों की कमजोरी, मांसपेशी प्रोटीन में दोष और मांसपेशी कोशिकाओं और ऊतकों की मृत्यु की विशेषता है;

(ई) "एसिड अटैक पीड़ित" का अर्थ है एसिड या इसी तरह के संक्षारक पदार्थ फेंकने से हिंसक हमलों के कारण विकृत व्यक्ति।

1.4.2.1 बहु अक्षमताएं/Multiple Disabilities - जब कोई बच्चा एक से अधिक अक्षमताओं से प्रभावित होता हैं, तो हम कहते हैं कि उसमें कई अक्षमताएं हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे को सीखने में कठिनाई हो सकती है, साथ ही अपनी हरकतों को नियंत्रित करने और/या सुनने और देखने में भी कठिनाई हो सकती है। कई अक्षमताओं का प्रभाव दो अलग-अलग अक्षमताओं के संयोजन से कहीं ज़्यादा हो सकता है।

बहु अक्षमता के कुछ उदाहरण हैं:

- बधिर-अंधा (दृश्य हानि + श्रवण हानि)
- दृश्य हानि + श्रवण हानि + मानसिक मंदता
- दृश्य हानि + मानसिक मंदता
- सेरेब्रल पाल्सी + मानसिक मंदता/श्रवण/भाषण/दृश्य समस्याएं

1.4.3 तंत्रिका विकासात्मक अक्षमताएं/Neuro developmental disabilities- न्यूरोडेवलपमेंटल डिसऑर्डर मुख्य रूप से न्यूरोलॉजिकल सिस्टम और मस्तिष्क के कामकाज से जुड़ी अक्षमताएं हैं। बच्चों में न्यूरोडेवलपमेंटल डिसऑर्डर के उदाहरणों में ध्यान-घाटे/अति सक्रियता विकार (ADHD), ऑटिज्म, सीखने की अक्षमता, बौद्धिक अक्षमता (जिसे मानसिक मंदता भी कहा जाता है न्यूरोडेवलपमेंटल डिसऑर्डर वाले बच्चों को भाषा और भाषण, मोटर कौशल, व्यवहार, स्मृति, सीखने या अन्य न्यूरोलॉजिकल कार्यों में कठिनाई का अनुभव हो सकता है। जबकि न्यूरोडेवलपमेंटल डिसऑर्डर के लक्षण और व्यवहार अक्सर बच्चे के बड़े होने के साथ बदलते या विकसित होते हैं, कुछ विकलांगताएं स्थायी होती हैं। इन विकारों का निदान और उपचार मुश्किल हो सकता है; उपचार में अक्सर पेशेवर चिकित्सा, फार्मास्यूटिकल्स और घर और स्कूल-आधारित कार्यक्रमों का संयोजन शामिल होता है।

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत तीन प्रमुख न्यूरो विकासात्मक अक्षमताओं- सीखने की अक्षमता, बौद्धिक अक्षमता और ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार को सम्मिलित किया है।

विशिष्टअधिगमअक्षमता / Specific Learning	बौद्धिकअक्षमता/ Intillactual Disability	ऑटिज्मस्पेक्ट्रमविकार)ASD)

1.4.3 विशिष्ट अधिगम अक्षमता/Specific Learning Disability- सीखने की अक्षमताएं तंत्रिका तन्त्र आधारित प्रसंस्करण समस्याएं (neurologically-based processing problems) हैं। ये प्रसंस्करण समस्याएं बुनियादी कौशल जैसे पढ़ना, लिखना और गणित सीखने में बाधा डाल सकती हैं। वे संगठन, समय नियोजन, अमूर्त तर्क, दीर्घकालिक या अल्पकालिक स्मृति और ध्यान जैसे उच्च स्तरीय कौशल में भी बाधा डाल सकती हैं।

विकलांग व्यक्तियों के अधिकार (आरपीडब्ल्यूडी) अधिनियम, 2016 के अनुसार "विशिष्ट अधिगम अक्षमता" का अर्थ है ऐसी स्थितियों का विषम समूह जिसमें बोली जाने वाली या लिखित भाषा को संसाधित करने में कमी होती है, जो समझने, बोलने, पढ़ने, लिखने, वर्तनी या गणितीय गणना करने में कठिनाई के रूप में प्रकट हो सकती है और इसमें अवधारणात्मक अक्षमता, डिस्लेक्सिया, डिस्ग्राफिया, डिस्कैलकुलिया, डिस्प्रैक्सिया और विकासात्मक वाचाघात जैसी स्थितियाँ शामिल हैं।
आईडिया (IDEA)- 2004: फेडरल कानून में अधिगम अक्षमता की परिभाषा में, विशिष्ट अधिगम अक्षमता शब्द का अर्थ है, बोली या लिखी गई भाषा को समझने या उसका उपयोग करने में शामिल एक या अधिक बुनियादी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में विकार, जो विकार सुनने, सोचने, बोलने, पढ़ने, लिखने, वर्तनी या गणितीय गणना करने की अपूर्ण क्षमता में प्रकट हो सकता है।

1.4.3.1 अधिगम अक्षमता के प्रकार –

डिस्लेक्सिया/Dyslexia

यह सीखने की अक्षमता व्यक्ति के पढ़ने और लिखने के कौशल को प्रभावित करती है। कुछ गंभीर मामलों में, व्यक्ति की वाणी भी प्रभावित हो सकती है। इसे भाषा-आधारित सीखने की अक्षमता भी कहा जाता है।

डिस्लेक्सिया के लक्षण

56 के बजाय 65 लिखने जैसे अंकों को मिलाना

- एक ही शब्द की बार-बार अलग-अलग स्पेलिंग लिखना। उदाहरण के लिए writing Maria, Maaria, Mariaa (their different spellings)
- बहुत धीरे-धीरे पढ़ता है जो सुनता है और जो लिखता है, उसमें बहुत अंतर दिखाता है
- लिखावट खराब है

- जो शब्द उसे पहले से याद हैं उन्हें याद रखने में कठिनाई होती है
- शब्दों की स्पेलिंग में परेशानी
- कई निर्देशों का पालन करने में कठिनाई उदाहरण- लाइट जलाओ और मेरे लिए एक गिलास पानी लाओ।

Dyscalculia/डिस्कैलकुलिया

इस प्रकार की सीखने की अक्षमता में, व्यक्ति गणित से जूझता है। उसे संख्याओं, गणनाओं, आंकड़ों, याद करने, गिनती करने आदि में परेशानी होती है।

डिस्कैलकुलिया के लक्षण

- शब्द समस्याओं को हल करने में कठिनाई होती है
- समय, मात्रा, ले जाने और उधार लेने, सकारात्मक और नकारात्मक मूल्य आदि की अवधारणाओं का पालन करने में कठिनाई प्रदर्शित करता है।
- भिन्नों से परेशानी
- पैसे संभालने में कठिनाई
- जोड़, घटाव, गुणा और भाग करने में उलझन
- दिन, सप्ताह, महीने आदि जैसी अवधारणाओं से जूझना।

डिसग्राफिया/ Dysgraphia

डिस्ग्राफिया से पीड़ित व्यक्ति को लिखावट में परेशानी होती है। उसे शब्दों के बीच अंतर, खराब वर्तनी, एक ही समय में सोचने और लिखने में भी परेशानी होती है।

- डिस्ग्राफिया के लक्षण: लिखावट में असंगति जैसे अपर और लोअर केस का मिश्रण,
- अक्षरों का आकार, अक्षरों का अनियमित आकार आदि।
- अधूरे शब्द लिखता है
- हाथ की अजीब स्थिति से लिखता है
- लिखने में धीमा है पेन/पेंसिल पर असामान्य पकड़
- एक ही समय में सोचने और लिखने में कठिनाई

Dyspraxia/डिस्प्रेक्सिया

गामक कौशल में सीखने की अक्षमता (डिस्प्रेक्सिया)

गामक कठिनाई से तात्पर्य परिचालन और समन्वय से जुड़ी समस्याओं से है, चाहे वह सूक्ष्म गामक कौशल/fine motor skills (काटना, लिखना) या सकल गामक कौशल/gross motor skills (दौड़ना, कूदना) के साथ हो।

गामक विकलांगता को कभी-कभी "आउटपुट" गतिविधि के रूप में संदर्भित किया जाता है, जिसका अर्थ है कि यह मस्तिष्क से सूचना के आउटपुट से संबंधित है। दौड़ने, कूदने, लिखने या कुछ काटने के लिए, मस्तिष्क को क्रिया को पूरा करने के लिए आवश्यक अंगों के साथ संवाद करने में सक्षम होना चाहिए।बच्चे में गामक समन्वय अक्षमता के संकेत में शारीरिक क्षमताओं की समस्याएं शामिल हैं, जिनके लिए हाथ-आंख समन्वय की आवश्यकता होती है, जैसे कि पेंसिल पकड़ना या शर्ट का बटन लगाना।

1.4.3.2 बौद्धिक अक्षमता/Intillactual Disability- बौद्धिक अक्षमता में सामान्य मानसिक क्षमताओं की दुर्बलता शामिल होती है जो तीन क्षेत्रों में अनुकूलीत कार्यप्रणाली को प्रभावित करती है। ये क्षेत्र निर्धारित करते हैं कि कोई व्यक्ति रोज़मर्रा के कार्यों को कितनी अच्छी तरह से पूरा करता है:

• वैचारिक क्षेत्र- में भाषा, पढ़ना, लिखना, गणित, तर्क, ज्ञान और स्मृति के कौशल शामिल हैं।

• सामाजिक क्षेत्र- सहानुभूति, सामाजिक निर्णय, पारस्परिक संचार कौशल, दोस्ती बनाने और बनाए रखने की क्षमता और इसी तरह की क्षमताओं को संदर्भित करता है।

• व्यावहारिक क्षेत्र- व्यक्तिगत देखभाल, नौकरी की ज़िम्मेदारियों, धन प्रबंधन, मनोरंजन और स्कूल और कार्य कार्यों को व्यवस्थित करने जैसे क्षेत्रों में आत्म-प्रबंधन पर केंद्रित है।

विकलांग व्यक्ति के अधिकार अधिनियम 2016 के अनुसार "बौद्धिक विकलांगता, एक ऐसी स्थिति है जो बौद्धिक कार्यप्रणाली (तर्क, सीखना, समस्या समाधान) और अनुकूली व्यवहार दोनों में महत्वपूर्ण सीमाओं द्वारा चिह्नित होती है, जो एसएलडी (विशिष्ट सीखने की अक्षमता) एएसडी (ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार) सहित दैनिक, सामाजिक और व्यावहारिक कौशल की एक श्रृंखला को कवर करती है।"

2010 में अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज (AAIDD) के अनुसार "बौद्धिक विकलांगता बौद्धिक कामकाज और अनुकूली व्यवहार में महत्वपूर्ण सीमाओं की विशेषता है, जिसमें कई रोज़मर्रा के सामाजिक और व्यावहारिक कौशल शामिल हैं। यह विकलांगता 18 वर्ष की आयु से पहले उत्पन्न होती है।"

बौद्धिक क्रियाकलाप - जिसे बुद्धिमत्ता भी कहा जाता है, सामान्य मानसिक क्षमता को संदर्भित करता है, जैसे सीखना, तर्क करना, समस्या हल करना इत्यादि।

अनुकूली व्यवहार- यह वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक कौशल का संग्रह है, जिसे लोग रोज़मर्रा की ज़िंदगी में सीखते और निभाते हैं।

वैचारिक कौशल- भाषा और साक्षरता, धन, समय और संख्या की अवधारणा और आत्म-निर्देशन।

सामाजिक कौशल- पारस्परिक कौशल सामाजिक जिम्मेदारी, आत्म-संदेह, भोलापन, सामाजिक समस्या समाधान और नियमों का पालन करने, कानून का पालन करने और उत्पीड़न से बचने की क्षमता।

व्यावहारिक कौशल- दैनिक जीवन की गतिविधियाँ जैसे व्यक्तिगत देखभाल, व्यावसायिक कौशल, स्वास्थ्य देखभाल, यात्रा, कार्यक्रम, सुरक्षा, धन का उपयोग, टेलीफोन का उपयोग।

विशेषज्ञ संज्ञानात्मक क्षीणता के प्रकारों को चार श्रेणियों में विभाजित करते हैं: हल्की बौद्धिक अक्षमता, मध्यम बौद्धिक अक्षमता, गंभीर बौद्धिक अक्षमता और गहन बौद्धिक अक्षमता। बौद्धिक अक्षमता से होने वाली क्षीणता की डिग्री व्यापक रूप से भिन्न होती है। DSM-V क्षीणता की डिग्री (यानी IQ स्कोर) पर कम जोर देता है और हस्तक्षेप की मात्रा और प्रकार पर अधिक जोर देता है। जबकि बौद्धिक अक्षमता के स्तर का आकलन करने में IQ स्कोर अभी भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हैं, नया DSM-V नैदानिक मानदंड की एक और परत जोड़ता है।

1-हल्की बौद्धिक अक्षमता/ Mild intellectual disability

IQ 50 से 70 के मध्य

- सभी विकासात्मक क्षेत्रों में सामान्य से धीमा
- कोई असामान्य शारीरिक विशेषता नहीं
- व्यावहारिक जीवन कौशल सीखने में सक्षम
- ग्रेड स्तर 3 से 6 तक पढ़ने और गणित कौशल प्राप्त करता है
- सामाजिक रूप से घुलने-मिलने में सक्षम
- दैनिक जीवन में कार्य करता है

बौद्धिक अक्षमता वाले लगभग 85 प्रतिशत लोग हल्की श्रेणी में आते हैं और कई लोग अकादमिक सफलता भी प्राप्त करते हैं। एक व्यक्ति जो पढ़ सकता है, लेकिन उसे जो पढ़ता है उसे समझने में कठिनाई होती है, वह हल्की बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति का एक उदाहरण है।

2-मध्यम बौद्धिकअक्षमता / Moderate intellectual disability

- IQ 35 से 49
- ध्यान देने योग्य विकासात्मक देरी (यानी भाषण, गामक कौशल)
- शारीरिक रूप से कमज़ोर होने के लक्षण हो सकते हैं (यानी मोटी जीभ)
- बुनियादी, सरल तरीकों से संवाद कर सकते हैं
- बुनियादी स्वास्थ्य और सुरक्षा कौशल सीखने में सक्षम

• स्व-देखभाल गतिविधियों को पूरा कर सकते हैं

• अकेले आस-पास, परिचित स्थानों की यात्रा कर सकते हैं

मध्यम बौद्धिक विकलांगता वाले लोगों में उचित संचार कौशल होता है, लेकिन वे आम तौर पर जटिल स्तरों पर संवाद नहीं कर सकते हैं। उन्हें सामाजिक स्थितियों में कठिनाई हो सकती है और सामाजिक संकेतों और निर्णय के साथ समस्याएँ हो सकती हैं। ये लोग खुद की देखभाल कर सकते हैं, लेकिन उन्हें सामान्य व्यक्ति की तुलना में अधिक निर्देश और सहायता की आवश्यकता हो सकती है। कई लोग स्वतंत्र स्थितियों में रह सकते हैं, लेकिन कुछ को अभी भी समूह घर के समर्थन की आवश्यकता होती है।बौद्धिक विकलांगता वाले लगभग 10 प्रतिशत लोग मध्यम श्रेणी में आते हैं।

3-गंभीरबौद्धिक अक्षमता/ Severe intellectual disability

• IQ 20 से 34

• विकास में काफी देरी

• भाषण समझ में आता है, लेकिन संवाद करने की क्षमता कम होती है

• दैनिक दिनचर्या सीखने में सक्षम

• बहुत सरल स्व-देखभाल सीख सकते हैं

• सामाजिक परिस्थितियों में प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण की आवश्यकता होती है

बौद्धिक विकलांगता से पीड़ित केवल 3 या 4 प्रतिशत लोग ही गंभीर श्रेणी में आते हैं। ये लोग केवल सबसे बुनियादी स्तरों पर ही संवाद कर सकते हैं। वे सभी स्व-देखभाल गतिविधियाँ स्वतंत्र रूप से नहीं कर सकते हैं और उन्हें दैनिक पर्यवेक्षण और सहायता की आवश्यकता होती है। इस श्रेणी के अधिकांश लोग सफलतापूर्वक स्वतंत्र जीवन नहीं जी सकते हैं और उन्हें समूह गृह सेटिंग में रहने की आवश्यकता होगी।

4-गहन बौद्धिक अक्षमता/ Profound intellectual disability

• IQ 20 से कम

• सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकासात्मक देरी

• स्पष्ट शारीरिक और जन्मजात असामान्यताएं

• नज़दीकी निगरानी की आवश्यकता होती है

• स्व-देखभाल गतिविधियों में मदद के लिए परिचर की आवश्यकता होती है

• शारीरिक और सामाजिक गतिविधियों पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं

• स्वतंत्र रूप से रहने में सक्षम नहीं

गहन बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों को चौबीसों घंटे सहायता और देखभाल की आवश्यकता होती है। वे दिन-प्रतिदिन के जीवन के सभी पहलुओं के लिए दूसरों पर निर्भर होते हैं और उनकी संचार क्षमता

बेहद सीमित होती है। अक्सर, इस श्रेणी के लोगों में अन्य शारीरिक सीमाएँ भी होती हैं। बौद्धिक विकलांगता वाले लगभग 1 से 2 प्रतिशत लोग इस श्रेणी में आते हैं।

1.4.3.2 ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) एक जटिल विकासात्मक स्थिति है जिसमें सामाजिक संचार, प्रतिबंधित रुचियों और दोहराए जाने वाले व्यवहार के साथ लगातार चुनौतियां शामिल हैं। ऑटिज्म को आजीवन विकार माना जाता है

विकलांग व्यक्ति शिक्षा अधिनियम (IDEA) के अनुसार "एक विकासात्मक विकलांगता जो मौखिक और गैर-मौखिक संचार और सामाजिक संपर्क को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, आमतौर पर 3 साल की उम्र से पहले स्पष्ट होती है जो बच्चे के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

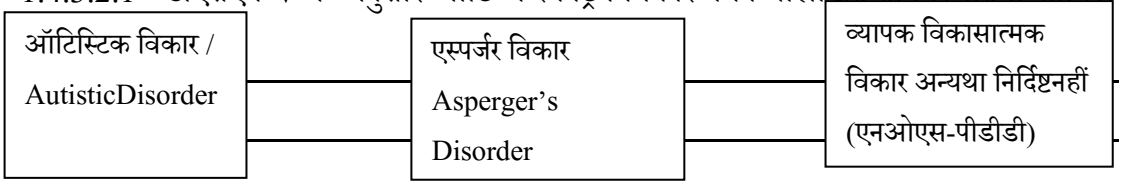
दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016(RPWD ACT 2016) के अनुसार "ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर" का अर्थ है एक न्यूरो-विकासात्मक स्थिति जो आमतौर पर जीवन के पहले तीन वर्षों में दिखाई देती है जो किसी व्यक्ति की संवाद करने, रिश्तों को समझने और दूसरों से संबंधित होने की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, और अक्सर असामान्य या रूढ़िवादी अनुष्ठानों या व्यवहारों से जुड़ी होती है।

मानसिक विकारों के निदान और सांख्यिकीय मैनुअल (DSM-V) के पांचवें संस्करण के अनुसार,

1-सामाजिक संप्रेषण और संपर्क की निरंतर कमी;

2-प्रतिबंधित और दोहराव वाले व्यवहार, रुचियाँ, गतिविधियाँ।

1.4.3.2.1 डीएसएम-V के अनुसार ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार में निम्नलिखित तीन स्थितियाँ शामिल



ऑटिस्टिक विकार/ Autistic Disorder

इसे "क्लासिक" ऑटिज़्म भी कहा जाता है ऑटिज्म शब्द सुनते ही ज्यादातर लोग यही सोचते हैं ऑटिस्टिक विकार से प्रभावित लोगों में आमतौर पर निम्न लक्षण दिखाई देते हैं भाषा में देरी, सामाजिक और सम्प्रेषण चुनौतियाँ, और असामान्य व्यवहार और रुचियाँ। इस विकार में व्यक्ति बौद्धिक विकलांगता से भी प्रभावित होता है।

- एस्पर्जर विकार /Asperger's Disorder

एस्पर्जर सिंड्रोम वाले लोगों में आमतौर पर ऑटिस्टिक विकार के कुछ हल्के लक्षण होते हैं। इसमें मुख्य रूप से उनके सामने सामाजिक चुनौतियाँ और असामान्य व्यवहार और रुचियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। हालाँकि, उन्हें आमतौर पर भाषा या बौद्धिक विकलांगता की समस्या नहीं होती है।

- व्यापक विकासात्मक विकार अन्यथा निर्दिष्ट नहीं (पीडीडी-एनओएस) शामिल हैं। Pervasive Developmental Disorder – not otherwise specified (PDD-NOS)

यदि व्यक्ति ऑटिस्टिक विकार या एस्पर्जर सिंड्रोम के कुछ मानदंडों को पूरा करते हैं, तो उनका निदान पीडीडी-एनओएस के अन्तर्गत किया जा सकता हैं पीडीडी-एनओएस से प्रभावित व्यक्तियों में आमतौर पर ऑटिस्टिक विकार वाले लक्षणों की तुलना में कम और हल्के लक्षण दिखाई देते हैं ये लक्षण केवल सामाजिक और संप्रेषण कौशल को प्रभावित करते हैं

1.4.4 व्यवहारिक या भावनात्मक अक्षमता/ Behavioural or Emotional Disability

भावनात्मक या व्यवहारिक विकलांगता एक ऐसी विकलांगता है जो किसी व्यक्ति की मौलिक भावनाओं को प्रभावी ढंग से पहचानने, व्याख्या करने, नियंत्रित करने और व्यक्त करने की क्षमता को प्रभावित करती है। विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा अधिनियम 2004 विकलांगता के समूह को भावनात्मक अशांति (ईडी) के रूप में परिभाषित करता है।

भावनात्मक व्यवहार संबंधी विकार व्यक्ति की खुश रहने, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और स्कूल में ध्यान देने की क्षमता को प्रभावित करता है। गैलाउडेट यूनिवर्सिटी के अनुसार, भावनात्मक व्यवहार संबंधी विकार के लक्षणों में शामिल हैं:

- सामान्य परिस्थितियों में अनुचित कार्य या भावनाएँ
- सीखने में कठिनाई जो किसी अन्य स्वास्थ्य कारक के कारण नहीं होती
- शिक्षकों और साथियों के साथ संबंधों सहित पारस्परिक संबंधों में कठिनाई
- दुखी या अवसाद की एक सामान्य भावना
- व्यक्तिगत या स्कूल के मामलों से संबंधित भय और चिंता की भावनाएँ

भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकार (या संक्षिप्त रूप में EBD) भावनात्मक विनियमन और व्यवहार के पैटर्न के लिए सामान्य शब्द हैं, जो आम तौर पर स्कूली बच्चों में होते हैं। EBD यह छात्रों की उन साथियों और/या वयस्कों के साथ उचित संबंध बनाने की क्षमता में बाधा डालता है जिनके साथ उनका नियमित संपर्क होता है। भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकारों की विशेषताओं में शामिल है कि ये व्यवहार दीर्घकालिक होते हैं (लंबे समय तक, जैसे कि महीनों या वर्षों तक, अक्सर होते रहते हैं), व्यवहार को कक्षा या सामाजिक सेटिंग में अनुपयुक्त माना जाता है, और व्यवहार चरम पर होते हैं।

भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकार पीड़ित व्यक्ति की सीखने की क्षमता को भी बाधित करते हैं, जिसके कारण कम टेस्ट स्कोर और अन्य शैक्षणिक क्षेत्रों में समस्याएँ होती हैं। नतीजतन, इन प्रकार के विकार कम माध्यमिक शिक्षा, पारिवारिक संबंधों में समस्याओं और वयस्कों में रोजगार की समस्याओं से संबंधित हैं, जिन्होंने बचपन में इस प्रकार के विकारों के लक्षण प्रदर्शित किए थे।

आईडीईए(IDEA) भावनात्मक अशांति को इस प्रकार परिभाषित करता है: "…एक ऐसी स्थिति जो लंबे समय तक और एक चिह्नित सीमा तक निम्नलिखित विशेषताओं में से एक या अधिक को प्रदर्शित करती है जो बच्चे के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है:

1-सीखने में असमर्थता जिसे बौद्धिक, संवेदी या स्वास्थ्य कारकों द्वारा समझाया नहीं जा सकता है।

2-साथियों और शिक्षकों के साथ संतोषजनक पारस्परिक संबंध बनाने या बनाए रखने में असमर्थता।

3-सामान्य परिस्थितियों में अनुचित प्रकार के व्यवहार या भावनाएँ।

4-नाखुशी या अवसाद का एक सामान्य व्यापक मूड।

5-व्यक्तिगत या स्कूल की समस्याओं से जुड़े शारीरिक लक्षण या भय विकसित करने की प्रवृत्ति।"

1.4.4.1- भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकारों के प्रकार

विकलांगताओं के इस समूह को सामान्यीकरण के आधार पर वर्गीकृत करना विशेष रूप से कठिन है क्योंकि कुछ छात्र ऐसे हो सकते हैं जो विशिष्ट नैदानिक मानदंडों पर खरे नहीं उतरते हैं, लेकिन फिर भी विकलांग हैं, जिन्हें विशेष शिक्षा सेवाओं के लिए योग्य नहीं माना जाता है। मोटे तौर पर, समूह को आंतरिक व्यवहार, बाहरी व्यवहार और कम घटना व्यवहार में विभाजित किया जा सकता है। आंतरिक व्यवहार उन छात्रों में देखे जाते हैं जो उदास, पीछे हटने वाले और चिंतित होते हैं। बाहरी व्यवहार उन छात्रों में देखे जाते हैं जो आक्रामक होते हैं इस तरह के व्यवहार को विघटनकारी व्यवहार विकार (DBD) के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा। कम घटना व्यवहार वे व्यवहार हैं जो केवल विशेष पर्यावरणीय ट्रिगर्स में होते हैं, जैसे कि कोई विशिष्ट व्यक्ति या वाक्यांश। ध्यान दें, कुछ छात्रों की केवल एक श्रेणी हो सकती है, कुछ की मिश्रित।

1-चिंता संबंधी विकार/Anxiety disorders

2-खाने के विकार/Eating disorders

3-अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर/ Attention deficit hyperactivity disorder (ADHD)

4-द्विध्रुवी विकार/ Bipolar disorder

5-ऑब्सेसिव-कंपल्सिवडिसऑर्डर/Obsessive-compulsive disorder

6-विघटनकारी व्यवहार संबंधी विकार /Disruptive behavioural disorders

7-विघटनकारी विकार/Dissociative disorders

8-भावनात्मक विकार/Emotional disorders

9-मनोविकृति विकार/Psychotic Disorder

1-चिंता संबंधी विकार/Anxiety disorders

चिंता एक भावनात्मक विकार है जिसमें रोज़मर्रा की स्थितियों से एक अतार्किक डर पैदा होता है। चिंता शारीरिक लक्षणों को जन्म दे सकती है, जैसे सोने में परेशानी या पेट में दर्द। चिंता का इलाज अक्सर थेरेपी से और कभी-कभी मनोवैज्ञानिक दवाओं के इस्तेमाल से किया जाता है।

2-खाने के विकार /Eating disorders

खाने के विकार व्यवहार संबंधी विकार हैं जिसमें पीड़ित व्यक्ति का भोजन के साथ अस्वस्थ संबंध होता है। खाने के विकार का एक सामान्य प्रकार एनोरेक्सिया नर्वोसा है, जो महिलाओं में अधिक आम है। इस विकार में व्यक्ति जानबूझकर अपने कैलोरी सेवन को सीमित कर देता है। नतीजतन, वे कुपोषण और भुखमरी के प्रभावों से पीड़ित होने लगते हैं। एक अन्य सामान्य भोजन विकार बुलीमिया है, जिसमें बिंजिंग (एक बार में बहुत सारा भोजन खा लेना) और पर्जिंग (जानबूझकर उल्टी करना या जुलाब का दुरुपयोग करना) की अवधियां शामिल होती हैं।

3-अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर/ Attention deficit hyperactivity disorder (ADHD)

रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्रों के अनुसार, ADHD एक ऐसी स्थिति है जो किसी व्यक्ति की ठीक से ध्यान केंद्रित करने और आवेगपूर्ण व्यवहार को नियंत्रित करने की क्षमता को बाधित करती है, या यह व्यक्ति को अति सक्रिय बना सकती है।

लड़कियों की तुलना में लड़कों में ADHD अधिक आम है। ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के वेक्सनर मेडिकल सेंटर के अनुसार, पुरुषों में ADHD होने की संभावना महिलाओं की तुलना में दो से तीन गुना अधिक होती है।

4-द्विध्रुवी विकार/ Bipolar disorder

जिसे मैनिक-डिप्रेसिव बीमारी के रूप में भी जाना जाता है, द्विध्रुवी विकार एक गंभीर चिकित्सा स्थिति है जो अत्यधिक "उच्च" और/या चिड़चिड़े से लेकर उदास और निराशाजनक और फिर वापस मूड में नाटकीय बदलाव का कारण बनती है, अक्सर बीच-बीच में सामान्य मूड के दौर के साथ। मूड में इन बदलावों के साथ ऊर्जा और व्यवहार में गंभीर बदलाव होते हैं। द्विध्रुवी विकार वाले अधिकांश लोगों के लिए, इन मूड स्विंग और संबंधित लक्षणों को दवा और मनोसामाजिक उपचार को मिलाकर एक दृष्टिकोण का उपयोग करके समय के साथ स्थिर किया जा सकता है।

5-ऑब्सेसिव-कंपल्सिवडिसऑर्डर/Obsessive-compulsive disorder

अक्सर ओसीडी के रूप में संदर्भित, ऑब्सेसिव-कंपल्सिव डिसऑर्डर वास्तव में एक चिंता विकार माना जाता है (जिस पर इस तथ्य पत्रक में पहले चर्चा की गई थी)। ओसीडी की विशेषता आवर्ती, अवांछित विचार (जुनून) और/या दोहराव वाले व्यवहार (बाध्यता) हैं। बार-बार दोहराए जाने वाले व्यवहार (हाथ धोना, गिनना, जाँचना या सफाई करना) अक्सर जुनूनी विचारों को रोकने या उन्हें दूर भगाने की उम्मीद से किए जाते हैं। हालाँकि, इन तथाकथित "अनुष्ठानों" को करने से केवल अस्थायी राहत मिलती है, और उन्हें न करने से चिंता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

वैज्ञानिक प्रमाणों का एक बड़ा समूह बताता है कि OCD मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन के कारण होता है। OCD वाले अधिकांश लोगों के उपचार में निम्नलिखित में से एक या अधिक शामिल होने चाहिए:

- व्यवहार चिकित्सा में प्रशिक्षित चिकित्सक
- संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा (CBT)
- दवा (आमतौर पर एक अवसादरोधी)

6-विघटनकारी व्यवहार संबंधी विकार /Disruptive behavioural disorders -विघटनकारी व्यवहार विकार (DBD) बच्चे के दैनिक जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं। विघटनकारी व्यवहार विकार वाले बच्चे असहयोगी और विद्रोही व्यवहार के निरंतर पैटर्न दिखाते हैं।अधिकार वाले लोगों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया उदासीनता से लेकर शत्रुता तक होती है। उनका व्यवहार अक्सर उनके आस-पास के लोगों को प्रभावित करता है, जिसमें शिक्षक, सहकर्मी और परिवार के सदस्य शामिल हैं।

विघटनकारी व्यवहार विकारों के सबसे आम प्रकारों में एक अन्य या अनिर्दिष्ट विघटनकारी, आवेग-नियंत्रण और आचरण विकार (जिसे पहले विघटनकारी व्यवहार विकार के रूप में जाना जाता था), विरोधी अवज्ञाकारी विकार (ODD) और आचरण विकार (CD) शामिल हैं। इन व्यवहार संबंधी विकारों वाले बच्चे जिद्दी, मुश्किल, अवज्ञाकारी और चिड़चिड़े हो सकते हैं।

A-विपक्षी अवज्ञा विकार/Oppositional Defiant Disorder (ODD) यह एक व्यवहार संबंधी विकार है, जो बच्चों में शत्रुतापूर्ण, चिड़चिड़े और असहयोगी रवैये की विशेषता है, चिल्ड्रन्स मेंटल हेल्थ ओंटारियो के अनुसार। ODD वाले बच्चे जानबूझकर द्वेषपूर्ण या परेशान करने वाले हो सकते हैं, और वे आम तौर पर अपने नकारात्मक कार्यों को अधिकार रखने वाले लोगों पर निर्देशित करते हैं।6-आचरण विकार

B-आचरण विकार/Conduct disorder- युवाओं में व्यवहार और भावनात्मक समस्याओं के एक समूह को संदर्भित करता है। इस विकार वाले बच्चों और किशोरों को नियमों का पालन करने और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके से व्यवहार करने में बहुत कठिनाई होती है। (14) इसमें निम्नलिखित में से कुछ व्यवहार शामिल हो सकते हैं:

- लोगों और जानवरों पर आक्रामकता
- संपत्ति का विनाश
- धोखाधड़ी, झूठ बोलना या चोरी करनाया
- नियमों का उल्लंघन या अन्य गंभीर उल्लंघन।

हालाँकि, व्यवहार विकार का इलाज करना सबसे कठिन व्यवहार विकारों में से एक है, लेकिन युवा लोग अक्सर कई तरह की सेवाओं से लाभान्वित होते हैं, जिनमें शामिल हैं:

7-विघटनकारी विकारों/Dissociative disorders- में स्मृति, पहचान, भावना, धारणा, व्यवहार और स्वयं की भावना से जुड़ी समस्याएं शामिल हैं। विघटनकारी लक्षण मानसिक कार्यप्रणाली के हर क्षेत्र को संभावित रूप से बाधित कर सकते हैं। विघटनकारी लक्षणों के उदाहरणों में अलगाव का अनुभव या ऐसा महसूस होना शामिल है जैसे कि कोई अपने शरीर से बाहर है, और स्मृति का नुकसान या भूलने की बीमारी। विघटनकारी विकार अक्सर आघात के पिछले अनुभव से जुड़े होते हैं।

विघटनकारी विकार तीन प्रकार के होते हैं:

- विघटनकारी पहचान विकार
- विघटनकारी भूलने की बीमारी
- विपर्सनलाइज़ेशन/डीरियलाइज़ेशन विकार

8- भावनात्मक विकार/ Emotional disorders- भावनात्मक व्यवहार संबंधी विकार व्यक्ति की खुश रहने, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और स्कूल में ध्यान देने की क्षमता को प्रभावित करता है। गैलाउडेट यूनिवर्सिटी के अनुसार, भावनात्मक व्यवहार संबंधी विकार के लक्षणों में शामिल हैं:

- सामान्य परिस्थितियों में अनुचित कार्य या भावनाएँ
- सीखने में कठिनाई जो किसी अन्य स्वास्थ्य कारक के कारण नहीं होती है
- शिक्षकों और साथियों के साथ संबंधों सहित पारस्परिक संबंधों में कठिनाई
- दुखी या अवसाद की सामान्य भावना
- व्यक्तिगत या स्कूल के मामलों से संबंधित भय और चिंता की भावनाएँ

9-मनोविकृति विकार/Psychotic Disorder- गंभीर बीमारियों का एक समूह है जो मन को प्रभावित करता है। वे किसी व्यक्ति के लिए स्पष्ट रूप से सोचना, अच्छे निर्णय लेना, भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करना, प्रभावी ढंग से संवाद करना, वास्तविकता को समझना और उचित व्यवहार करना कठिन बना देते हैं।जब लक्षण गंभीर होते हैं, तो मनोविकृति विकार वाले लोगों को वास्तविकता से जुड़े रहने में परेशानी होती है और अक्सर वे दैनिक जीवन को संभालने में असमर्थ होते हैं। लेकिन गंभीर मनोविकृति विकारों का भी आमतौर पर इलाज किया जा सकता है।

a. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकताएं (Needs of Children with special needs)

विकलांग बच्चों को आम तौर पर हर बच्चे की तरह ही सामान्य स्वास्थ्य सेवा की आवश्यकता होती है, लेकिन अक्सर स्वास्थ समस्याओं में अधिक बारंबारता और तीव्रता के कारण उन्हें कई तरह की विशेष सेवाओं की भी आवश्यकता होती है, जिनकी विकलांगता रहित बच्चों को आम तौर पर आवश्यकता नहीं होती। यह विशेष देखभाल विकलांगता के आधार पर की जानी चाहिए। लेकिन विकलांग बच्चों की कुछ बुनियादी ज़रूरतें ऐसी होती हैं जो सभी तरह की विकलांगताओं में समान होती हैं। कुछ ज़रूरतें उनकी विकलांगता के हिसाब से अलग होती हैं। अधिकतम स्वास्थ्य परिणाम सुनिश्चित करने के लिए, सभी बच्चों को नियमित प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच की आवश्यकता होती है, जिसमें निवारक देखभाल, नैदानिक देखभाल और उपचार शामिल हैं। निवारक देखभाल वर्तमान स्वास्थ्य को बनाए रखने, स्वास्थ्य समस्याओं को होने से पहले रोकने और मौजूदा स्वास्थ्य समस्याओं के द्वितीयक परिणामों को सीमित करने पर केंद्रित है। शारीरिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए, इसमें नियमित जांच; शारीरिक परीक्षण; टीकाकरण; और आनुवंशिक या नैदानिक जांच शामिल हैं, जिसमें जोखिम में मानी जाने वाली आबादी में संक्रामक रोगों के लिए परीक्षण (AAP, 2011; एडवर्ड्स लाइफसाइंसेज, 2011) और द्वितीयक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए जांच शामिल हैं। नैदानिक देखभाल वर्तमान लक्षणों के कारण को समझने और बीमारी का निदान

करने पर केंद्रित है। जब कोई स्वास्थ्य समस्या मौजूद होती है, तो समस्या को नियंत्रित करने, ठीक करने या कम करने के लिए उपचार प्रदान किया जाता है।

1- स्वास्थ्य सेवायें- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनकी चिकित्सा स्थितियों के लिए उपचार की आवश्यकता होती है। उन्हें भावनात्मक मुद्दों के लिए भी थेरेपी की आवश्यकता होती है जो उनके व्यवहार या स्कूल में सीखने की क्षमता को प्रभावित कर रहे हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनकी मनोवैज्ञानिक समस्याओं के लिए उपचार की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी बच्चे को अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD) का निदान किया गया है, तो यह महत्वपूर्ण है कि उसे किसी ऐसे पेशेवर से उपचार मिले जो इस विकार के प्रबंधन में माहिर हो ताकि वह व्यक्ति दूसरों की तरह सामान्य जीवन जी सके।

2- विशेष देखभाल

विकलांगता रहित बच्चों की तुलना में उन्हें अतिरिक्त देखभाल की आवश्यकता होती है क्योंकि जो बच्चे विकलांगता से प्रभावित नहीं हैं वे कुछ मामलों में खुद की देखभाल कर सकते हैं, लेकिन ये बच्चे खुद की इतनी अच्छी तरह से देखभाल करने में सक्षम नहीं होते हैं। वे अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं और दैनिक कार्यों के लिए दूसरे लोगों पर निर्भर होते हैं। बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चे अपने दैनिक कार्य करने में सक्षम नहीं होते हैं और दुर्घटना की संभावना अधिक होती है क्योंकि वे खतरनाक स्थिति का अंदाजा नहीं लगा पाते हैं। इसलिए माता-पिता को उनका अतिरिक्त ध्यान रखना पड़ता है।

3- पारिवारिक सहयोग

विकलांग बच्चों को अपने परिवार के सदस्यों खासकर अपने माता-पिता और भाई-बहनों के सहयोग की आवश्यकता होती है। उन सभी को बच्चे की इस तरह से मदद करनी चाहिए कि बच्चा अपने दैनिक कार्य करने में सक्षम हो सके। उदाहरण के लिए, शारीरिक रूप से विकलांग बच्चे को हाथ पकड़कर या बैसाखी देकर उसे चलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।दृष्टिबाधित बच्चे को भी उसकी सुविधा के लिए मौके पर ब्रश और टूथपेस्ट देने के बजाय खुद बाथरूम जाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। धीरे-धीरे वह रास्ता पहचानने लगेगा और उससे परिचित हो जाएगा। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह स्वतंत्र कार्य करना का प्रयास करेगा।

4- पर्यावरण के साथ अधिक संपर्क

विशेष बच्चों को पर्यावरण के साथ तालमेल बिठाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता होती है। हम सभी जानते हैं कि जीवन के शुरुआती वर्षों में इंद्रियों का विकास बहुत तेजी से होता है और बच्चा उनके माध्यम से पर्यावरण के साथ संपर्क करता है। उसे उत्तेजना और प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं। इस प्रक्रिया से बच्चा अपने पर्यावरण के बारे में सीखता है। उसे पर्यावरण के साथ अधिक संपर्क की आवश्यकता होती है ताकि वह अपनी अक्षमता को दूर करने के लिए अधिक प्रयास कर सके। बच्चे को उसकी शारीरिक क्षमताओं के आधार पर बातचीत और शिक्षा के माध्यम से सीखने के अधिकतम अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। बच्चे को आत्मनिर्भर बनने के अवसर मिलने चाहिए। बच्चे को विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे खिलौने दिए जाने चाहिए, उसे विभिन्न प्रकार की आवाज़ों और ध्वनियों जैसे संगीत, खनकने वाले खिलौने, घंटियाँ आदि का अनुभव कराया जाना चाहिए। उसे विभिन्न प्रकार के स्पर्श अनुभव प्रदान किए जाने चाहिए। धीरे-धीरे बच्चा अपनी क्षमता के अनुसार रंगों, आवाज़ों और ध्वनियों और बनावटों को पहचानना सीख जाता है। वह अपनी इंद्रियों का पूरी क्षमता से उपयोग करता है। वह अपनी अक्षमता पर विजय पाने के लिए अपनी सामान्य क्षमताओं का अधिकतम लाभ उठाने का प्रयास करता है।

5- शीघ्रहस्तक्षेप और प्रारंभिक शिक्षा

विकलांग बच्चों में शीघ्रहस्तक्षेप उतनी ही आवश्यक है जितनी कि विकलांगता की रोकथाम और देखभाल। उनकी विकलांगता का प्रबंधन उनके जीवन के शुरुआती वर्षों से ही शुरू कर देना चाहिए। जैसे ही बच्चे की विकलांगता का पता चले, उसकी प्रारंभिक शिक्षा और प्रशिक्षण तुरंत शुरू कर देना चाहिए ताकि उसे आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनने में मदद मिले। वास्तव में विकलांग बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि बच्चों को अंततः समाज में समायोजित होना पड़ता है, इसलिए उन्हें जो बच्चे विकलांगता से प्रभावित नहीं है उन बच्चों के करीब रखा जाना चाहिए और सभी को उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम सभी बच्चों के साथ करते हैं। उनकी शिक्षा में उन्हें अपने व्यक्तिगत कार्यों जैसे नहाना, खाना, कपड़े पहनना आदि के मामले में आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया जाना चाहिए। इन्हें प्रारंभिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिवार में भी दिया जाना चाहिए।

6-समावेशी शिक्षा

यह अनुभव किया गया है कि विकलांग बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए उनके शुरुआती वर्षों से ही अलग संस्थानों में भेजा जाता है। समाज में उनके लिए समायोजन करना कठिन पाया गया। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसे बच्चों को जो बच्चे विकलांगता से प्रभावित

नहीं हैं उनके साथ ही शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि उन्हें लगे कि वे समाज का हिस्सा हैं और दूसरे बच्चे भी उन्हें शुरू से ही स्वीकार करें और उन्हें एक ही कक्षा में देखने और उनके साथ समायोजन की आदत डालें।

इस तरह एक-दूसरे की स्वीकृति परस्पर होगी। इन दिव्यांग बच्चों का समाज में समायोजन आसान होगा और अगर उन्हें जो बच्चे विकलांगता से प्रभावित नहीं उनके साथ रखा जाए तो उनमें समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा। दृष्टिबाधित बच्चों को 'ब्रेल' में पढ़ाया जाना चाहिए, श्रवणबाधित बच्चों को 'संकेतभाषा' सिखाई जानी चाहिए ताकि वे अन्य लोगों के साथ संवाद कर सकें।

7- व्यावसायिक शिक्षा

इन्हें आत्मनिर्भर बनाने और अपनी आजीविका कमाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए। बच्चों को उनकी रुचि और प्रतिभा के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए जैसे संगीत, चित्रकला, हस्तशिल्प आदि। इन व्यवसायों के माध्यम से वे समाज में अच्छी तरह से समायोजित हो जाएंगे और आत्मनिर्भर रहेंगे।

8- उचित उपकरण उपलब्ध कराना

शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों को कुछ उपकरणों की आवश्यकता होती है जो उन्हें पर्यावरण के साथ समायोजित करने में मदद करते हैं, जैसे कि 'बैसाखी, व्हीलचियर आदि कम सुननेवाले के लिए श्रवण यंत्र, कम दृष्टि के लिए चश्मा ताकि बच्चा अपनी विकलांगता पर कुछ हद तक काबू पा सके।

1.6 सारांश-

विकलांग बच्चे हर समाज में सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले लोगों में से हैं।बाधाओं की एक श्रृंखला दैनिक जीवन में कार्य करने, सामाजिक सेवाओं (जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल) तक पहुँचने और अपने समुदायों में शामिल होने की उनकी क्षमता को सीमित करती है। इनमें शामिल हैं:

भौतिक बाधाएँ - उदाहरण के लिए, भवन, परिवहन, शौचालय और खेल के मैदान जो व्हीलचेयर उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग नहीं किए जा सकते

संचार और सूचना बाधाएँ - जैसे कि ब्रेल में उपलब्ध नहीं होने वाली पाठ्यपुस्तकें, या सांकेतिक भाषा की व्याख्या के बिना दी जाने वाली सार्वजनिक स्वास्थ्य घोषणाएँ

रवैयागत बाधाएँ - जैसे रूढ़िबद्धता, कम अपेक्षाएँ, दया, कृपालुता, उत्पीड़न और बदमाशी इनमें से प्रत्येक कलंक और भेदभाव में निहित है जो विकलांगता से जुड़ी नकारात्मक

धारणाओं को दर्शाता है: विश्वासों, मानदंडों और प्रथाओं की एक प्रणाली जो विकलांग लोगों का अवमूल्यन करती है

विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर घोषणापत्र (CRPD) को दुनिया भर में विकलांग लोगों द्वारा अनुभव किए गए गंभीर मानवाधिकार उल्लंघनों के जवाब में 2006 में अपनाया गया था। CRPD सरकारों को सभी मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रताओं के उनके पूर्ण और समान आनंद को बढ़ावा देने के लिए ठोस उपाय करने के लिए बाध्य करता है।अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के बावजूद, विकलांग बच्चे अधिक न्यायसंगत, समावेशी समाज बनाने के उद्देश्य से किए जाने वाले शोध और कार्यक्रमों में काफी हद तक अदृश्य रहते हैं। यह अदृश्यता उनके बहिष्कार का कारण और परिणाम दोनों है।

विकलांग बच्चे अक्सर खुद को एक दुर्गम दुनिया में समायोजित करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं जो उन्हें बाहर करती है। लेकिन वे ऐसी समस्याएँ नहीं हैं जिन्हें ठीक करने या बदलने की ज़रूरत है। विकलांगता मानव अनुभव की विविधता का हिस्सा है: कार्यात्मक सीमाएँ हम में से हर एक के जीवन चक्र में प्रकट होती हैं। विकलांग बच्चे किस हद तक खुशहाल जीवन जी पाते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम परिवर्तन की राह में आने वाली बाधाओं का सामना करने के लिए कितने तैयार हैं।

1.7 शब्दावली

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चे- में "वे बच्चे शामिल हैं जिनमें दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी अक्षमता है जो विभिन्न बाधाओं के साथ मिलकर समाज में समान आधार पर उनकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डाल सकती है"
- समावेशी शिक्षा- समावेशी शिक्षा का मतलब है सभी बच्चों का एक ही कक्षा में, एक ही स्कूल में होना। इसका मतलब है उन समूहों के लिए वास्तविक सीखने के अवसर जिन्हें पारंपरिक रूप से बहिष्कृत किया गया है
- शीघ्र हस्तक्षेप- प्रारम्भिक हस्तक्षेप सेवाएँ विकासात्मक देरी के जोखिम वाले शिशुओं और बच्चों के लिए विशेष सेवाएँ हैं। ये सेवाएँ पाँच विकासात्मक क्षेत्रों में बच्चों की ज़रूरतों को पहचानने और पूरा करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। ये हैं शारीरिक, संज्ञानात्मक, संचार, सामाजिक या भावनात्मक विकास, संवेदी और अनुकूली विकास।CRPD-Convention on the Rights of Persons with Disabilities

1.8 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न और उनके के उत्तर

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

.1 संवेदी क्षति का अर्थ स्पष्ट करो।

2. बौद्धिक अक्षमता कितने प्रकार की होती है ?

3. बहुविकलंगता को पारिभाषित किजिए.

1.8 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1- संवेदी विकलांगता" में पाँचों इंद्रियों में से कोई भी शामिल हो सकती है, लेकिन शैक्षिक उद्देश्यों के लिए, यह आम तौर पर सुनने, देखने या सुनने और देखने दोनों से संबंधित विकलांगता को संदर्भित करता है। संवेदी विकलांगता पहुँच को प्रभावित करती है - दृश्य और/या श्रवण जानकारी तक पहुँच। हमारे पास पाँच इंद्रियाँ हैं, जैसे आँख, कान, जीभ, त्वचा और नाक, जिनके माध्यम से हम विषय-वस्तु को ग्रहण/समझते हैं। इन इंद्रियों के ठीक से काम न करने से अवधारणा की पूर्ण प्राप्ति नहीं हो पाती। सरल शब्दों में कहें तो संवेदी क्षीणता इंद्रियों में क्षीणता को दर्शाती है।

2- चार

3- जब किसी बच्चे में कई अलग-अलग विकलांगताएं होती हैं, तो हम कहते हैं कि उसमें बहु विकलांगताएं हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे को सीखने में, शारीरिक नियंत्रित करने में और/या सुनने और देखने में कठिनाई हो सकती है। बहु विकलांगताओं का प्रभाव दो अलग-अलग विकलांगताओं के संयोजन से कहीं ज़्यादा हो सकता है।

1.9 सन्दर्भग्रन्थसूची

https://study.com/academy/lesson/emotional-behavioral-disorders-definition-characteristics-causes.html

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC5803568/

https://www.healthyplace.com/parenting/behavior-disorders/what-are-emotional-and-behavioral-disorders-in-children

https://brainwave.watch/what-are-the-needs-of-special-child/

https://tnou.ac.in/wp-content/uploads/2021/06/SED-14-Introduction-to-Sensory-Disabilities-English.pdf.

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1.विशेष आवश्यकता वाले बच्चो की अवधारणा को स्पष्ट किजिए.

2.विशिष्ट अधिगम अक्षमता को वर्गीकृत किजिए

3.विशेष आवश्यकता वाले बच्चो की मुख्य आवश्यकताएँ कौन-कौन सी है?

इकाई 2. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य एवं विकास:भारतीय एवं पाश्चात्य

इकाई संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य एवं विकास:भारतीय

2.3.1 प्रथम शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक

2.3.2 18 वीं शताब्दी के अंतर्गत

2.3.3 19 वीं शताब्दी के अंतर्गत

2.3.4 20वीं शताब्दी के अंतर्गत

2.3.5 21वीं शताब्दी के अंतर्गत

2.4 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य एवं विकास: पश्च्यात

2.4.1 ऐतिहासिक पृष्टभूमि

2.4.2 प्रथम शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक

2.4.3 18 वीं शताब्दी के अंतर्गत

2.4.4 19 वीं शताब्दी के अंतर्गत

2.4.5 20वीं शताब्दी के अंतर्गत

2.4.6 21वीं शताब्दी के अंतर्गत

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.7 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना:

विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 की धारा 2 के खंड (S) में परिभाषित विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का अर्थ है 'दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी विकलांगता वाला व्यक्ति, जो बाधाओं के साथ बातचीत में, दूसरों के साथ समान रूप से समाज में उसकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डालता है।'

भारत में अष्टावक्र, धृतराष्ट्र, सूरदास, मंथरा जैसे दिव्यांग व्यक्ति हुए जिन्होंने अपनी दिव्यंगता के बाद भी समाज में अहम भूमिका निभाई भारतीय शिक्षा व्यवस्था में दिव्यांग बच्चों कि शिक्षा के लिए अलग से कोई अलग व्यवस्था नहीं थी समाज और राजाओं के संरक्षण में ही इन लोगों की देखभाल हुआ करती थी भारत एक शानदार अपवाद था। सम्राट अशोक ने विकलांग व्यक्तियों की देखभाल के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किए थे। भारत में मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली से बाहर विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा की एक अलग प्रणाली के रूप में विशेष शिक्षा 1880 के दशक में विकसित हुई थी। बधिरों के लिए पहला स्कूल 1883 में बॉम्बे में और अंधों के लिए पहला स्कूल 1887 में अमृतसर में स्थापित किया गया था। भारत में, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा की ओर यात्रा एक क्रमिक प्रक्रिया रही है, जो अलगाव से अधिक समावेशी दृष्टिकोण की ओर विकसित हुई है।

पश्चिम में 14वीं और 15वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में विकलांग बच्चों को व्यक्तिगत रूप से शिक्षित करने के छिटपुट प्रयास किए जाने लगे, खास तौर पर मुद्रण तकनीक के आगमन के साथ। उस अवधि को अक्सर यूरोप में पुनर्जागरण काल के रूप में जाना जाता सुनने में अक्षम लोग बहुत लंबे समय से तात्कालिक इशारों का इस्तेमाल करते आ रहे हैं। लकड़ी की बैसाखी और अन्य सरल उपकरणों का इस्तेमाल भी प्राचीन काल से ही गति बाधित लोग करते आ रहे हैं। बौद्धिक विकलांग बच्चों की शिक्षा भी फ्रांसीसी क्रांति से पहले के दो दशकों में शुरू हुई मानी जा सकती है। इटार्ड नामक एक चिकित्सक ने 'द वाइल्ड बॉय ऑफ एवेरॉन' नामक एक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक एक ऐसे लड़के को पढ़ाने के उनके प्रयोगों पर आधारित थी फ्रांसीसी क्रांति की हलचल ने सभी के लिए स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के विचारों को विशेष प्रोत्साहन दिया। थोरो जैसे महान विचारकों ने विशेष शिक्षा की प्रक्रिया शुरू करने पर गहरा प्रभाव डाला, हालांकि सीधे तौर पर नहीं। फ्रांसीसी क्रांति से पहले के दो दशकों के दौरान फादर डी'आई. एपी ने बधिरों के लिए एक मैनुअल वर्णमाला विकसित की। उसी समय, नेत्रहीनों को पढ़ने में सक्षम बनाने के लिए उभरे हुए रोमन अक्षरों का उपयोग किया गया था। लगभग 50 साल बाद लुई ब्रेल ने इसकी खोज की। 1829 में, उन्होंने ब्रेल प्रणाली का आविष्कार किया, जो तीन बिंदुओं की दो समानांतर पंक्तियों में व्यवस्थित छह बिंदुओं के क्रमपरिवर्तन और संयोजन पर आधारित है। भारत और पश्चिमी देशों में विकलांगता के प्रति ऐतिहासिक संदर्भ, सामाजिक-आर्थिक कारक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण अलग-अलग हैं।

2.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

• विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के भारतीय ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को परिभाषित कर सकेंगे।

• विशेष आवश्यकता वाले भारतीय बच्चों के विकास को जान पाएंगे।

•विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के पाश्चात्य ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को परिभाषित कर सकेंगे।

• विशेष आवश्यकता वाले पाश्चात्य बच्चों के विकास को जान पाएंगे।

2.3 भारतीय संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं विकास:

अर्थवेद में यह जानकारी मिलती है कि इस काल में भारत में विकलांगों के उपचार हेतु गर्म एवं ठंडी जल का उपयोग, विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियां, वृक्षों तथा पत्तियों का प्रयोग उपचार हेतु औषधि के रूप में किया जाता था तथा विभिन्न प्रकार के योग चिकित्सा पद्धति का भी प्रयोग किया जाता रहा है अतः इससे स्पष्ट हो जाता है कि अक्षम व्यक्तियों की देखभाल करना आदिकाल से ही भारतीय परंपरा एवं संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है इतनी जागरुकता के बावजूद भी प्राचीन समय में विकलांगों की दशा सोचनीय ही थी लोगों में अंधविश्वास था जिसके कारण उनके लिए किसी प्रकार की कल्याणकारी व्यवस्था नहीं थी इस प्रकार के लोग विकलांगों को अभिशाप तथा पूर्व जन्मों का पाप मानते थे इसका परिणाम इतिहास में विकृत संतानों को मारने के रूप में सामने आता है चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य काल के अर्थशास्त्र में उल्लेख है कि राजा कौटिल्य ने विकलांगों हेतु अपमानजनक शब्दों के उपयोग करने पर प्रतिबंध लगाया था तथा उनकी रक्षा के लिए विशेष कानून भी बनाए थे उन्होंने कई विकलांगों को विशेषकर मूक बधिरों को अपने विशेष गुप्तचर के रूप में रखा था लगभग 1000 ईसा पूर्व के समय शास्त्र ग्रंथ एवं उपनिषद में दोषपूर्ण संतानों को जन्म लेने के कारण माता-पिता का चिंता युक्त होना कहा गया है इसी काल में कुछ महान पुरुष हुए थे जैसे महात्मा अष्टवक्र शारीरिक रूप से विकलांग थे भगवान श्री कृष्ण के मित्र सुदामा, इसी प्रकार राजा धृतराष्ट्र का वर्णन है जो दृष्टिहीन थी महान चिकित्सक चरक ने भी मंदबुद्धि के विभिन्न कर्म को बताया तथा विभिन्न प्रकारों का वर्गीकरण भी इसी काल में किया गया भारतीय हिंदू संस्कृति तथा बहुत ने विचारक ने अन्य देशों के समान ही इन्हे पूर्व जन्मों के पाप का फल कहां मनु संहिता में भी इनकी होने का कारण पूर्व अपराध कहा गया 5000 ईसा पूर्व के समय रामायण काल में मंद बुद्धिता का उल्लेख रानी कैकेयी की की दासी मंथरा के रूप में मिलता है|

2.3.1 प्रथम शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक

प्रथम शताब्दी के बाद से विकलांगता का कोई विस्तृत इतिहास नहीं प्राप्त होता फिर भी कुछ तथ्य तथा खोजकर्ताओं के अनुसंधान के परिणाम स्वरूप प्राप्त साक्ष्य प्रस्तुत किए जा रहे हैं साक्ष्य के अनुसार 320 - 480 ई गुप्त सम्राट के समय में शारीरिक रूप से विकलांगों के व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं पुनर्वास के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया गया था इसी समय सभी धर्मो हिंदू ,बौद्ध, जैन तथा इस्लाम आदि के उपदेशों में अक्षम व्यक्तियों को सम्मान देने तथा उन्हें सेवा दान हेतु करने को कहा गया है सम्राट अशोक के समय मठों में अर्थशास्त्र में पाटलिपुत्र के वर्णित चिकित्सालयों में विकलांग व्यक्तियों की देखभाल उपचार की व्यवस्था थी प्रथम शताब्दी के अंतर्गत विशेष शिक्षा की विश्व की पहली पाठ्यपुस्तक पंचतंत्र की रचना हुई इस किताब की रचना पंडित विष्णु शर्मा ने किया था पंडित विष्णु शर्मा राजा अमर शक्ति के दरबारी थे उन्होंने राजा के मंदबुद्धि पुत्रों को शिक्षा देने हेतु पंचतंत्र की रचना की जिसे आज तक की सबसे सर्वश्रेष्ठ पाठ्य पुस्तक की संज्ञा दी जाती है 17वीं सदी में भारत में पूर्ववत तरीकों से ही विकलांगों को सुरक्षा की जाती थी इस काल में सूरदास जो जन्मजात दृष्टिहीन थे ने भगवान कृष्ण के गुणों को कविताओं के रूप में रचा इसी काल में मराठा और पेशवाओं ने गुप्तचर एवं जासूसी करवाई हेतु अपने कर्मचारियों में श्रवण बाधित लोगों की नियुक्ति की थी इस प्रकार इस काल में विकलांगों की सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव आया तथा इसी के परिणाम स्वरुप विकलांगों की शिक्षण प्रशिक्षण के लिए सोचा जाने लगा इस प्रकार हम देखते हैं की सदी के पूर्व में आई शताब्दियों के इतिहास में विकलांगों की व्यवस्थित शिक्षण प्रशिक्षण की कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती है

2.3.2 : 18वीं शताब्दी के अंतर्गत

भारत में 18वीं शताब्दी में, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की काफी हद तक उपेक्षा की जाती थी, उनकी शिक्षा के लिए जागरूकता या सहायता सीमित थी। शिक्षा की एक अलग शाखा के रूप में विशेष शिक्षा की अवधारणा 18वीं शताब्दी के अंत में उभरने लगी। जबकि कोई समर्पित विशेष विद्यालय मौजूद नहीं थे, मौजूदा शैक्षिक संरचनाओं के भीतर या धर्मार्थ प्रयासों के माध्यम से कुछ प्रकार की सहायता प्रदान की जा सकती थी, हालांकि ये व्यापक या व्यवस्थित नहीं थे। विशेष आवश्यकताओं वाले लोगों सहित सभी के लिए शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना बहुत बाद में विकसित हुआ।

- उपेक्षा और सीमित सहायता: 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से पहले, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को अक्सर मुख्यधारा की शिक्षा से बाहर रखा जाता था और उन्हें बहुत कम या कोई सहायता नहीं मिलती थी। विकलांगता के बारे में समाज की समझ सीमित थी, और इन बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं के बारे में जागरूकता की कमी थी।

- विशेष शिक्षा का उद्भव: जैसे-जैसे जागरूकता बढ़ी, विशेष रूप से 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, एक अलग क्षेत्र के रूप में विशेष शिक्षा का विचार जोर पकड़ने लगा। यह बदलाव यूरोप में हुए विकास से प्रभावित था, जहाँ एल'एपी और हाउ जैसे अग्रणी व्यक्तियों ने बधिरों और अंधे लोगों के लिए शुरुआती स्कूल स्थापित किए।
- सहायता के शुरुआती रूप: विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के लिए विशिष्ट विशेष स्कूल अभी तक प्रचलित नहीं थे, कुछ प्रकार की सहायता निम्नलिखित माध्यमों से प्रदान की गई होगी:
    - परिवार-आधारित देखभाल: परिवार प्राथमिक देखभालकर्ता हो सकते हैं, जो घर पर विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को सहायता और शिक्षा प्रदान करते हैं।
    - धर्मार्थ संगठन: कुछ धर्मार्थ संस्थाओं ने सीमित देखभाल और सहायता प्रदान की होगी, लेकिन यह अक्सर व्यापक नहीं होती थी।
    - मुख्यधारा की शिक्षा व्यवस्था: कुछ मामलों में, विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को नियमित कक्षाओं में शामिल किया जा सकता था, हालाँकि उन्हें अक्सर मुख्यधारा के पाठ्यक्रम के अनुकूल होने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता था।
- सुधार की आवश्यकता:18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शिक्षा में सुधार की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ी और यह सुनिश्चित किया गया कि विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों सहित सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच मिले। इसके कारण अगली शताब्दियों में विशेष शिक्षा के लिए अधिक संरचित और व्यवस्थित दृष्टिकोण विकसित हुए।

2.3.3 19वीं शताब्दी के अंतर्गत

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में पहली बार क्रमबद्ध तरीके द्वारा विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए प्रयास किए गए सन 1826 ई में उत्तर भारत में विशेष शिक्षा का शुभारंभ राजा काली शंकर घोषाल ने बनारस में अंधों के लिए पाठशाला की स्थापना करके किया 1867 में मद्रास सरकार ने मद्रास नगरपालिका सीमा के बाहर किलपौक में 66.5 एकड़ भूमि पर मद्रास पागलखाने (एमएलए) के निर्माण को औपचारिक रूप से मंजूरी दी। 15 मई, 1871 को 145 रोगियों के साथ नए भवन में पागलखाने ने काम करना शुरू किया। 1922 में एमएलए का नाम बदलकर सरकारी मानसिक अस्पताल कर दिया गया। 1977 में अस्पताल का नाम बदलकर मानसिक स्वास्थ्य संस्थान (आईएमएच) कर दिया गया। बधिरों के लिए पहला स्कूल 1883 में बॉम्बे में और 1887 ई में श्रीमती एनिशार्प जो मिशनरी संस्थापिका थी ने भारत में प्रथम दृष्टिबाधित विद्यालय की स्थापना अमृतसर में की जो बाद में 1903 में देहरादून में शार्प मेमोरियल स्कूल फॉर द ब्लाइंड के नाम से स्थापित किया गया 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण में संपूर्ण

भारत में छोटी-छोटी केंद्र खुल चुके थे जहां अक्षम लोगों को व्यक्तिगत अथवा एकीकृत शिक्षा पद्धति के अंतर्गत शिक्षा व व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाने लगा

2.3.4 20वीं शताब्दी के अंतर्गत

इस शताब्दी के प्रारंभ में मानसिक पिछड़े बच्चे जो विद्यालय नहीं जाते थे उन्हें इकठ्ठा करके एक विद्यालय प्रारंभ किया गया पर यह सामान्यतः सफल नहीं रहा शताब्दी के बाद में बुद्धि लब्धि जांच, मानसिक पिछड़ों के स्तर के निश्चितता आदि के बाद ये विद्यालय सफल होने लगे I दृष्टि दोष वाले बच्चों के लिए दिवसीय विद्यालय प्रारंभ किए गए पालकों ने इस तरह के विद्यालयों का भी स्वागत किया उन्हें स्वीकारा तथा सहयोग भी प्रदान किया क्योंकि उन्हें आवासीय सुविधा भी उपलब्धि थी आंशिक विकलांग व्यक्तियों के लिए विद्यालय तो थे पर पूर्णतया विकलांग के लिए संभव नहीं था समस्यात्मक व्यवहार और शैक्षिक उपलब्धि वाले बच्चों के लिए कुछ कक्षाएं होती थी परंतु बोलने में समस्या वाले बच्चों के लिए कोई विशिष्ट कार्यक्रम नहीं थे 1900 ई के आसपास विश्व में विकलांग बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा के प्रयास किए गए परंतु इसमें थोड़ी ही सफलता मिली

अहमदाबाद, भारत में मूक-बधिर विद्यालय की स्थापना 1908 में की गई थी। यह श्रवण, वाणी और दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए शिक्षा और पुनर्वास के क्षेत्र में काम करने वाले सबसे पुराने संगठनों में से एक है। 1914 ईस्वी में प्रथम विश्व युद्ध के प्रारंभ में ही अक्षम बच्चों के लिए शिक्षा प्रशिक्षण का कार्य प्रारंभ हुआ सरकारी लेडी नोयस स्कूल फॉर हियरिंग इम्पेयर्ड चिल्ड्रन इसकी स्थापना 2 नवंबर, 1931 को शिक्षाविद श्री कालिदास भट्टाचार्य ने दिल्ली में की(वर्तमान में जिसका प्रबंधन दिल्ली सरकार के सामाजिक कल्याण विभाग द्वारा किया जाता है) जिसके साथ ही सरकार का ध्यान इस तरफ आकर्षित हुआ 1939 में, मानसिक रूप से मंद बच्चों के लिए सरकारी मानसिक अस्पताल में एक अलग विभाग खोला गया था। यह मानसिक रूप से मंद बच्चों को देखने और उनकी देखभाल करने के तरीके में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है, जिससे उन्हें सामान्य शरण आबादी से दूर और अधिक विशिष्ट देखभाल की ओर ले जाया गया। इस अवधि में मानसिक मंदता के बारे में बढ़ती समझ और इन बच्चों के लिए विशेष शिक्षा और सेवाओं के लिए जोर भी देखा गया।मुंबई में 1941 में विकलांग बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए चिल्ड्रन्स एड सोसाइटी (CAS) की स्थापना की गई थी इसमें बहरे, दृष्टिहीन और मानसिक रूप से विकलांग बच्चे शामिल हैं। विशेष रूप से, मुंबई के मानखुर्द में मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए गृह की स्थापना इस उद्देश्य के लिए एक प्रमुख आवासीय संस्थान के रूप में की गई थी, जो चिल्ड्रन्स एड सोसाइटी के अंतर्गत काम करता है।यह बाल अधिनियम का प्रत्याक्ष परिणाम था कि 1944 में मुंबई एक विशेष आवश्यकता वाला स्कूलस्थापितकिया गया "जय वकील" जिसकी शुरुआत श्री और श्रीमती होर्मुस्जी वकील ने अपनी बेटी दीना के लिए की थी, जो

डाउन सिंड्रोम के साथ पैदा हुई थी। इस समय तक 50 के दशक में देश के विभिन्न हिस्सों में 11 और केंद्र आरंभ हुए सन 1946 में नेशनल इंस्टीट्यूट आफ मेंटल हेल्थ द्वारा नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की प्रशिक्षण का समर्थन किया गया इसी वर्ष स्वतंत्रता प्राप्ति तक संपूर्ण भारत में लगभग 45 मूक बधिर विद्यालयों की स्थापना हो चुकी थी साथ ही गामक अक्षमता के क्षेत्र में विकास व प्रकृति की भी शुरुआत हो चुकी थी इसी समय प्रथम बनावटी शारीरिक अंग केंद्र की स्थापना पाकिस्तान की सियालकोट शहर में हुई थी कुछ समय पश्चात देश विभाजन के समय भारतीय रक्षा वाहिनी ने कृत्रिम अंग निर्माण केंद्र स्थापित किया जो महाराष्ट्र के पुणे शहर में खोला गया यह केंद्र उन सैनिकों के लिए था जिन्होंने युद्ध में अपने हाथ पैर गंवा दिए थे और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की दृष्टि से खोला गया था सन 1950 के आस पास दो पुनर्वास केंद्रो की स्थापना हुई जिसमें पहले दिल्ली में तथा दूसरा मद्रास में स्थापित किया गया यह केंद्र प्रारंभिक रूप गामक अक्षमता से पीड़ित व्यक्तियों को ध्यान में रखते हुए स्थापित किया गया फलस्वरुप संघीय सरकार का ध्यान इस तरफ आकर्षित हुआ और ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन का निर्माण मुंबई में हुआ इसके साथ ही स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग केंद्र और राज्य सरकार के शरीर चिकित्सा विभाग और पुनर्वास परिषद के विभाग आदि के सहयोग से विभिन्न स्थानों में जैसे केरल, तमिलनाडु पश्चिम बंगाल, बिहार ,जम्मू और कश्मीर तथा मणिपुर आदि स्थानों पर पुनर्वास केंद्र की स्थापना की गई इसका मुख्य उद्देश्य गामक क्षमता पीड़ित व्यक्तियों को पुनर्वास सेवाएं प्रदान करना था मुंबई में दृष्टि अक्षमता से ग्रसित व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय संघ की स्थापना की गई इसका उद्देश्य अक्षमता की रोकथाम एवं बचाव के उपाय करना था शिक्षा अधिनियम 45 के अनुसार 6 से 14 वर्ष के लोगों का विश्वव्यापी स्थर पर शिक्षाकरण में विशेष शिक्षा पर भी जोर दिया गया द फेडरेशन ऑफ़ द वेलफेयर आफ़ मेंटली रिटारडेंड इंडिया की स्थापना 1965 में हुई इनका मुख्य उद्देश्य मंदबुद्धि व्यक्तियों हेतु विभिन्न प्रकार की सेवा कर मुख्य धारा में समाहित करना है सन 1965-66 में एजुकेशन कमिशन की रिपोर्ट के अनुसार विकलांग बच्चों को जहां तक संभव हो सामान्य विद्यालय में सामायोजन पर बल दिया 1965 से 85 तक समाज में अक्षम व्यक्तियों के प्रति जागरूकता लाने हेतु कार्यक्रम आरंभ तथा संचालित करने के लिए बहुत कार्य किया गया 1968 ईस्वी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विशेष विद्यालय एवं समेकित शिक्षा की बात की 1969 से 70 ई को विशिष्ट कक्षाओं का युग कहा जाता है इस समय कई तरह की अपंगता वाले बच्चों को भी सफलतापूर्वक एकीकृत किया जा रहा था इस तरह 20वीं सदी मे लोगों द्वारा अक्षम व्यक्तियों स्वीकारने , सकारात्मक प्रवृत्ति बनाने आदि में बदलाव हुआ अदालत और सरकार की कार्यवाही ने अक्षम बच्चों के लिए और अधिक प्राप्त शिक्षा की उपलब्धता के प्रयास को सुनिश्चित किया 1984 में भारत सरकार ने मंदबुद्धि बच्चों के प्रशिक्षण हेतु सामग्री एवं संसाधन जुटाना हेतु राष्ट्रीय मानसिक विकलांग स्थान की स्थापना की गई 1985 ई तक की अवधि में समाज में विकलांग व्यक्तियों के प्रति जागरूकता लाने हेतु कार्यक्रम आरंभ करने तथा संचालित करने के लिए काफी कार्य किया गया इन

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु चार मुख्य राष्ट्रीय संस्थानों की स्थापना की गई 1986 में भारत सरकार ने भारतीय पुनर्वास परिषद का गठन कर विकलांगों के लिए चलाई जाने वाली कार्यक्रम की गुणवत्ता पर नियंत्रण रखने एवं सेवा संसाधनों की अधिमान्यता के लिए किया विकलांगों को सुविधा उपलब्ध कराने हेतु क्षेत्रीय पुनर्वास प्रशिक्षण केदो की स्थापना की गई सन 1986 ईस्वी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पारित की गई जिसमें विकलांगों को भी सामान्य बच्चों जैसी शिक्षा दि जाने का प्रावधान किया गया 1987 ईस्वी में मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम पारित हुआ इसमें विकलांगता की सुरक्षा एवं अधिकारों पर जोर दिया गया सन 1995 में भारत में निशक्त व्यक्ति अधिनियम बना जिसमें कहा गया कि विकलांग व्यक्तियों को सर्वदा उचित वातावरण में रखना चाहिए 1999 ईस्वी में भारत में मानसिक मंद, प्रमसतिकिय पक्षाघात, स्वलीनताग्रस्त बच्चों एवं बहुतविकलांगता के संरक्षण को ध्यान में रखते हुए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय न्यास की स्थापना की गई इस प्रकार से सरकारी एवं गैर सरकारी तौर पर राष्ट्रीय में अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने 20वीं शताब्दी के अंत तक विकलांगों के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य के जिसमें विकलांगों का पुनर्वास सेवा प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें सामान्य कारण प्रदान करते हुए समाज के मुख्य धारा में जुड़े जाने हेतु प्रयास किया गया था

2.3.5 21वीं शताब्दी के अंतर्गत

21वीं शताब्दी के प्रारंभ में ही दिव्यांग बच्चों की शिक्षा में एक बड़ा बदलाव आया शिक्षा का एक नया रूप सामने आया जिसे समावेशी शिक्षा के रूप में देखा गया कहा गया कि विद्यालय का स्वरूप बदला जाए और विद्यालयों को समावेशी बनाया जाए जिससे की विभिन्न क्षमता वाले बच्चे बिना किसी बाधा के अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सकें इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में कई बदलाव किए गए जैसे 2002 में सर्व शिक्षा अभियान आया सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) भारत सरकार का एक व्यापक और एकीकृत प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा (यूईई) प्राप्त करना है, जो पूरे देश को मिशन मोड में कवर करता है। एसएसए को 2001-2002 में राज्य सरकारों और स्थानीय स्वशासन के साथ साझेदारी में लॉन्च किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य 2010 तक 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को उपयोगी और प्रासंगिक, प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना है। इसके बाद 2006 में विकलांग व्यक्तियों के लिए पहली राष्ट्रीय नीति आई विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति, 2006 का उद्देश्य विकलांग व्यक्तियों के लिए समान अवसर, अधिकारों की सुरक्षा और समाज में उनकी पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना है। यह उन्हें मूल्यवान मानव संसाधन के रूप में मान्यता देता है। नीति रोकथाम कार्यक्रमों, पुनर्वास उपायों और बाधा-मुक्त वातावरण बनाने के माध्यम से शारीरिक, शैक्षिक और आर्थिक पुनर्वास प्रदान करने पर केंद्रित है।इसके बाद 2016 में आरपीडब्ल्यूडी एक्ट 2016 आया विकलांग व्यक्तियों के अधिकार (RPwD) अधिनियम, 2016, विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों और सम्मान को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से भारतीय कानून का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह पहले के

विकलांग व्यक्ति अधिनियम, 1995 की जगह लेता है, और विकलांगता की परिभाषा को और अधिक स्थितियों को शामिल करने के लिए विस्तारित करता है। RPwDअधिनियम विकलांग लोगों के लिए समानता, शिक्षा, रोजगार और जीवन के अन्य पहलुओं तक पहुँच को बढ़ावा देने पर केंद्रित है इसके बाद 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई जिसने आरपीडब्ल्यूडी एक्ट में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए जितनी भी बातें कही गई थी उसे सम्मिलित किया गया राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक व्यापक रूपरेखा है, जो पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई) 1986 की जगह लेगी। इसका उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप एक समग्र, लचीली और बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली बनाना है और छात्रों की रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना है। नीति शिक्षा में पहुंच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही पर भी जोर देती है।

स्वमूल्याकन हेतु प्रश्न :

1- भारत में प्रथम दृष्टिबाधित विद्यालय की स्थापना कहाँ पर हुई थी ?

2- विकलांग व्यक्तियों का अधिकार (RPwDAct) अधिनियम कब आया ?

2.4 पाश्चात्य संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं विकास:

पश्चिमी देशों में प्रारंभिक काल में , विकलांग बच्चों को अक्सर मुख्यधारा के समाज से बाहर रखा जाता था और संस्थानों में अलग-थलग कर दिया जाता था। विशेष शिक्षा आंदोलन बहिष्कार, पहुँच और समावेश के चरणों से गुज़रा, जिसमें अमेरिका में विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा अधिनियम (IDEA) जैसे कानून विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करते हैं। व्यक्तिगत निर्देश और समावेशी शैक्षिक सेटिंग्स पर अधिक जोर देने के साथ, जवाबदेही और सशक्तिकरण की ओर ध्यान केंद्रित किया गया। पश्चिमी दृष्टिकोण अधिक छात्र-केंद्रित है, जो व्यक्तिगत सीखने की शैलियों और जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करता है। शिक्षक छात्रों को अपने दम पर ज्ञान की खोज करने के लिए मार्गदर्शन करते हुए सुविधाकर्ता के रूप में कार्य करते हैं।पश्चिमी संदर्भों में, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और विकास अलगाव और बहिष्कार पर प्रारंभिक ध्यान से विकसित होकर समावेशन और व्यक्तिगत सहायता पर अधिक जोर देने लगा है। प्रारंभिक दृष्टिकोणों में अक्सर संस्थागतकरण और एक "चिकित्सा मॉडल" शामिल होता था जो विकलांगताओं को हस्तक्षेप की आवश्यकता वाली समस्याओं के रूप में देखता था। समय के साथ, ये दृष्टिकोण विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों को मान्यता देने और शिक्षा और अन्य सेवाओं तक उनकी पहुँच की वकालत करने की ओर स्थानांतरित हो गए।

2.4.1ऐतिहासिक पृष्टभूमि

ईसा पूर्व में प्राचीन साहित्य का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने पर हम कहीं-कहीं विकलांग व्यक्तियों तथा उनकी दशाओं का उल्लेख पाते हैं पश्चिमी देशों में प्रागैतिहासिक काल में दोषपूर्ण रूप से जन्म लेने वाले बच्चों को जन्म के समय या शैशवावस्था में मार दिए जाने की घटनाएं प्राप्त होती है पाषाण युग में असामान्य मानसिक अवस्था वालों को पिशाच अधिपत्य कहा जाता था इन्हें प्रार्थना जादू टोना शोर गुल,झाड फूंक तथा खोपड़ी में छेद करके ठीक किया जाता था लगभग इसी समय ग्रीक के एक चिकित्सक हिपपोक्रेट्स /(460- 357) ईसा पूर्व ने क्रांतिकारी विचार व्यक्त किया कि शारीरिक रोगों के समान मानसिक रोग भी कुछ स्वाभाविक कारणो से उत्पन्न होते हैं तथा उन्होंने शारीरिक रोगों के समान मानसिक रोगियों के लिए मानवीय देखभाल की आवश्यकता पर बल दिया

2.4.2 प्रथम शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक-

12वीं शताब्दी में इंग्लैंड के राजा हेनरी द्वितीय ने कानून बनाया जिसके अंतर्गत मंदबुद्धि एवं मानसिक रोग से ग्रसित व्यक्तियों को पृथक किया गया 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लोगों ने इन्हें दूषट आत्मा का आधिपत्य माना तथा सदी के अंत तक इन्हीं जादूगर एवं डायन समझा जाने लगा और मानसिक असामान्यता से ग्रसित व्यक्तियों को शारीरिक दंड भी दिया जाने लगा 16वीं शताब्दी में विकलांगों को मूर्ख कहा जाता था इसी काल के उत्तरार्ध में पोप ग्रेगरी प्रथम ने धर्मादेश जारी कर अपने धर्म अनुयायियों को विकलांगों की सहायता करने का निर्देश दिया इस शताब्दी के बाद से विकलांगों के संदर्भ में कोई बहुत विशिष्ट परिदृश्य इतिहास में प्राप्त नहीं होता इस समय भी इन्हें बुरी आत्मा कहकर घर से बाहर कर दिया जाता था मध्यकाल में ईसाई गिरजाघरों ने विकलांगों की सेवा का दायित्व ग्रहण किया तथा उनके लिए अनाथालय की स्थापना की धीरे-धीरे लोगों के विचारधारा में परिवर्तन आया और सामाजिक पुनरुत्थान के फल स्वरुप 17वीं शताब्दी के अंत में दृष्टि एवं श्रवण अक्षम व्यक्तियों के शिक्षण के प्रभावी तरीके खोजे गए 17वीं सदी में ही दर्शन शास्त्री रेने डिस्काई ने सीखने के सिद्धांत की नींव रखी इस काल में पेडपोंस डी ली थान नामक एक स्पैनिश मंक ने बहरे व्यक्तियों को पढ़ना लिखना और बोलना सीखना प्रारंभ किया इस प्रकार इस काल में विकलांगों की सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव दिखता है तथा इन्हीं सब की परिणाम स्वरुप विकलांगों के शिक्षक एवं प्रशिक्षण के लिए भी सोचा जाने लगा

- **प्रथम शताब्दी से 17 वीं शताब्दी की मुख्य विशेषताए :**

- **कलंक और बहिष्कार/ Stigmatization and Exclusion:**18वीं शताब्दी से पहले, विकलांग लोगों को अक्सर शापित, प्रेतग्रस्त या बस मूर्ख के रूप में देखा जाता था और उन्हें समाज से बाहर रखा जाता था।

- **सीमित शिक्षा और सहायता/ Limited Education and Support:**विकलांग बच्चों के लिए बहुत कम या कोई औपचारिक शिक्षा या सहायता उपलब्ध नहीं थी।
- **संस्थागतकरण/ Institutionalization:**कुछ विकलांग व्यक्तियों को मुख्यधारा के समाज से अलग करने के साधन के रूप में, अक्सर खराब परिस्थितियों में संस्थागत किया जाता था।

2.4.3 18वीं शताब्दी के अंतर्गत-

इस कॉल को डार्विन काल कहते हैं उस समय के युग को शैक्षिक पुनरुत्थान की अवस्था कहते हैं जो सामाजिक पुनरुत्थान के परिणाम स्वरूप सामने आती है इस काल में वाणी तथा भाषा संबंधी विकास सर्वप्रथम पेरिस में अमबेचालस माइकल ने, सैमुअल हार्वे ने हस्तचालित संकेत की एक पद्धति विकसित की जिसका प्रयोग मूक-बधिर व्यक्तियों के शिक्षण में सफलतापूर्वक किया गया इन्हें सांकेतिक पद्धति का पिता या जनक कहकर बुलाया जाता है डॉक्टर डिडरीट ने पेरिस के समाचार पत्र में छपे एक लेख से प्रभावित होकर सन 1748 ईस्वी में दृष्टि अक्षम व्यक्तियों की शिक्षा प्रारंभ किया सर वैलेंनटाइन हार्वे ने दृष्टि अक्षमों के प्रथम विद्यालय की स्थापना पेरिस में 1784 में की इस समय दृष्टिहीनों को पढ़ने के लिए रोमन लिपि का प्रयोग किया जाता था एक विशेष खोज के उपयोग द्वारा मानसिक मंद बच्चों की व्यवस्थित प्रशिक्षण की तरीकों को विकसित करने की विधि का प्रतिपादन जीन मार्क इटाड ने किया इन्होंने फ्रांस में पेरिस के निकट अविचारन के समीप जंगल में एक 11-12 वर्ष के बालक को घूमता हुए पाया जो बोलने में अक्षम तथा विकृत शरीर वाला था उसमें पशु समान प्रवृत्ति दिख रही थी तथा उसका पूरा शरीर जंगली जानवरों की छोटे-छोटे आक्रमणों से जख्मी था उसे इटाड पेरिस आए उसका नाम विक्टर रखा तथा उसको अपने पास रख विशेष प्रशिक्षण दिया इटार्ट ने उसे कपड़े पहने , कप से पेय पदार्थ पीने, भोजन करने तथा तीन अक्षरों वाले शब्दों को समझना जबकि इसमें आंशिक सफलता प्राप्त हुई फिर इसी विधि के परिणाम स्वरुप पिछड़ों के लिए शिक्षा की शुरुआत हुई इन्होंने मनोवैज्ञानिक भौतिक शिक्षा पर जोर दिया उनके द्वारा इस प्रयोग के परिणाम स्वरुप विकसित की गई प्रणाली में स्नायु , नाड़ीयो एवं प्रतिक्रिया को समाहित करने वाला प्रशिक्षण शिक्षण ,व्यवहार प्रबंधन तथा शिक्षा का व्यक्तिकरण था जो मंदबुद्धि बच्चों में विद्यमान क्रियात्मक स्तर के अनुसार था इन्होंने शिक्षक और शिष्य की भी संपर्क पर जोर दिया इन्होंने ही आज की शिक्षा प्रणाली में विद्यमान संबंध पर आधारित शिक्षा विधि पर सुझाव दिया इसी समय थॉमस हॉपकिंस मेलाउडेट ने भी बधिर बच्चों के लिए कहा कि ये अपनी अंगुलियों की सहायता से संप्रेषण कर सकते हैं विनजर ने 1986 में कहा कि 18वीं शताब्दी के अंत में अमेरिका फ्रांस के आंदोलन का अनुसरण करते हुए दृष्टि तथा श्रवण अक्षम बच्चों की शिक्षण के प्रभावी तरिके खोजे गए 1794 ईस्वी में में पिनेल ने मानसिक अस्पतालों से मानसिक रोगियों को जंजीरों से मुक्त करने का आदेश भी दिया इस प्रकार हम देखते हैं कि 18वीं

शताब्दी में विकलांगता के क्षेत्र में शिक्षा प्रशिक्षण की क्रांतिकारी परिवर्तन हुए जिससे इस सदी में मुख्य रूप से मानसिक विकलांगो एवं अक्षमों के प्रशिक्षण को आधार मिला

ज्ञानोदय युग/ Enlightenment Era :

- अग्रदूतों का उदय/ Emergence of Pioneers:
  जीन जैक्स रूसो और चार्ल्स मिशेल एल'एपे जैसे लोगों ने व्यक्तिगत शिक्षा और विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों की वकालत करना शुरू किया।
- विशेष विद्यालयों की स्थापना/ Foundation of Special Schools:
  पेरिस में इंस्टीट्यूट नेशनल डेस ज्यूनेस एवेगल्स (1784) जैसे बधिर और अंधे लोगों के लिए विद्यालयों की स्थापना ने विकलांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया।
- चिकित्सा मॉडल की ओर बदलाव/ Shift Towards Medical Model:
  चिकित्सा मॉडल के उदय ने विकलांगताओं की पहचान करने और उन्हें वर्गीकृत करने पर ध्यान केंद्रित किया, ताकि उनका इलाज किया जा सके या उन्हें "सुधार" किया जा सके।

2.4.4 19वीं शताब्दी के अंतर्गत-

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में पहली बार क्रमबद्ध तरीकों द्वारा विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए प्रयास किए गए आंदोलन के पूर्व के युग में विकलांग बच्चे सम्मान के साथ जीवन यापन कर सकते थे परंतु जैसे ही अमेरिका और फ्रांस में लोकतंत्र, व्यक्तिगत स्वतंत्रता आदि के विचार जोड़ पकड़ने लगे तो इस तरह की प्रकृति में बदलाव आया राजनीतिक सुधारो ने शिक्षा और स्वास्थ्य में विकलांगों की शिक्षा एवं दक्षता को प्रशिक्षण द्वारा जोड़ने का सफल प्रयास किया सन 1800 ईस्वी में यूरोप में विकलांगों के लिए विशेष शिक्षा एवं व्यवस्थित सेवाओं की अवधारणा का जन्म हुआ समूल गिडली(1801-1876 अमेरिका)ने भी निशक्तों के सीखने के संदर्भ में कहा कि निशक्त बच्चों व्यवस्थित शिक्षण द्वारा सीख सकते हैं ना की दया युक्त सेवा द्वारा सीख सकते हैं 19वीं में दृष्टिबाधितों की शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति फ्रांस के लुइस ब्रेल का जन्म हुआ वह सर वैलेंनटाइन हौवे के विद्यालय के छात्र थे उन्होंने बताया कि बिंदुओं के माध्यम से एवं संप्रेषण की चरमबद्ध तरीकों द्वारा दृष्टिबाधित बच्चे सीख सकते हैं इन्होंने 6 बिंद प्रणाली की शुरुआत की जो दृष्टिहीनों के पढ़ने लिखने से संबंधित थी यह छह बिंदु प्रणाली आगे चलकर ब्रेल के नाम से जाना जाने लगा एडवार्ड सेग्युविन(1812-1870) एक फ्रेंच मनोवैज्ञानिक हुए इन्होंने कहा कि मानसिक मंद बच्चों को यदि विशिष्ट संवेदी गामक अभ्यास द्वारा पढ़ाया जाए तो वे भी सीख सकते हैं

सन 1800 ई के मध्य में डोरोथीया डिवस के साथ सैमुअल होवी तथा हेनरी विल्वर ने संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में मानसिक विकलांगता से ग्रस्त बच्चों के लिए सेवा विकसित करने का दायित्व निभाया उन्हीं के प्रयास से मंदबुद्धिता के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक अध्ययन और विकास के लिए अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल रिटारडेशन की स्थापना में सहायता मिली लगभग इसी समय एलेग्जेंडर ग्राहम बेल (अमेरिकन 1847-1922)ने कहा कि अक्षम बच्चे भी बोलना सीख सकते हैं यदि उनकी सुनने की शक्ति को बढ़ा दी जाए अल्फ्रेड बाइनेट ने भी बुद्धि के संदर्भ में अपने विचारधारा दि और कहा कि बुद्धि मापी जा सकती है एवं मंदबुद्धि बुद्धियों को विशेष शिक्षा द्वारा पढ़ाया जा सकता है मारिया मांटेसरी जो एटारड और उसके छात्र सिगविन से प्रभावित हुई और उन्होंने विशेष तौर पर शिक्षा योग्य अक्षम बच्चों पर कार्य किया उन्होंने इंद्रिय आधारित प्रशिक्षण के आधार पर पठन, लेखन, गणित एवं ज्ञानेइंद्री प्रशिक्षण से बुनियादी कौशल पर जोर देते हुए विशेष उपकरण का विकास भी किया तथा कहा कि वास्तविक अनुभव द्वारा बनाए गए विशेष व्यावहारिक सामग्री द्वारा बच्चे बहुत ही कम उम्र में सीख सकते हैं सन 1870 ईस्वी में फॉरिटारस नामक शिक्षा नीति बनी जिससे ब्रिटेन के लोग विकलांगों की शिक्षा के प्रति जागरूक हुई तथा यही शिक्षा नीति 1880 ईस्वी में दोहराई गई जिसका परिणाम बहुत अच्छा रहा लुईस टर्मन (1872-1956 अमेरिका) ने भी विशिष्ट बच्चों की जांच के संबंध में कहा कि जो जीवन पर्यंत विशिष्ट बने रहते हैं वहीं विशिष्ट बच्चे होते हैं इनका पता लगाने हेतु बुद्धि लब्धि जांच का उपयोग किया जा सकता है सन 1880 में इन सबके मिली जिले परिणाम स्वरुप लगभग सभी प्रकार के विकलांगों के लिए बगैर सरकारी सहायता से विशिष्ट क्रियाओंका प्रारंभ हुआ

सन 1885-86 में रॉयल कमीशन के तत्वावधान में लार्ड इगरटन द्वारा कुछ सकारात्मक दृष्टिकोण पारित किया गया इसमें दृष्टिबाधितों के शिक्षण के लिए यूनाइटेड किंगडम में विभिन्न प्रकार की तकनीकी एवं व्यवसायिक संस्थानों की स्थापना की गई तथा उपयोगी खुले रोजगार की व्यवस्था की गई इसी के समरूप श्रवणबाधितों के लिए योजना भी बनी थी सन 1885 ईस्वी में सर फ्रांसिस गाल्स ने लंदन में पहला मानसिक परीक्षण केंद्र की स्थापना की इसी समय दृष्टि अक्षम व्यक्तियों के लिए विशेष विद्यालयों की स्थापना की गई उनकी शिक्षा प्रणाली का विकास तीव्र गति से होने लगा

1896 ईस्वी में लाइटर विटमर ने पेनिस्थावैनिया विश्वविद्यालय में पहला मनोवैज्ञानिक उपचार गृह खोल 1899 ईस्वी में यूनीनिक्स सोसाइटी ने एलिमेंट्री एजुकेशन एक्ट 16 वर्ष तक की विकलांगों के लिए विशेष शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराने की बात कही

इस प्रकार हम देखते हैं कि 19वीं शताब्दी में इस क्षेत्र में निश्चित रूप से फ्रांस अग्रणी रहा यूरोप और अमेरिकी संस्थानिक आंदोलन चला वह मात्र अक्षम लोगों की जरूरत पर शिक्षाविद , स्वास्थ्य कर्मियों की बदलती प्रवृत्ति का प्रतिबिम्ब था श्रवणबाधित और दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए संस्थान लगभग

एक ही समय में आए परंतु बौद्धीक अकक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए संस्थाएं लगभग 50 वर्ष बाद अस्तित्व में आई अक्षम लोगों के लिए व्यक्तिगत तौर पर पहला कार्यक्रम यूरोप के साथ ही फ्रांस ,जर्मनी ,स्कॉटलैंड और इंग्लैंड में प्रारंभ हुआ प्रथम विश्व युद्ध के युद्ध में जब अमेरिका ने भाग लिया तो समूह बुद्धि लब्धि जांच का प्रारूप बनाया गया फ्रांस की क्रांति के कारण सभी लोगों में स्वतंत्रता समानता और भाईचारे की भावना तीव्र होती गई

2.4.5 20 वीं शताब्दी के अंतर्गत-

1900 वीं ई के आस-पास विश्व में अक्षम बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा के प्रयास किए गए परंतु इसमें थोड़ी ही सफलता मिली इसी समय अन्ना फ्रेड (ऑस्ट्रेलिया 1895 1992) ने कहा कि भावात्मक समस्या वाले बच्चों के साथ मानोविश्लेषणात्मक तकनीक अपनाई जा सकती है अल्फ्रेड एस्ट्रेस(1897-1957जर्मनी) ने बताया कि सीखने की क्षमता युक्त बच्चे अलग ढंग की दिखते हैं जो मस्तिष्क क्षति के कारण होता है इन्हें विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है 1903 ईस्वी में लंदन कमीशन और इस क्षेत्र में कार्यरत कुछ उत्तरदाई संस्थाओं एवं जिम्मेदार लोगों ने मंदबुद्धि बच्चों के लिए कुछ प्रावधान बनाएं 1904 में रॉयल कमीशन ने विकलांगों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बहुत ही आवश्यक सूचना एकत्रित की जो 1908 ईस्वी में पारित हुई 1905 में फ्रांस में एडवर्ड विने एवं साइमन ने मिलकर बुद्धि मापन टेस्ट बनाया जिनको 1906 ईस्वी में सर्वप्रथम बच्चों पर उपयोग किया गया सन 1916 में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में टारमैन द्वारा बिने साइमन प्रशिक्षण का अमेरिका में उपयोग के लिए संशोधित किया गया इससे स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण कहा गया सन 1918 में रॉयल कमीशन पारित हुआ जो मेंटली डिफिशिएंसी बिल(एम बी डी)के नाम से था यह विकलांग बच्चों की संस्थाकरण पर काउंसिल एजुकेशन कमेटी के नाम से बना जिसमें बच्चों हेतु प्रथम बार मनोवैज्ञानिक पद का चुनाव किया गया

ब्रिटिश शासन द्रष्टिबाधिता के कारण निवारण व कल्याण हेतु एक समिति का गठन 1942 ईस्वी में किया गया इस समिति ने शिक्षा मंत्रालय में द्रष्टिबाधिता पर एक इकाई को स्थापित करने की सिफारिश की जो 1947 में इकाई के रूप में बनी और कुछ समय बाद ही अन्य प्रकार की विकलांगता वाले बच्चों की शिक्षा के कार्यक्रम को भी इससे जोड़ दिया गया उस समय शासन ने चार प्रकार के विकलांगतों पर ही विचार किया जो दृष्टिबाधिता , मानसिक पिछड़ापन, श्रवण बाधिता और गत्यात्मक असमर्थता थी सन 1934 ई के आसपास लियों कैनर ने स्वलीनता की खोज की लियों कैनर प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने व्यावहारिक नमूना की व्याख्या के अंतर्गत स्वावलीनता की खोज की उन्होंने एक निरीक्षणत्मक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जो निदानात्मक रूप से स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर से संबंधित था इसमें इन्होंने स्वलीन बच्चों की चारित्रिक विशेषताओं का भी उल्लेख किया ऐसे बच्चे अपनी में अकेले रहना पसंद करते हैं

इनमें भाषा संप्रेषण संबंधित कमी, समायोजन क्षमता में कमी आदि समस्या पाई जाती सन 1950 में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में यूनेस्को द्वारा सिफारिश की गई कि छापे प्रश्न को शब्दशः ब्रेल में अनुवादित किया जाना चाहिए 1950 में अमेरिका में विशेष समस्या वाले बच्चों के लिए नई शिक्षा नीति बनी इसके साथ ही बौद्धिकअक्षम के अभिभावक द्वारा नेशनल एसोसिएशन फॉर द रिटार्डड रिक्वायर्ड चिल्ड्रन (एन ए आर सी)नामक एक संस्था बनी इसी समय में गामक अक्षमता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हुई 1950 में अक्षमता को अलग से परिभाषित किया सन 1951 ईस्वी में अमेरिकन मनोरोग वैज्ञानिक संघ द्वारा डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिसटिकल मैन्युअल प्रथम(डी.एस एम) का प्रकाशन किया गया सन 1973 ईस्वी में ही लुई ब्रेल मेमोरियल अनुसंधान केंद्र की स्थापना हुई पेरिस में सर्वप्रथम पहले पब्लिक स्कूल की स्थापना सन 1965 में की गई जिसमें सांकेतिक भाषा का प्रयोग शिक्षण विधि के रूप में किया जाता था सन 1990 ईस्वी में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने क्षति, अक्षमता एवं विकलांगता को (ICDH) में परिभाषित किया सन 1983 में मेंटल डिफिशिएंसी को बदलकर मेंटल हैंडीकैप कहा गया विशेष शिक्षा के समर्थकों का पक्का विश्वास रहा कि विकलांग बच्चे और सामान्य बच्चों की शिक्षा साथ नहीं हो सकती अतः 19वीं शताब्दी के अंत तक विशेष विद्यालयों की परंपरा चालू रही 20वीं सदी के प्रारंभ में अमेरिका में समेकित शिक्षा का प्रयोग प्रारंभ हुआ ब्रिटेन में 10-15 वर्ष बाद इस पर कार्य प्रारम्भ हुआ हालांकि 20वीं सदी के बाद के समय में यूनाइटेड किंगडम द्वारा विशेष विद्यालयों की स्थापना समर्थन जारी रहा

अमेरिका विद डिसेबिलिटी एक्ट अदा ने सन 1990 ईस्वी में अक्षम व्यक्तियों की नागरिक अधिकारों संबंधित कानूनों पर ध्यान केन्द्रित किया सन 1994 में सलमानका स्पेन ने यूनेस्को द्वारा प्रायोजित सम्मेलन में सभी राष्ट्रों में केवल समावेशी शिक्षा व्यवस्था किए जाने पर जोरदार सिफारिश की अमेरिका में शिक्षा संबंधित कानून में उल्लेखित है कि सभी अक्षम बच्चों को कम से कम प्रतिरोधक वातावरण में रखा जाना चाहिए इस प्रकार से सरकारी एवं गैर सरकारी तौर पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने 20वीं शताब्दी के अंत तक विकलांगों के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किये जिनसे विकलांगों के पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें समाजीकरण प्रदान करते हुए समाज के मुख्य धारा में जोड़े जाने हेतु प्रयास किया गया

20वीं सदी के विकास/ 20th Century Developments:

- पुनर्वास आंदोलन/ Rehabilitation Movement:
  19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में पुनर्वास आंदोलन ने विकलांगताओं के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण लाया, जिसमें सामाजिक एकीकरण और व्यावसायिक प्रशिक्षण पर जोर दिया गया।

समकालीन युग/ Contemporary Era:

- निरंतर वकालत/ Continued Advocacy: विकलांग व्यक्तियों, जिनमें बच्चे भी शामिल हैं, के अधिकारों और समावेशन के लिए वकालत के चल रहे प्रयास जारी हैं।
- सामाजिक मॉडल पर जोर /Emphasis on Social Model: विकलांगता के सामाजिक मॉडल की बढ़ती मान्यता, जो इस बात पर जोर देती है कि विकलांगता सामाजिक बाधाओं और दृष्टिकोणों से पैदा होती है, ने अधिक समावेशी और सुलभ वातावरण बनाने के प्रयासों को जन्म दिया है।
- प्रारंभिक हस्तक्षेप/ Early Intervention: विकलांग बच्चों के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप कार्यक्रमों को उनके विकास और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

प्रमुख मील के पत्थर/ Key Milestones:

20वीं सदी के दौरान पश्चिमी देशों में, विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के उपचार और सहायता में महत्वपूर्ण प्रगति हुई, जो कानून, वकालत और विकसित होती समझ से प्रेरित थी। इस अवधि में संस्थागतकरण से एकीकरण और अंततः मुख्यधारा की शिक्षा में समावेशन की ओर बदलाव देखा गया, जिसमें सभी विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा अधिनियम (ईएचए) और विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा अधिनियम (आईडीईए) के रूप में इसका पुन: प्राधिकरण जैसे प्रमुख मील के पत्थर शामिल हैं। हालाँकि, विकलांगता अध्ययन त्रैमासिक के अनुसार, विकलांग बच्चों के परिवारों के लिए नकारात्मक धारणाओं और अपर्याप्त संसाधनों की विरासत भी पूरी सदी में बनी रही।

मुख्य विकास/Key Developments:

- **कानून/Legislation**:

- पुनर्वास अधिनियम (1973), ईएचए (1975), और आईडीईए (1990, 1997) जैसे प्रमुख कानूनों ने विकलांग छात्रों को मुफ्त और उचित सार्वजनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए कानूनी अधिकार स्थापित किए।
- असाधारण बच्चों के लिए परिषद (1922):Council for Exceptional Children (1922): एक विशेष शिक्षा वकालत समूह के रूप में स्थापित।
- पुनर्वास अधिनियम 1973/ Rehabilitation Act of 1973: स्कूलों में विकलांग छात्रों के लिए आवश्यक आवास।

- सभी विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा अधिनियम (1975)/ Education for All Handicapped Children Act (1975): विकलांग छात्रों के लिए "निःशुल्क और उचित सार्वजनिक शिक्षा" अनिवार्य।
- विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा अधिनियम (IDEA) (1990)/ Individuals with Disabilities Education Act (IDEA) (1990): सभी विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा अधिनियम का विस्तार किया गया और व्यक्तिगत शिक्षा योजनाओं पर जोर दिया गया।

➢ **बदलते प्रतिमान/Shifting Paradigms:**

- 20वीं सदी के मध्य में विकलांगता को व्यक्तिगत विफलता के रूप में देखने से लेकर सामाजिक और पर्यावरणीय बाधाओं की भूमिका को पहचानने तक का बदलाव देखा गया।
- 1994 में अपनाया गया सलामांका वक्तव्य समावेशी शिक्षा की वकालत करने वाला एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सभी बच्चे, चाहे उनकी योग्यताएँ या अक्षमताएँ कुछ भी हों, नियमित स्कूलों में एक साथ शिक्षा प्राप्त करें। इसे यूनेस्को और स्पेन के शिक्षा मंत्रालय द्वारा सलामांका, स्पेन में आयोजित विशेष आवश्यकता शिक्षा पर विश्व सम्मेलन में तैयार किया गया था। वक्तव्य और इसके साथ-साथ कार्य के लिए रूपरेखा प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा के मौलिक अधिकार पर जोर देती है, जिसमें विशेष शैक्षिक आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हैं, और सभी शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा प्रणालियों को डिज़ाइन करने का आह्वान किया गया है।

➢ वकालत और जागरूकता/Advocacy and Awareness: अभिभावक वकालत समूहों और नागरिक अधिकार आंदोलन ने जागरूकता बढ़ाने और विकलांग छात्रों के लिए शैक्षिक सुरक्षा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

➢ एकीकरण और समावेशन/Integration and Inclusion: विशेष जरूरतों वाले छात्रों को अलग करने से ध्यान हटाकर उन्हें मुख्यधारा की कक्षाओं में एकीकृत करने और बाद में समावेशी शिक्षा की ओर स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ विकलांग छात्रों को सामान्य शिक्षा सेटिंग के भीतर विशेष सहायता मिलती है।

➢ व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (आईईपी)/ Individualized Education Programs (IEPs): आईडीईए ने व्यक्तिगत सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत जरूरतों के अनुरूप आईईपी के उपयोग पर जोर दिया।

- प्रारंभिक हस्तक्षेप/Early Intervention: विकलांग बच्चों के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं के महत्व के बारे में बढ़ती जागरूकता ने ऐसे कार्यक्रमों के विकास को जन्म दिया जो बचपन से ही उनके विकास का समर्थन करते हैं।
- विसंस्थागतीकरण/Deinstitutionalization: विसंस्थागतीकरण आंदोलन का उद्देश्य विकलांग लोगों को बड़े संस्थानों से समुदाय-आधारित सेटिंग्स में ले जाना था, जिसमें आवासीय घर और समर्थित रहने की व्यवस्था शामिल है।

2.4.6 21 वीं सदी के अंतर्गत

21वीं सदी में, विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को समझने और उनका समर्थन करने में महत्वपूर्ण प्रगति हो रही है। इसमें समावेशी शिक्षा की ओर बदलाव शामिल है, जहाँ विकलांग बच्चे मुख्यधारा की कक्षाओं में अपने साथियों के साथ सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, सहायक तकनीक और व्यक्तिगत शिक्षण दृष्टिकोण का उपयोग अधिक आम होता जा रहा है, जो व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरा करने और अधिक समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने में मदद करता है।

- **कानून/Legislation:**

कोई बच्चा पीछे न छूटे (2002) No Child Left Behind Act (2002):/: 8 जनवरी, 2002 को कानून के रूप में हस्ताक्षरित नो चाइल्ड लेफ्ट बिहाइंड एक्ट (एनसीएलबी) एक संघीय कानून था जिसका उद्देश्य स्कूलों, जिलों और राज्यों के लिए जवाबदेही बढ़ाकर संयुक्त राज्य अमेरिका में सार्वजनिक शिक्षा में सुधार करना था। इसने मानक-आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके तहत राज्यों को उच्च मानक निर्धारित करने और स्कूलों के लिए मापनीय लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता थी इसमें विकलांग छात्रों की भी शिक्षा में जवाबदेही में सुधार करने का लक्ष्य रखा गया।

एनसीएलबी को अंततः दिसंबर 2015 में हर छात्र सफलता अधिनियम (ईएसएसए) द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। ईएसएसए ने राज्यों और स्थानीय जिलों पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे उन्हें अधिक स्वायत्तता मिली, जबकि अभी भी जवाबदेही और छात्र परिणामों पर जोर दिया गया।

विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीआरपीडी), जिसे 2006 में अपनाया गया था, एक मानवाधिकार संधि है जिसका उद्देश्य विकलांग लोगों के अधिकारों की रक्षा और उन्हें बढ़ावा देना है। इसे 2007 में हस्ताक्षर के लिए खोला गया था और 2008 में लागू किया गया था। सम्मेलन इस बात पर जोर देता है कि विकलांग व्यक्तियों के पास बाकी सभी लोगों के समान अधिकार हैं और उन्हें समाज में शामिल किया जाना चाहिए।

➢ **मुख्य विकास/Key Developments**:

- समावेशी शिक्षा: समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने पर ज़ोर बढ़ रहा है जहाँ विकलांगों सहित सभी छात्र पूरी तरह से भाग ले सकें। इसका मतलब है बाधाओं को दूर करना, पाठ्यक्रम को अनुकूलित करना और यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्र स्वागत और समर्थित महसूस करें।
- सहायक तकनीक: विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों का समर्थन करने में तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्क्रीन रीडर, टैबलेट और विशेष सॉफ़्टवेयर जैसी सहायक तकनीक सीखने को अधिक सुलभ और व्यक्तिगत बनाने में मदद कर सकती है।
- व्यक्तिगत शिक्षण: यह दृष्टिकोण सभी के लिए एक ही दृष्टिकोण के बजाय प्रत्येक छात्र की अनूठी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा को तैयार करने पर केंद्रित है। इसमें शिक्षण विधियों को अनुकूलित करना, विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान करना और छात्रों को अपनी गति से सीखने की अनुमति देना शामिल हो सकता है।

➢ **21वीं सदी के कौशल:**

शैक्षणिक शिक्षा के अलावा, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों में आलोचनात्मक सोच, संचार और समस्या-समाधान जैसे 21वीं सदी के कौशल विकसित करना महत्वपूर्ण है, ताकि वे आधुनिक दुनिया में सफल हो सकें।

- प्रारंभिक हस्तक्षेप: प्रारंभिक हस्तक्षेप के महत्व को पहचानते हुए, कई देश और संगठन संभावित देरी को रोकने और विकास को अधिकतम करने के उद्देश्य से विशेष आवश्यकता वाले छोटे बच्चों और उनके परिवारों का समर्थन करने के लिए कार्यक्रम लागू कर रहे हैं।
- पारिवारिक भागीदारी: परिवार की आवाज़ और कल्याण को विशेष ज़रूरत वाले बच्चों का समर्थन करने के महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में माना जा रहा है, जिसमें माता-पिता और परिवार के सदस्य शिक्षा और सहायता प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं।
- सहयोग: विशेष ज़रूरत वाले बच्चों को व्यापक सहायता प्रदान करने के लिए शिक्षकों, चिकित्सकों, विशेषज्ञों, माता-पिता और अन्य हितधारकों के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है।
- न्यूरोडाइवर्सिटी: न्यूरोडाइवर्सिटी की मान्यता बढ़ रही है, विकलांगता को पूरी तरह से नकारात्मक रूप में देखने से हटकर, उन्हें सोचने और सीखने के अलग-अलग तरीकों के रूप में स्वीकार करने की ओर बढ़ रहा है।

- अनुसंधान और नवाचार: चल रहे अनुसंधान और नवाचार विशेष जरूरतों वाले बच्चों की सहायता के लिए नई अंतर्दृष्टि और रणनीतियों की ओर ले जा रहे हैं, जिसमें मस्तिष्क-कंप्यूटर इंटरफेस और अन्य अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग शामिल है।
- सहयोग और समर्थन: सामान्य शिक्षा शिक्षक और विशेष शिक्षा शिक्षक सभी छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मिलकर काम करते हैं, जिनमें विशेष आवश्यकता वाले छात्र भी शामिल हैं। भारत और पश्चिमी देशों को सभी बच्चों, जिनमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हैं, के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करने में निरंतर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भारत और पश्चिमी देश दोनों ही अलगाव से समावेश की ओर बढ़ गए हैं, जिसमें विकलांग बच्चों के शिक्षा के अधिकारों पर अधिक जोर दिया जा रहा है

स्वमूल्याकन हेतु प्रश्न :

3- समावेशी शिक्षा की बात सर्वप्रथम कहाँ कही गई थी ?

4- यूएनसीआरपीडी कब आया ?

2.5 सारांश:

भारत में, ईसाई मिशनरियों द्वारा दृष्टीबाधित और श्रवण बाधित लोगों के लिए स्कूलों की स्थापना के साथ 1880 के दशक में एक अलग प्रणाली के रूप में विशेष शिक्षा उभरी। इन संस्थानों के लिए सरकारी समर्थन 19वीं सदी की शुरुआत में शुरू हुआ। कोठारी आयोग (1964-66) ने विकलांग बच्चों को नियमित स्कूलों में शामिल करने पर जोर दिया। 1974 में विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा (IEDC) कार्यक्रम ने एकीकरण को और बढ़ावा दिया। भारत ने समावेशी शिक्षा की दिशा में प्रगति की है, जिसमें विकलांग बच्चों सहित सभी बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से नीतियां और कार्यक्रम हैं। हालाँकि, बेहतर शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता और गरीबी और कलंक से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने सहित चुनौतियाँ बनी हुई हैं। बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम, 2009, विकलांगों सहित 6-14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा को अनिवार्य बनाता है। RPWD Act 2016 के आने के बाद दिव्यगो की स्थिति में सुधार आया है

पश्चिमी देशों में प्रारंभिक शिक्षा धर्मार्थ संस्थानों और अलग-अलग विशेष स्कूलों में दि जाती थी। 1975 में अमेरिका में सभी विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा अधिनियम (PL 94-142) शामिल है, जिसने विकलांग सभी छात्रों के लिए मुफ्त उचित सार्वजनिक शिक्षा को अनिवार्य बना दिया। विकलांग

व्यक्तियों के लिए शिक्षा अधिनियम (IDEA) ने इन सुरक्षाओं को बढ़ाया। वर्तमान में कई पश्चिमी देशों ने मुख्यधारा की कक्षाओं के भीतर व्यक्तिगत सहायता और समायोजन प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए समावेशी शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। अमेरिका में IDEA जैसे कानूनी ढाँचे यह सुनिश्चित करते हैं कि विकलांग छात्रों को उचित शैक्षिक सेवाओं और सुविधाओं तक पहुँच प्राप्त हो।अंतरराष्ट्रीय फैसलों ने भी दिव्यांग बच्चों की शिक्षा को प्रभावित किया जैसे सलामंका का स्टेटमेंट, यूएनसीआरपीडी(UNCRPD) इन्होंने पूरी दुनिया में विशेष बच्चों की शिक्षा की विकास यात्रा को काफी सुगम्य बनाया भारत और पश्चिम दोनों में, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों का विकास सीमित, अक्सर अलग-थलग, प्रणालियों से विकसित होकर अधिक समावेशी और अधिकार-आधारित दृष्टिकोण में बदल गया है। दोनों क्षेत्रों में शुरुआती पहलों में अक्सर धर्मार्थ संगठन और सरकार द्वारा वित्तपोषित विशेष स्कूल शामिल होते थे, जबकि हाल के दशकों में मुख्यधारा और समावेशी शिक्षा की ओर धीरे-धीरे बदलाव हुआ है। ये यात्रा यूनिवर्सल डिजाईन फॉर लर्निंग तक आ पहुची है

2.6 शब्दावली:

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे - दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी विकलांगता वाला व्यक्ति, जो बाधाओं के साथ बातचीत में, दूसरों के साथ समान रूप से समाज में उसकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डालता है।

प्रारंभिक हस्तक्षेप- प्रारंभिक हस्तक्षेप का तात्पर्य शिशुओं और छोटे बच्चों के लिए विशेष सहायता और सेवाओं की एक श्रृंखला से है जो विकास संबंधी देरी या विकलांगता के जोखिम में हैं ये आम तौर पर जन्म से लेकर बच्चे के पाँच साल का होने तक प्रदान की जाती हैं।

न्यूरोडाइवर्सिटी- न्यूरोडाइवर्सिटी का मतलब है लोगों के मस्तिष्क के काम करने और व्यवहार करने के तरीके में प्राकृतिक भिन्नता। न्यूरोडाइवर्सिटी में ऑटिज्म, एडीएचडी, डिस्लेक्सिया और अन्य सहित न्यूरोलॉजिकल स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

2.7 स्वमूल्याकन हेतु प्रश्नों के उत्तर :

1-अमृतसर

2- 2016

3- सलामानका स्पेन में

4- 2006

2.8- Reference:

https://www.voice4ability.com/blog/historical-development-in-the-field-of-disability-8.html

डॉ.आर. ए. जोसेफ विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास समाकलन पब्लिशर्स वाराणसी

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1- भारतीय संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं विकास का वर्णन किजिए

2- 20वीं सदी और 21वीं सदी के दौरान पश्चिमी देशों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विकास का तुलनात्मक वर्णन किजिए

इकाई 3 नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

इकाई संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

3.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

3.5 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016

3.6 शिक्षा एवं दिव्यांगजन अधिकार

3.7 नई शिक्षा नीति2020 और दिव्यांगजन अधिकार

3.8 नई शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

3.8.1 चुनौतियाँ और विचार

3.9 सारांश

3.10 शब्दावली

3.11 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

3.12 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.13 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना:

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP) को शैक्षिक सुधार में एक नए युग के रूप में सराहा गया है। यह नीति विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों (सीडबल्यूएसएन) या दिव्यांग बच्चों को किसी भी अन्यबच्चे के समान गुर्वत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करने के लिए सक्षम तंत्र बनाने केमहत्व को समझती है। दिव्यांग बच्चे शायद ही कभी प्राथमिक विद्यालय से आगे बढ़ते हैं, और केवल 9% ही माध्यमिक शिक्षा पूरी करते हैं। लगभग 45% विकलांग लोग निरक्षर हैं और 3 से 35 वर्ष की आयु के बीच केवल 62.9% दिव्यांग लोग कभी नियमित स्कूल गए हैं। विशिष्ट विकलांगता श्रेणियाँ और लिंग असमान रूप से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, ऑटिज्म और सेरेब्रल पाल्सी वाले बच्चों और विकलांग लड़कियों के स्कूलों में दाखिला लेने की संभावना सबसे कम है। विकलांगता से प्रभावित बच्चे की प्री-स्कूल और प्राथमिक शिक्षा तक पहुँच बाधित होने की अधिक संभावना है। 40% से कम स्कूल भवनों में रैंप हैं हालाँकि NEP का मुख्य केंद्र तकनीक है लेकिन देश भर में केवल 59% स्कूलों में बिजली की पहुँच है। एनईपी का दावा है कि दिव्यांग बच्चों को शिक्षा प्रणाली में समान भागीदारी के अवसर मिलेंगे। समावेशी शिक्षा के लिए एनईपी 2016 के दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (RPWD) के प्रावधानों को मान्यता देता है, जिसमें शिक्षा को एक ऐसी प्रणाली के रूप में परिभाषित किया गया है जहाँ विकलांग और बिना विकलांग छात्र एक साथ सीखते हैं। इन सिफारिशों में स्कूलों में गैर-भेदभाव, सुलभ बुनियादी ढाँचा, उचित सुविधाएँ, व्यक्तिगत सहायता, शिक्षण में ब्रेल और भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग के अलावा निगरानी शामिल हैं। नीति में क्रॉस-विकलांगता प्रशिक्षण के साथ विशेष शिक्षकों की भर्ती के प्रावधान हैं और शिक्षक शिक्षा के भीतर विकलांगता जागरूकता को शामिल किया गया है।

3.2 उद्देश्य:

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

• नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को परिभाषित कर सकेंगे।

• नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विकास को जान पाएंगे।

• नई शिक्षा नीति में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रावधान को जान पाएंगे

3.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (Children with special needs):

CRPD(Convention on the Rights of Persons with Disabilities) के अनुसार, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में "वे बच्चे शामिल हैं जिनमें दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या

संवेदी अक्षमता है जो विभिन्न बाधाओं के साथ मिलकर समाज में समान आधार पर उनकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डाल सकती है"। विकलांग बच्चे अत्यधिक विविध जनसंख्या समूह हैं। इनमें वे बच्चे शामिल हैं जो किसी आनुवंशिक स्थिति के साथ पैदा हुए थे जो उनके शारीरिक, मानसिक या सामाजिक विकास को प्रभावित करती है; वे बच्चे जिन्हें कोई गंभीर चोट, पोषण संबंधी कमी या संक्रमण हुआ जिसके परिणामस्वरूप दीर्घकालिक कार्यात्मक परिणाम हुए; या वे जो पर्यावरणीय विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आए जिसके परिणामस्वरूप विकास में देरी हुई या सीखने की अक्षमता हुई। विकलांग बच्चों में वे बच्चे भी शामिल हैं जिन्होंने तनावपूर्ण जीवन की घटनाओं के परिणामस्वरूप चिंता या अवसाद विकसित किया।

मनोविज्ञान की APA डिक्शनरी के अनुसार विकलांग बच्चे , जिन्हें विशेष शिक्षा, विशेष स्वास्थ्य सेवा या अन्य कार्यात्मक आवश्यकताओं या सेवाओं की आवश्यकता होती है। ऐसे बच्चों में विकासात्मक, सीखने, बौद्धिक, शारीरिक, संवेदी, भावनात्मक और/या व्यवहार संबंधी विकलांगताएँ हो सकती हैं। विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 की धारा 2 के खंड (S) में परिभाषित विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का अर्थ है 'दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी विकलांगता वाला व्यक्ति, जो बाधाओं के साथ बातचीत में, दूसरों के साथ समान रूप से समाज में उसकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डालता है।'

3.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy 2020):

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 एक व्यापक शिक्षा नीति है जिसका उद्देश्य समग्र, लचीली और बहु-विषयक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा प्रणाली को बदलना है। यह पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई) 1986 की जगह लेती है और 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है। NEP 2020 शिक्षा के प्रति एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। "समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना" यही वह लक्ष्य है जिसे NEP 2020 ने 2030 तक हासिल करने का लक्ष्य रखा है। यह आदर्शवादी लक्ष्य भारत के लगातार निराशाजनक सीखने के परिणामों के बिल्कुल विपरीत है। इसके परिणामस्वरूप समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा के मुद्दे पर बहुत ध्यान दिया गया है। यूनेस्को ने अपने समावेशन संबंधी दिशा-निर्देशों में "समावेश" को "एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है जो प्रत्येक छात्र की अपनी विशिष्ट भिन्नताओं के साथ उपस्थिति, भागीदारी और उपलब्धि सुनिश्चित करने के लिए शैक्षिक बाधाओं की पहचान और हटाने पर ध्यान केंद्रित करती है"। एनईपी 2020 पहुँच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है। एनईपी 2020 का उद्देश्य सभी बच्चों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, और समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने पर

ध्यान केंद्रित किया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 में "विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा तक बाधा-मुक्त पहुँच" को शामिल करने को मंज़ूरी दी गई है।

3.5 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 (RPWD Act 2016):

यह एक व्यापक कानून है जो 1995 के विकलांग व्यक्तियों के अधिनियम की जगह लेता है। यह 19 अप्रैल, 2017 को लागू हुआ। इस अधिनियम का उद्देश्य दिव्यांग व्यक्तियों के लिए समान अधिकार, सम्मान और समाज में पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना है। यह विकलांगता की परिभाषा का विस्तार करता है और शिक्षा, रोजगार और पहुंच सहित विकलांगता के विभिन्न पहलुओं के लिए विशिष्ट प्रावधान प्रदान करता है। अधिनियम द्वारा चिन्हित विकलांगताओं की संख्या 7 से बढ़ाकर 21 कर दी गई है, जिसमें एसिड अटैक पीड़ित, रक्त संबंधी रोग आदि शामिल हैं।अधिनियम में यह प्रावधान किया गया है कि उपयुक्त सरकारें यह सुनिश्चित करेंगी कि विकलांग व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के, अन्य लोगों के समान अपने अधिकारों का आनंद उठा सकें यह अधिनियम मानक विकलांगता वाले व्यक्तियों के लिए उच्च शिक्षा (5% से कम नहीं) और सरकारी नौकरियों (4% से कम नहीं) में आरक्षण का प्रावधान करता है। इसमें यह अनिवार्य किया गया है कि शैक्षणिक संस्थान, चाहे वे सरकार द्वारा वित्तपोषित हों या मान्यता प्राप्त, विकलांग बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान करें यह अधिनियम बाधा-मुक्त वातावरण बनाने पर जोर देता है तथा सार्वजनिक भवनों और बुनियादी ढांचे में सुगमता सुनिश्चित करता है।एनईपी 2020 ने 2016 के आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम को पूर्णत अपनाया है 2016 के आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम के अनुसार, गंभीर या बहु विकलांगता वाले बच्चे नियमित या विशेष स्कूलों में जा सकेंगे और उनके पुनर्वास और शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप संसाधन केंद्र स्थापित किए जाएंगे। एनईपी 2020 का लक्ष्य कक्षाओं में अधिक संसाधन और उच्च शिक्षित प्रशिक्षक प्रदान करना है ताकि वे विकलांग बच्चों की बेहतर सेवा प्रदान कर सकें।

3.6 शिक्षा एवं दिव्यांगजन अधिकार (Education and Disability Rights):

एनईपी में दिव्यांगता अधिकारों की सबसे बड़ी जीत विकलांगता पर 2016 के कानून यानी दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 को मान्यता देना है, जिसमें कानून को लागू करने का एक मजबूत वचन दिया गया है। अधिनियम का अध्याय III शिक्षा से संबंधित है और विशेष शिक्षा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीकों और साधनों की रूपरेखा तैयार करता है। अधिनियम में छह से अठारह वर्ष की आयु के बीच बेंचमार्क विकलांगता वाले बच्चे के लिए मुफ्त शिक्षा का प्रावधान है। इसके अलावा, यह बेंचमार्क विकलांगता वाले छात्रों के लिए सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों में कम से कम 5% सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है। प्रवेश के लिए आयु में पाँच वर्ष की छूट भी प्रदान की गई है।

3.7 नई शिक्षा नीति 2020 और दिव्यांगजन अधिकार (NEP, 2020 and Disability Rights):

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 समावेशी शिक्षा पर जोर देती है और विकलांग बच्चों के अधिकारों को प्राथमिकता देती है, जिसका उद्देश्य उन्हें शिक्षा प्रणाली में समान अवसर और सहायता प्रदान करना है। यह विकलांगों सहित सभी शिक्षार्थियों के लिए समान शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए संसाधन आवंटन, शिक्षक प्रशिक्षण, सहायक तकनीक और लचीले पाठ्यक्रम संरचनाओं का आह्वान करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में सांकेतिक भाषा के मानकीकरण का प्रावधान किया गया है, क्योंकि पहले सांकेतिक भाषा में कई भिन्नताएँ थीं और एकरूपता का अभाव था। इसके अलावा, भाषा मानकीकरण में शब्दकोश और व्याकरण का प्रकाशन और व्याकरण का आधुनिकीकरण भी शामिल है। हालाँकि, सांकेतिक भाषा के मानकीकरण का मतलब अब यह होगा कि केवल एक संकेत ही किसी विशेष शब्द के अनुरूप होगा। एनईपी के तहत आरसीआई को अब शिक्षकों के लिए पाठ्यक्रम बनाने में एनसीटीई के साथ सहयोग करना होगा। इसी तरह, एनसीईआरटी को छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने से पहले दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग से परामर्श करने के लिए कहा गया है ताकि इसकी सिफारिशों को भी लागू किया जा सके। इसके अलावा एनईपी 2020 के तहत अब यह अनिवार्य कर दिया गया है कि बी.एड. कार्यक्रम शिक्षकों को दिव्यांग बच्चों या विशेष रुचियों और प्रतिभाओं वाले बच्चों को पढ़ाने का प्रशिक्षण भी देंगे। यदि शिक्षक विशेष शिक्षा में विशेष रुचि दिखाते हैंतो बी.एड. के बाद एक छोटे प्रमाणन पाठ्यक्रम का प्रावधान भी किया गया है।

3.8 नई शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे:

- **समतामूलक और समावेशी शिक्षा**

  सभी के लिए अधिगम एनईपी 2020 के भाग एक में कहा गया की विशिष्ट दिव्यांगता वाले बच्चों (सीखने से संबंधित अक्षमताओं के साथ) को कैसे पढ़ाया जाए इससे संबंधित जागरूकता और ज्ञान को सभी शिक्षक प्रशिक्षकों का अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए ईसीसीई में दिव्यांग बच्चों को शामिल करना और उनके समान भागीदारी सुनिश्चित करना भी इस नीति की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी दिव्यांग बच्चों को प्रारंभिक स्तर से उच्च स्तर तक की शिक्षा प्रक्रियाओं में सम्मिलित होने के लिए सक्षम बनाया जाएगा दिव्यांगता अधिकार अधिनियम 2016 (आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम) समावेशी शिक्षा को ऐसी व्यवस्था के रूप में परिभाषित करता है जहां सामान्य व दिव्यांग सभी बच्चे एक साथ सीखते हैं तथा शिक्षण व सिखने की प्रणाली को इस प्रकार अनुकूलित किया जाए कि वह प्रत्येक बच्चे की सभी सामान्य व विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम हो यह नीति आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम 2016 के सभी

प्रावधानों के साथ पूरी तरह से सुसंगत है तथा स्कूल शिक्षा के संबंध में उसके द्वारा प्रस्तावित सभी सिफारिश को पूरा करती है राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा तैयार करते समय एनसीईआरटी द्वारा दिव्यांगजन विभाग के राष्ट्रीय संस्थानों जैसे विशेषज्ञ विशेषज्ञ संस्थानों के साथ परामर्श सुनिश्चित किया जाएगा आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम 2016 के अनुसार मूल दिव्यंगता वाले बच्चों के पास नियमित या विशेष स्कूल शिक्षा का विकल्प होगा

1. बाधा-मुक्त पहुँच: नीति बाधा-मुक्त स्कूलों और स्कूल परिसरों के निर्माण को बढ़ावा देती है, जिसमें रैंप, विकलांगता-अनुकूल शौचालय और सहायक प्रौद्योगिकियाँ शामिल हैं
2. संसाधन केंद्र: स्कूलों और स्कूल परिसरों को विकलांग बच्चों के एकीकरण के लिए संसाधन प्रदान किए जाएँगे, जिसमें क्रॉस-विकलांगता प्रशिक्षण वाले विशेष शिक्षक और गंभीर या एकाधिक विकलांगता वाले बच्चों के लिए संसाधन केंद्र शामिल हैं।
3. सुलभ मूल्यांकन: PARAKH, एक प्रस्तावित राष्ट्रीय मूल्यांकन ढाँचा, सीखने की अक्षमता वाले बच्चों के लिए सुलभ मूल्यांकन दिशा-निर्देश सुनिश्चित करेगा।
4. व्यक्तिगत सहायता और समायोजन(अनुकूलित समायोजन)स्कूलों को विकलांग छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित समायोजन और सहायता प्रणाली प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि कक्षा में उनकी पूर्ण भागीदारी और एकीकरण सुनिश्चित हो सके।
5. विशेष शिक्षक: नीति विशेष सहायता प्रदान करने के लिए क्रॉस-विकलांगता प्रशिक्षण वाले विशेष शिक्षकों की भर्ती पर जोर देती है।
6. परामर्श और मार्गदर्शन: नीति दिव्यांगजन (विकलांग व्यक्ति) छात्रों को उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सलाह और परामर्श प्रदान करने के महत्व को पहचानती है।
7. पाठ्यक्रम और मूल्यांकन: पाठ्यक्रम में समावेश: नीति विकलांग बच्चों को पाठ्यक्रम और मूल्यांकन में शामिल करने की वकालत करती है।
8. अनिवार्य शिक्षा: शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009, विकलांग बच्चों सहित 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा को अनिवार्य बनाता है।
9. प्रारंभिक पहचान और हस्तक्षेप: नीति बच्चों में विशिष्ट सीखने की अक्षमताओं का प्रारंभिक पता लगाने और उन्हें दूर करने के लिए उपयुक्त शैक्षणिक और अन्य उपायों के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करती है।
10. उच्च शिक्षा और रोजगार: उच्च शिक्षा में आरक्षण: नीति बेंचमार्क विकलांगता वाले छात्रों के लिए सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों में कम से कम 5% सीटों के आरक्षण का प्रावधान करती है।

11. आत्मनिर्भरता और रोजगार: नीति का उद्देश्य दिव्यांगजन छात्रों को आत्मनिर्भरता और रोजगार प्राप्त करने में सहायता करना है।

- **प्रभावी उपायों की पहचान**

  उन विषयों पर भी विचार करना महत्वपूर्ण है जो पहचानते हैं कि कौन से कदम विशेष रूप से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) या दिव्यांगों के लिए सफल हैं। उदाहरण के लिए, विकलांग छात्रों के लिए, व्यक्तिगत प्रशिक्षक और ट्यूटर, सहकर्मी ट्यूटरिंग, ओपन लर्निंग, उचित बुनियादी ढाँचा और पहुँच की गारंटी के लिए स्वीकार्य प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप बहुत सफल हो सकते

- समावेशन और समान भागीदारी

  दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार (RPWD) अधिनियम 2016 द्वारा समावेशी शिक्षा को "शिक्षा की एक प्रणाली" के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें विकलांग और बिना विकलांग छात्र एक साथ सीखते हैं और शिक्षण और सीखने की प्रणाली को विभिन्न प्रकार के विकलांग छात्रों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयुक्त रूप से अनुकूलित किया जाता है। NEP 2020 स्कूली शिक्षा पर RPWD अधिनियम 2016 की सिफारिशों के अनुरूप है, जो प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ECCE) और स्कूली शिक्षा प्रणाली में विकलांग बच्चों के समावेशन और समान भागीदारी को प्राथमिकता देता है। यह फाउंडेशनल स्टेज से लेकर उच्च शिक्षा तक पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करता है, जिससे सभी दिव्यांग बच्चों के लिए समान अवसर सुनिश्चित होते हैं।

- शिक्षण कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण और संवेदनशीलता

  नीति शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करती है ताकि कक्षाओं की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में सीखने की अक्षमताओं सहित विशिष्ट विकलांगता वाले बच्चों को पढ़ाने के बारे में व्यापक निर्देश शामिल होंगे,ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षकों के पास आवश्यक जागरूकता और समझ है। स्कूलों में एक सहानुभूतिपूर्ण और सहायक वातावरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता भी संवेदनशीलता कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के माध्यम से सामने आती है।

- बुनियादी ढांचा और पहुंच

  एनईपी 2020 का उद्देश्य समावेशी शैक्षिक सुविधाओं की स्थापना को बढ़ावा देना है, जिसमें रैंप, विकलांगों के अनुकूल शौचालय और सहायक तकनीकें शामिल हैं। विद्यालय और विद्यालय परिसर विकलांग छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित आवास और सहायता प्रणाली प्रदान करने का प्रयास करेंगे, जिससे कक्षा में उनकी

पूर्ण भागीदारी होगी। इन गतिविधियों का उद्देश्य शारीरिक बाधाओं को दूर करना और विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चों के लिए सहज एकीकरण को बढ़ावा देना है।

- शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप

  रणनीति उन बच्चों की पहचान करने और उनके साथ हस्तक्षेप करने के महत्व को सामने रखती है, जिन्हें कम उम्र में ही कठिनाइयाँ होती हैं। प्रारंभिक सहायता से अलग-अलग स्तर की क्षमता वाले व्यक्तियों के लिए शैक्षिक परिणामों में बहुत सुधार हो सकता है। नीति शिक्षकों को सीखने की कठिनाइयों का तुरंत पता लगाने और उन्हें संबोधित करने के लिए लक्षित रणनीतियों को विकसित करने के लिए सहायता प्रदान करने पर केंद्रित है।

- विद्यालय/विद्यालय परिसरों को संसाधन आवंटन

  स्कूलों और स्कूल परिसरों को दिव्यांग बच्चों को शिक्षण और सीखने के माहौल में शामिल करने की सुविधा के लिए संसाधन प्राप्त होंगे। क्रॉस-डिसेबिलिटी में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विशेष शिक्षकों को नियुक्त करने की योजना बनाई गई है, और संसाधन केंद्र आवश्यकतानुसार बनाए जाएंगे, खासकर उन बच्चों के लिए जो गंभीर या कई विकलांगताओं से ग्रसित हैं। दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार (RPWD) अधिनियम का पालन सभी विकलांग बच्चों के लिए समान पहुँच की गारंटी देने के लिए किया जाएगा।

- शिक्षण-अधिगम में प्रौद्योगिकी का एकीकरण

  एनईपी 2020 में अलग-अलग क्षमता वाले विद्यार्थियों की सहायता के साधन के रूप में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर महत्वपूर्ण जोर दिया गया है। डिजिटल उपकरणों और सहायक प्रौद्योगिकियों के उपयोग के माध्यम से व्यक्तिगत शैक्षिक अनुभव और बढ़ी हुई पहुँच दोनों को प्राप्त किया जा सकता है। एनईपी 2020 विकलांग बच्चों को सहायक उपकरण, प्रौद्योगिकी-आधारित उपकरण और भाषा-उपयुक्त शिक्षण सामग्री प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिससे कक्षाओं में उनका एकीकरण आसान हो सके और शिक्षकों और साथियों के साथ जुड़ाव हो सके। इसे कला, खेल और व्यावसायिक शिक्षा सहित सभी स्कूली गतिविधियों पर लागू किया जाएगा। विकलांग बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा और अन्य बुनियादी विषयों को पढ़ाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले मॉड्यूल विकसित किए जाएंगे।

- होम स्कूलिंग के अवसर

  जिन बच्चों में कई तरह की दिव्यांगता है, उन्हें RPWD अधिनियम 2016 के अनुसार सामान्य स्कूल या विशेष स्कूल में जाने का विकल्प दिया जाना चाहिए। संसाधन केंद्र और विशेष शिक्षक इन विद्यार्थियों की शैक्षिक और पुनर्वास संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने

में माता-पिता को सहायता प्रदान करते हैं, जिससे उच्च गुणवत्ता वाले होम-स्कूलिंग वातावरण की प्राप्ति में सुविधा होती है। गंभीर और गंभीर विकलांगता वाले बच्चे जो स्कूल नहीं जा पाते हैं, उनके पास घर पर अपनी शिक्षा प्राप्त करने का विकल्प बना रहता है। यह ज़रूरी है कि घर पर अपनी शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों के साथ सामान्य शिक्षा प्रणाली में नामांकित अन्य बच्चों के समान व्यवहार किया जाए। घर-आधारित स्कूली शिक्षा की प्रभावकारिता और दक्षता निर्धारित करने के लिए मूल्यांकन किए जाएँगे।

- मूल्यांकन प्रणाली में सुधार

  NEP 2020 का उद्देश्य सीखने की अक्षमता वाले सभी छात्रों के लिए उचित मूल्यांकन और प्रमाणन के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करना है। प्रस्तावित राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र, परख, आधारभूत शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक मूल्यांकन के लिए दिशा-निर्देश और उपकरण विकसित करेगा, जिससे सीखने संबंधी अक्षमता वाले सभी छात्रों के लिए समान पहुँच और अवसर सुनिश्चित होंगे।

- शिक्षा में माता-पिता और समुदाय की भागीदारी

  एनईपी 2020 पहल अलग-अलग योग्यता वाले विद्यार्थियों की शिक्षा में माता-पिता और समुदाय के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। सहयोग में किए गए प्रयासों को एक सहायक शिक्षण वातावरण प्रदान करने के लिए आवश्यक माना जाता है।

- शिक्षा प्रणाली में हितधारकों का संवेदीकरण

  स्कूल शिक्षा प्रणाली यह सुनिश्चित करेगी कि शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, प्रशासकों, परामर्शदाताओं और छात्रों सहित सभी हितधारकों को समावेशिता, समानता, सम्मान, गरिमा और गोपनीयता के महत्व के बारे में पता हो। स्कूल शिक्षा प्रणाली एक ऐसी शैक्षिक संस्कृति को बढ़ावा देगी जो छात्रों को सशक्त बनाती है और समाज को कमज़ोर नागरिकों के प्रति ज़िम्मेदार होने में सक्षम बनाती है। उत्कृष्ट रोल मॉडल प्रदान करने के लिए सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों से शिक्षकों की भर्ती की जाएगी। नई स्कूल संस्कृति के साथ समावेशी पाठ्यक्रम में भी बदलाव किए जाएंगे, जिसमें सम्मान, सहानुभूति, सहिष्णुता, मानवाधिकार, लैंगिक समानता, अहिंसा, वैश्विक नागरिकता, समावेश और समानता जैसे मानवीय मूल्यों पर सामग्री शामिल होगी। इससे छात्रों को सशक्त व्यक्ति बनने और एक जिम्मेदार समाज में योगदान देने में मदद मिलेगी।

- उच्चतर शिक्षा में समता और समावेश

  एनईपी 2020 में कहा गया है कि विद्यालय शिक्षा और उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में समता समानता और समावेश से जुड़ा दृष्टिकोण एक समान होना चाहिए और इसके साथ ही साथ

स्थाई सुधार सुनिश्चित करने के लिए इससे जुड़े सभी चरणों में निरंतरता होनी चाहिए अतः उच्चतर शिक्षा में क्षमता समानता और समावेश के लक्ष्य को पूरा करने के लिए आवश्यक नीति के पहले को स्कूल शिक्षा के लिए भी देखा जाना चाहिए प्रवेश प्रक्रियाओं को अधिक समावेशी बनाना पाठ्यक्रम को अधिक समावेशी बनाना यह सुनिश्चित करना कि सभी संबंधित इमारतें और अन्य बुनियादी सुविधाएं व्हीलचेयर सुलभ और दिव्यांगजनों के अनुकूल हो

3.8.1 चुनौतियाँ और विचार:

1. कार्यान्वयन और संसाधन आवंटन: नीति का सफल कार्यान्वयन पर्याप्त संसाधन आवंटन, निरंतर निगरानी और मूल्यांकन पर निर्भर करता है।
2. सभी विकलांगों के लिए सुलभ मूल्यांकन: नीति का ध्यान सीखने की अक्षमताओं पर है, जिससे बौद्धिक और अन्य संज्ञानात्मक विकलांग बच्चों को हाशिए पर रखा जा सकता है।
3. सहयोग और हितधारक भागीदारी: स्कूलों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदायों सहित शैक्षिक हितधारकों के बीच निरंतर सहयोग समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।
4. विशेष शिक्षक –दिव्यांगताशब्द विषम है, जिसमें दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित या अन्य शारीरिक या संज्ञानात्मक विकलांगता सहित विभिन्न विशेष आवश्यकताओं वाले लोग शामिल हैं। नीति में यह कहना कि विशेष शिक्षकों को उनके बी.एड. पाठ्यक्रम में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को पढ़ाने और प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा, केवल व्यापक रूप से अस्पष्ट है क्योंकि शिक्षकों को आई.एस.एल. और ब्रेल पढ़ाने और बौद्धिक विकलांग छात्रों को पढ़ाने के तरीकों में एक ही समय में पेशेवर होने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षकों को विकलांग छात्रों के प्रति अपने प्रशिक्षण में सबसे पहले संवेदनशील बनाना और फिर उन्हें केवल 4 वर्षों में ऐसे छात्रों को प्रशिक्षित करने के तरीके के बारे में शिक्षित करना एक कठिन कार्य होगा। शिक्षण पाठ्यक्रमों में बदलाव करने के बजाय, NEP, 2020 में कम से कम ISL और ब्रेल को प्रत्येक छात्र के लिए उनकी प्राथमिक शिक्षा से ही अनिवार्य विषय के रूप में शामिल करने पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता थाएनईपी, 2020 ने निश्चित रूप से अधिक शिक्षकों को विशेष शिक्षक बनने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश की है और यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि इसमें प्रावधान है कि यदि सेवारत शिक्षक विकलांग छात्रों को विशेषज्ञता हासिल करना और पढ़ाना चाहते हैं, तो उन्हें 1 वर्ष का सर्टिफिकेट कोर्स पूरा करके ऐसा करने का मौका मिलेगा। देश में विकलांग छात्रों की बेहतरी के लिए काम करने वाली सरकार की लोगों द्वारा पहचाने जाने की उम्मीदों के विपरीत, हताश करने वाले कदम की वास्तविकता यह है कि एक व्यक्ति को विकलांग लोगों को पढ़ाने और प्रशिक्षित करने के लिए सिर्फ एक साल में पूरी तरह से प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता है।

स्कूलों में सहयोग और संसाधनों को साझा करने के लिए क्लस्टर स्कूलों की स्थापना की परिकल्पना की गई है जो विकलांग छात्रों के लिए सामान्य से बेहतर सुविधाएं प्रदान करेंगे। एनईपी केवल राज्य सरकारों पर ऐसा करने का बोझ डालती है और उन्हें दिव्यांग छात्रों की शिक्षा के लिए स्कूलों में सहयोग सुनिश्चित करने की चुनौती को हल करने के लिए 2025 तक "अभिनव" तंत्र अपनाने का काम सौंपती है। अगर समावेशी स्कूल एनईपी का उद्देश्य हैं, तो इसे पूरा करना एक मुश्किल कार्य हो सकता है।

स्वमूल्याकन हेतु प्रश्न :

1- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP2020) की घोषणा कब की गई?

2- दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 (RPWD Act-2016) कब लागू हुआ?

3.9 सारांश:

जुलाई 2020 में भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में नवीनतम प्रावधान दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा तक बाधा-मुक्त पहुँच को प्रोत्साहित और बढ़ावा देता है। नई शिक्षा नीति उन बहुप्रतीक्षित नए सुधारों का वर्णन करती है जिनकी भारत को तलाश थी। ये अनुकूलन दिव्यांग बच्चों और कम आय वाले परिवारों के बच्चों के लिए विशेष विचार के साथ तैयार किए गए हैं। ये संशोधन दिव्यांग बच्चों को बाधा-मुक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम-2016 को ध्यान में रखते हुए किए जा रहे हैं। एनईपी के अनुसार, दिव्यांग बच्चे शिक्षा प्रणाली के सभी पहलुओं में समान रूप से भाग ले सकेंगे।

एनईपी का अध्याय VI समतामूलक और "समावेशी" शिक्षा पर केंद्रित है। यह मुख्य रूप से समावेशी स्कूलों से युक्त समावेशी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर जोर देता है, जहाँ विकलांग और बिना विकलांग छात्र एक साथ सीखते हैं और जहाँ विकलांग छात्रों की ज़रूरतों पर उचित ध्यान दिया जाता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, एनईपी एक बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना निर्धारित करता है जिसमें देश भर के सभी स्कूलों में विकलांगता-अनुकूल बुनियादी ढाँचा और शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराना शामिल है नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का लक्ष्य प्री-किंडरगार्टन से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक सभी के लिए शिक्षा में समान पहुंच और भागीदारी सुनिश्चित करना है। नीति सुलभ बुनियादी ढांचे और सहायक प्रौद्योगिकियों सहित बाधा मुक्त वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करती है साथ ही विविध शिक्षण आवश्यकताओं के लिए व्यक्तिगत सहायता और समायोजन पर भी जोर देती है।

3.10 शब्दावली:

नई शिक्षा नीति 2020- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत में शिक्षा के लिए एक व्यापक रूपरेखा है, जिसकी घोषणा 29 जुलाई, 2020 को शिक्षा मंत्रालय द्वारा की गई। यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है, जिसने 34 साल पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई) 1986 की जगह ली है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे- वे बच्चे शामिल हैं जिनमें दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी अक्षमता है जो विभिन्न बाधाओं के साथ मिलकर समाज में समान आधार पर उनकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डाल सकती है"

3.11 स्वमूल्याकन हेतु प्रश्नों के उत्तर:

1- 29 जुलाई 2020

2- 19 अप्रैल, 2017

3.12 सन्दर्भ:

https://www.researchgate.net/publication/358417851_India's_New_Education_Policy_NEP_2020_Creating_Children_with_Disability

https://www.ukfiet.org//2020examining-disability-inclusion-in-indias-new-national-education-policy/

https://www.humanitiesjournal.net/archives//2024vol6issue/1PartB/.235-2-2-6pdf

https://www.rehabilitationjournals.com/special-education-journal/article/-2-1-2/11.213pdf

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

3.13 निबन्धात्मक प्रश्न:

1-दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016(RPWD Act 2016) को नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में परिभाषित कीजिएI

2-विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में नई शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) के दृष्टिकोण स्पष्ट किजिएI

इकाई 4 CWSN के लिए शैक्षिक प्रावधान

इकाई संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 अंतरराष्ट्रीय नीतियाँ और कानून
4.3.1 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्रसंघ का घोषणा पत्र
4.3.2 बच्चों के अधिकारों पर अधिवेशन
4.3.3 सभी के लिए शिक्षा पर घोषणा पत्र
4.3.4 सालामांका स्टेटमेंट और विशेष शिक्षण पर कार्ययोजना
4.3.5 बिवाको मिलेनियम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन
4.3.6 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ अधिवेशन
4.4 राष्ट्रीय नीतियाँ और कानून
4.4.1 संवैधानिक प्रावधान
4.4.2 मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम
4.4.3 भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम
4.4.4 दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अधिकार अधिनियम 1995
4.4.5 राष्ट्रीय न्यास अधिनियम
4.4.6 दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति
4.4.7 शिक्षा का अधिकार अधिनियम
4.4.8 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016
4.5 सारांश
4.6 शब्दावली
4.7 स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
4.8 संदर्भ ग्रंथ सूची
4.9 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

CWSN अर्थात (Child with special needs) (विशेष आवश्यकता वाले बच्चे) के लिए शैक्षिक प्रावधानों में समावेशी शिक्षा और विशेष शिक्षा शामिल है। समावेशी शिक्षा का मकसद, सभी बच्चों को एक ही स्कूल में शिक्षा देना है। वहीं, विशेष शिक्षा का मकसद, दिव्यांग बच्चों को सीखने में मदद करना है विशेष शिक्षा दिव्यांग बच्चों को सीखने में मदद

करने पर केंद्रित है। भारत में समावेशी शिक्षा के लिए संवैधानिक प्रावधान हैं। शिक्षा सभी बच्चों का अधिकार है, यह शिक्षा घर में परिवार के साथ शुरू होती है, और इसमें औपचारिक, अनौपचारिक और सभी प्रकार की समुदाय-आधारित शिक्षा पहल शामिल हैं। अनुच्छेद 14, अनुच्छेद 21A, भारतीय संविधान का 86वाँ संवैधानिक संशोधन अधिनियम 2002 स्पष्ट करता है कि "सभी" में दिव्यांग बच्चे भी शामिल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), 2020 के "समान और समावेशी शिक्षा: सभी के लिए शिक्षा" अनुभाग में असमानताओं को दूर करने और उन लोगों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करके समान शैक्षिक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है, जिन्हें अब तक वंचित रखा गया था। इसे प्राप्त करने के लिए, विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों के मामले में, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्लूएसएन) के लाभ के लिए कई कानून और योजनाएँ बनाई गई हैं। स्कूल स्टाफ, सीडब्लूएसएन के माता-पिता आदि जैसे सभी हितधारकों को सीडब्लूएसएन के लिए लाभ उठाने के लिए इन प्रावधानों के बारे में जानकारी होनी आवश्यक है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

- अंतरराष्ट्रीय नीतियों एवं कानूनों को जान सकेंगे, जैसे-
- दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्रसंघ का घोषणा पत्र
- बच्चों के अधिकारों पर अधिवेशन
- सभी के लिए शिक्षा
- सालामांका स्टेटमेंट
- दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ अधिवेशन
- विभिन्न राष्ट्रीय नीतियों एवं कानूनों को जान सकेंगें जैसेः
- मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम
- भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम
- दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अधिनियम
- राष्ट्रीय न्यास अधिनियम
- दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति

4.3 अंतरराष्ट्रीय नीतियाँ और कानून

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा (CWSN) का उद्देश्य है कि सभी बच्चों को अपने साथियों के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सीखने की संभावनाओं का अधिकार मिले। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसा शिक्षण वातावरण बनाना है, जहां प्रत्येक

बच्चा किसी भी कठिनाई या विशेष आवश्यकता के बावजूद सराहना, सम्मान और अपनी संपूर्ण क्षमता तक पहुंचने में सक्षम महसूस करे। इसके लिए कई अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ एवं क़ानून बनाए गए हैं। भारत का निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए इन अधिकारों का आश्वासन देता है, तथा सीखने तक बाधा-मुक्त पहुंच के महत्व पर प्रकाश डालता है।

4.3.1 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ का घोषणा पत्र

दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 9 दिसम्बर 1975 को एक घोषणा पत्र जारी किया। यह घोषणा पत्र दिव्यांग व्यक्तियों के मानव अधिकारों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था। इस घोषणा पत्र की कुछ प्रमुख बाते निम्नलिखित हैं-

i. दिव्यांग व्यक्ति दूसरे सामान्य नागरिकों के समान ही सभी मूलभूत अधिकारों की पात्रता रखते हैं, चाहे उनकी दिव्यांगता का कारण, उसकी प्रकृति व उसकी बाधा या दिव्यांगता की गंभीरता कितनी भी हो।

ii. दिव्यांग व्यक्तियों को आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा के अधिकार के साथ ही सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार है। उन्हें अपनी क्षमताओं के अनुरूप नौकरी पाने व करने का अधिकार है।

iii. दिव्यांग व्यक्तियों को अपने परिवारों के साथ रहने का और सभी सामाजिक, रचनात्मक एवं मनोरंजनात्मक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इन अधिकारों को दिलाने की गारंटी के लिए दो महत्वपूर्ण कदम उठाए। पहला कदम था सन् 1983-92 के दशक को दिव्यांग व्यक्तियों के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ दशक घोषित करना तथा दूसरा कदम था सन् 1993-2002 के दशक को दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एशिया पेसिफिक दशक घोषित करना। एशिया पेसिफिक दशक को दोबारा से बढ़ाकर सन् 2003-2012 कर दिया गया था।

4.3.2 बच्चों के अधिकारों पर अधिवेशन

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 20 नवम्बर, 1989 को बच्चों के अधिकारों पर अधिवेशन घोषित किया। इस अधिवेशन की कुछ प्रमुख बातें निम्नलिखित हैं

i. इस अधिवेशन में शामिल अधिकारों को राज्य प्रत्येक बच्चे को बिना किसी भेदभाव के प्रदान करेगा।

ii. राज्य दिव्यांग बच्चे के अधिकारों को पहचान करते हुए उनके लिए विशेष देखभाल का इन्तेजाम करेगा।

iii. राज्य यह निश्चित करेगा कि मानसिक या शारीरिक दिव्यांग बच्चा संतोषजनक जीवन समाज में सक्रिय भागीदारी करते हुए जी सकेगा ।

इस अधिवेशन के अनुच्छेद 43 और 44 में कहा गया कि इस अधिवेशन में कहे गए दायित्व/कर्तव्य की राज्य द्वारा किए गए प्रगति का मूल्यांकन किया जाएगा तथा यह मूल्यांकन 'बच्चे के अधिकार पर कमेटी' द्वारा किया जाएगा।

4.3.3 सभी के लिए शिक्षा पर घोषणा पत्र

सन् 1990 ई. में जोमेटिन (थाईलैण्ड) में ''सभी के लिए शिक्षा पर विश्व सम्मेलन'' का आयोजन हुआ जिसमें 155 राष्ट्र के प्रतिनिधि एवं 150 गैर-सरकारी संस्थाओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य था शिक्षा को सर्वव्यापी बनाने के लिए तथा निरक्षरता हटाने के लिए उपायों पर विचार करना।

इस सम्मेलन का भारत सहित विश्व के अन्य देशों पर बहुत प्रभाव पड़ा तथा सभी के लिए शिक्षा में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा पर गंभीरता पूर्वक ध्यान दिया जाने लगा।

इस घोषणा पत्र में बुनियादी शिक्षा के छः मुख्य उद्देश्यों की पहचान की गई, जो निम्नलिखित हैं-

i. प्रारम्भिक बाल्यावास्था देख-रेख और विकासात्मक कार्यकलाप का विस्तार

ii. प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिक पहुँच और संपादन।

iii. अध्ययन उपलिब्ध में सुधार करना ताकि अध्ययन उपलिब्ध एक आवश्यक स्तर तक पहुँच सके।

iv. वयस्क निरक्षता के दर को कम करना।

v. बुनियादी शिक्षा के प्रावधानों तथा नवयुवक एवं वयस्क द्वारा अपेक्षित दूसरे आवश्यक कौशलों का विस्तार करना।

vi. व्यक्तिगत एवं परिवार के अच्छे जीवन जीने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशलों एवं मूल्यों के उपलब्धियों को बढ़ाना।

4.3.4 सालामांका स्टेटेमेंट और विशेष शिक्षण पर कार्ययोजना

सन् 1994 ई. में स्पेन के सालामांका शहर में ''विशेष आवश्यकता शिक्षण पर विश्व सम्मेलन'' का आयोजन यूनेस्को एवं स्पेन की सरकार ने मिलकर किया था। इस सम्मेलन में 92 देशों के सरकारी प्रतिनिधि एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भाग लिया था।यह कथन (स्टेटमेंट) सभी के लिए शिक्षा की प्रतिबद्धता से शुरू होता है।

इस सम्मेलन में मुख्य रूप से समावेशित शिक्षा की चर्चा हुई जो निम्नलिखित कथनों से रेखांकित किया गया-

- स्कूल में सभी बच्चों को समावेशित किया जाए, चाहे उनकी शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, वाचिक या अन्य दशाएँ कैसी भी हों।

- समावेशित दिशा-निर्देशन युक्त सामान्य स्कूल भेदभाव पूर्ण दृष्टिकोणों से निपटने के लिए सबसे प्रभावशाली माध्यम है। वे ऐसे समावेशित समाज की रचना कर सकें जो सबको अपना एवं सबके लिए शिक्षा का लक्ष्य भी पा सकें।

इस कथन में यूनेस्को, यूनीसेफ, यूएनडीपी एवं विश्व बैंक से अनुरोध किया गया है, कि वे समावेशित शिक्षा को बढ़ावा देने एवं विशेष आवश्यकता शिक्षण को शैक्षिक प्रोग्राम में सम्मिलित करने के लिए कार्य करें।

4.3.5 बिवाको मिलेनियम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन

22 मई, 2002 को एशिया पेसफिक क्षेत्र ने बिवाको मिलेनियम फ्रेमवर्क फॉर एक्शन को स्वीकार किया। इसका मुख्य उद्देश्य था 'अवरोध रहित एवं अधिकार आधारित एक समावेशित समाज का निर्माण करना'। यह एशिया और प्रशांत क्षेत्र के दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एवं ''एशियन पैसिफिक डिकेड ऑफ द डिजेबल्ड पर्सन्स'' का ही विस्तार है। (राव, 2010)

इसके सात प्राथमिक कार्यक्षेत्र हैः

i. दिव्यांग व्यक्तियों, उनके परिवार व अभिभावक संघों के स्वयं-सहायता संगठन

ii. दिव्यांग महिलाएं

iii. शीघ्र निदान, शीघ्र हस्तक्षेप एवं शिक्षा

iv. स्व-रोजगार सहित, प्रशिक्षण एवं रोजगार

v. निर्मित वातावरण एवं सार्वजनिक वाहनों की उपलब्धि

vi. सूचना एवं संपर्क तक पहुँच जिसमें सूचना संपर्क एवं सहयोगी प्रौद्योगिकी भी सम्मिलत हो

vii. क्षमता निर्माण, सामाजिक सुरक्षा व अविरत रोजगार कार्यक्रमों के द्वारा गरीबी उन्मूलन संभव हो।

इन प्राथमिकताओं को साकार रूप देने हेतु 21 लक्ष्यों व इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए 17 तरीकों की भी इस घोषणा में पहचान की गयी है। इन सबके अतिरिक्त इसमें संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक आयोग द्वारा इस घोषणा में सुझाई गई प्राथमिकताओं व लक्ष्यों की प्राप्ति में की गई प्रगति के अवलोकन व आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने का भी प्रावधान है।

4.3.6 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ अधिवेशन

दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर अधिवेशन जिसको संक्षेप में 'यू.एन.सी.आर.पी.डी.' (United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabilities) भी कहते हैं, दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों को संरक्षित रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा ने इस संधिपत्र को 13 दिसम्बर, 2006 को स्वीकार किया तथा 30 मार्च, 2007 को हस्ताक्षर करने के लिए रखा। इस दिन भारत सहित 82 देशों ने इस पर हस्ताक्षर किया, (मार्च, 2013 तक 155 देशों ने हस्ताक्षर किया है) यह संधिपत्र 3 मई 2008 को अंतरराष्ट्रीय कानून बना।

यूएनसीआरपीडी में कुल 50 अनुच्छेद (आर्टिकल) हैं। कुछ महत्वपूर्ण अनुच्छेद निम्नलिखित हैं:

अनु. 6:दिव्यांग महिलाओं के बारे में है, जिसमें कहा गया है कि सरकार दिव्यांग महिलाओं के विकास एवं अधिकारिता के लिए उपयुक्त कदम उठाये।

अनु. 7: दिव्यांग बच्चों के बारे में है, जिसमें कहा गया है कि इन बच्चों के अधिकारों, स्वतंत्रता तथा अच्छे जीवन के लिए कार्य करें।

अनु. 9:सुगम्यता के बारे में हैं, जिसमें कहा गया है कि दिव्यांगों को सशक्त करने हेतु अत्याधुनिक तकनीक से बने विशेष उपकरण उपलब्ध कराए जाए।

अनु. 10 :जीने का अधिकार के बारे में है, जिसमें कहा गया है कि दिव्यांग व्यक्तियों को भी सामान्य व्यक्तियों के सामान सम्मान पूर्ण जीवन जीने का अधिकार है।

अनु. 24 :शिक्षा के बारे में है, जिसमें कहा गया है कि दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था सरकार करे जिससे वे अपने व्यक्तित्व, प्रतिभाओं व रचनात्मकता का विकास कर सकें।

अनु. 27 : कार्य और रोजगार के बारे में है, जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक दिव्यांग व्यक्ति को हर तरह के काम, जो उसके योग्य हैं, करने का अधिकार है जिसके लिए उपयुक्त सुविधाओं व वातावरण का उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है।

मुख्यतः यह अधिवेशन दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार निर्दिष्ट करता है, और उनके संवर्द्धन संरक्षण व सुनिश्चितता के लिए राज्य के कर्त्तव्य निर्धारित करता है, जिसके साथ-साथ उनके क्रियान्वयन व अनुश्रवण सहयोग हेतु उचित व्यवस्था विकसित करने का निर्देश देता है।

इस अधिवेशन की एक विशेष बात यह भी है कि इसमें दिव्यांगों को एक श्रेणी मात्र न मानकर दिव्यांगता विशेष और उसमें भी व्यक्ति विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त सुविधाएं देने की बात कही गयी है। इसके अतिरिक्त इसमें दिव्यांग व्यक्तियों की व्यक्तिगत जरूरतों की तरफ भी ध्यान दिया गया है।

इस संधिपत्र में यह व्यवस्था है कि समय-समय पर हर उस देश को जिसने इस संधिपत्र पर हस्ताक्षर किया है, यह बताना होगा कि उसने इस संधिपत्र के कार्यान्वयन हेतु क्या कदम उठाए हैं।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ का घोषणा पत्र सन् ..... ई. में जारी हुआ है।
2. सभी के लिए शिक्षा सन् ..... ई. हुआ था।
3. सालामांका स्टेटमेंट सन् ..... ई. में जारी हुआ था।
4. भारत ने यू.एन.सी.आर.पी.डी. पर सन् ..... में हस्ताक्षर किया।

4.4 राष्ट्रीय नीतियाँ और कानून

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिव्यांग व्यक्तियों के कार्यों का अनुसरण करते हुए भारत सरकार ने भी इनके लिए कुछ नीतियाँ एवं कानून बनाए जो निम्नलिखित हैं।

4.4.1 संवैधानिक प्रावधान

भारतीय संवधिान के अनु. 14 में कहा गया है कि कानून के समक्ष सभी नागरिक एक समान हैं। तथा अनु. 15 में कहा गया है कि राज्य किसी भी नागरिक को धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म स्थान या इनमें से किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं करेगा।

अनु. 41 जहाँ कार्य करने की अधिकार की बात करता हैं वहीं अनु. 45 कहता है कि राज्य 6 वर्ष तक के आयु वाले बच्चों को प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा देने का प्रयास करे।

भारतीय संविधान के 86 संशोधन (2002) के द्वारा अनु. 21। में 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा की बात की है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 जो कि 1 अप्रैल, 2010 से लागू हो गया है, यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा प्रत्येक बच्चे का अधिकार है तथा राज्य को अनिवार्य रूप से उसको ये अधिकार प्रदान करने होंगे तथा उनसे कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

4.4.2 मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम

मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम सन् 1987 में लागू हुआ जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि मानसिक रोगी व्यक्तियों की शीघ्र पहचान करके उनका अच्छा उपचार हो सके।

इस अधिनियम की मुख्य बातें निम्नलिखित हैं-

i. मानसिक रोगी समाज के अंग हैं तथा राज्य उन सभी बाधाओं को दूर करके उन्हें उपचार पाने, देखभाल व सहारा पाने तथा सम्मानजनक जीवन जीने के समान अवसर प्रदान करेगी।

ii. मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्तियों को मनोचिकित्सा, अस्पतालों या नर्सिंग होम में उपचार हेतु समय पर प्रवेश मिले।

iii. मानसिक रोगियों को किसी का दुर्व्यवहार न सहना पड़े, न ही वे किसी से दुर्व्यवहार करें।

iv. यदि मानसिक रोगी अपने मामलों की देखभाल व प्रबंधन के लिए किसी अभिभावक की माँग करें तो उन्हें उपलब्ध कराया जाए।

4.4.3 भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम

भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम जिसे संक्षेप में हम आर.सी.आइ.एक्ट (RCI Rehabitation council of India) कहते हैं, सन् 1992 में पारित हुआ तथा 22 जून, 1993 से लागू हुआ। सन् 2000 में इस अधिनियम में संशोधन किया गया। भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI) की स्थापना 1986 में एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में की गई थी। सितंबर 1992 को संसद द्वारा RCI अधिनियम पारित किया गया और 22 जून 1993 को यह एक वैधानिक निकाय बन गया। इसे और अधिक व्यापक बनाने के लिए संसद द्वारा 2000 में अधिनियम में संशोधन किया गया। RCI को दिव्यांग व्यक्तियों को दी जाने वाली सेवाओं को विनियमित और निगरानी करने, पाठ्यक्रमों को मानकीकृत करने और पुनर्वास और विशेष शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले सभी योग्य पेशेवरों और कर्मियों का एक केंद्रीय पुनर्वास रजिस्टर बनाए रखने का अधिकार दिया गया है। अधिनियम में दिव्यांग व्यक्तियों को सेवाएं देने वाले अयोग्य व्यक्तियों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई का भी प्रावधान है।

भारत सरकार द्वारा इस अधिनियम की आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि दिव्यांगता के क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता एवं प्रशिक्षण इत्यादि के लिए कोई अधिनियम एवं संस्था नहीं थी।

भारतीय पुनर्वास परिषद के कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

i. दिव्यांग व्यक्तियों के पुनर्वास संबंधी प्रशिक्षण नीतियों व कार्यक्रमों को नियमित करना।

ii. दिव्यांग व्यक्तियों के साथ काम करने वाले विभिन्न श्रेणी के व्यावसायिकों की शिक्षा व प्रशिक्षण हेतु एक न्यूनतम मानक प्रस्तावित करना।

iii. पूरे देश में एकरूपता लाने हेतु सभी प्रशिक्षण संस्थानों में इन मानकों का नियमितीकरण करना।

iv. उन सभी संस्थाओं/विश्वविद्यालयों को मान्यता प्रदान करना जो दिव्यांग व्यक्तियों के पुनर्वास विषय पर डिग्री/डिप्लोमा/सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम चलाता है।

v. मान्यता प्राप्त पुनर्वास योग्यता रखने वाले व्यक्तियों की सूची केन्द्रीय पुनर्वास पंजीकरण में रखना।

vi. पुनर्वास एवं विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।

भारतीय पुनर्वास परिषद से मान्यता प्राप्त विभिन्न विश्व विद्यालय, प्रशिक्षण संस्थान व गैर सरकारी संगठन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाते हैं। ये प्रशिक्षण बुनियादी पाठ्यक्रम और प्रमाणपत्र से डिप्लोमा, डिग्री, स्नातकोत्तर डिप्लोमा तक सभी प्रकार के होते हैं। पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले विद्यार्थी भारतीय पुनर्वास परिषद में पंजीकरण पाठ्यक्रम की अर्हता पा लेते हैं सफल विद्यार्थी अपने प्रशिक्षण के अनुरूप अधिकारी या व्यावसायिक की श्रेणी में पंजीकृत होते हैं। भारत में दिव्यांगता पुनर्वास के क्षेत्र में काम करने वाले किसी पुनर्वास विशेषज्ञ के लिए भारतीय पुनर्वास परिषद् में पंजीकृत होना अनिवार्य है तथा प्रत्येक 5 वर्ष बाद पंजीकरण का नवीनीकरण कराना पड़ता है जिसके लिए उन्हें समय-समय पर परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त सेमिनार, वर्कशॉप इत्यादि में भाग लेना होता है।

भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम, 2000 में संसद ने इस अधिनियम में संशोधन किया था. इस संशोधन के ज़रिए अधिनियम को और व्यापक बनाया गया था। इसके अंतर्गत निम्नलिखित संसोधन किए गए -

- इस अधिनियम के ज़रिए, पुनर्वास पेशेवरों के प्रशिक्षण को विनियमित किया गया ।
- पुनर्वास और विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा दिया गया।
- पुनर्वास और विशेष शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले सभी योग्य पेशेवरों और कर्मियों का केंद्रीय पुनर्वास रजिस्टर बनाया गया।
- दिव्यांगता के साथ लोगों को दी जाने वाली सेवाओं को नियंत्रित और मॉनिटर करने का प्रावधान किया गया।
- दिव्यांगता के साथ लोगों को सेवाएं देने वाले अयोग्य लोगों के ख़िलाफ़ दंडात्मक कार्रवाई का प्रावधान किया गया।

4.4.4 दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अधिनियम 1995

भारत सरकार ने दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एक अधिनियम बनाया है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि दिव्यांग व्यक्ति भी राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अधिनियम सन् 1995 में पारित हुआ तथा इसका पूरा नाम है - ''दिव्यांग व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों की सुरक्षा एवं पूर्ण सहभागिता) अधिनियम 1995 इसे PWD Act 1995 भी कहते हैं।

दिव्यांग व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995,7 फरवरी, 1996 को लागू हुआ। यह एक महत्वपूर्ण कदम है जो दिव्यांग

व्यक्तियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करता है। यह अधिनियम पुनर्वास के निवारक और प्रचारात्मक दोनों पहलुओं जैसे शिक्षा, रोजगार और व्यावसायिक प्रशिक्षण, आरक्षण, अनुसंधान और जनशक्ति विकास, बाधा-मुक्त वातावरण का निर्माण, दिव्यांग व्यक्तियों का पुनर्वास, दिव्यांगों के लिए बेरोजगारी भत्ता, दिव्यांग कर्मचारियों के लिए विशेष बीमा योजना और गंभीर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के लिए घरों की स्थापना आदि का प्रावधान करता है।

अधिनियम के मुख्य प्रावधान इस प्रकार हैं-

दिव्यांगता की रोकथाम और शीघ्र पहचान

- दिव्यांगता के कारणों का पता लगाने के लिए सर्वेक्षण, जांच और शोध किए जाएंगे।
- प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों को इस कार्य में सहायता करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा।
- 'जोखिम वाले' मामलों की पहचान के लिए सभी बच्चों की साल में एक बार जांच की जाएगी।
- जानकारी प्रसारित करने के लिए जागरूकता अभियान शुरू किए जाएंगे और प्रायोजित किए जाएंगे।
- मां और बच्चे की प्रसव पूर्व, प्रसव के दौरान और प्रसव के बाद की देखभाल के लिए उपाय किए जाएंगे।

शिक्षा

- दिव्यांगता वाले प्रत्येक बच्चे को एकीकृत विद्यालयों या विशेष विद्यालयों में 18 वर्ष की आयु तक निःशुल्क शिक्षा का अधिकार होगा।
- दिव्यांग बच्चों के लाभ के लिए उचित परिवहन, वास्तु अवरोधों को हटाना और परीक्षा प्रणाली में संशोधनों का पुनर्गठन सुनिश्चित किया जाएगा।
- दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क पुस्तकें, छात्रवृत्ति, वर्दी और अन्य शिक्षण सामग्री का अधिकार होगा।
- दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष विद्यालयों में व्यावसायिक प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।
- दिव्यांग बच्चों के लिए अनौपचारिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा।
- अपेक्षित जनशक्ति विकसित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किए जाएँगे।
- माता-पिता अपने दिव्यांग बच्चों की नियुक्ति के संबंध में शिकायतों के निवारण के लिए किसी उपयुक्त मंच पर जा सकते हैं।

रोज़गार

- सरकारी नौकरियों में 3% रिक्तियां दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षित होंगी, तथा 1% निम्नलिखित से पीड़ित व्यक्तियों के लिए आरक्षित होंगी:

☐ अंधापन या कम दृष्टि

☐ श्रवण दोष

☐ चलन संबंधी दिव्यांगता और मस्तिष्क पक्षाघात

- इसके लिए उपयुक्त योजना बनाई जाएगी
- दिव्यांग व्यक्तियों का प्रशिक्षण और कल्याण
- ऊपरी आयु सीमा में छूट
- रोजगार का विनियमन
- स्वास्थ्य और सुरक्षा उपाय तथा उन स्थानों पर गैर-दिव्यांगताजनक वातावरण का निर्माण जहां दिव्यांग व्यक्तियों को रोजगार दिया जाता है।

सरकारी शैक्षणिक संस्थान और सरकार से अनुदान प्राप्त करने वाले अन्य शैक्षणिक संस्थान दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कम से कम 3% सीटें आरक्षित रखेंगे।

सेवा के दौरान दिव्यांग होने पर किसी भी कर्मचारी को बर्खास्त या पदावनत नहीं किया जा सकता, हालांकि उन्हें समान वेतन और शर्तों के साथ दूसरे पद पर भेजा जा सकता है। दिव्यांगता के कारण किसी भी पदोन्नति से इनकार नहीं किया जा सकता।

सकारात्मक कार्रवाई

- दिव्यांग व्यक्तियों को सहायता उपकरण उपलब्ध कराए जाएंगे।
- दिव्यांग व्यक्तियों को निम्नलिखित हेतु रियायती दरों पर भूमि का आवंटन किया जाएगा:
- घर
- व्यवसाय
- विशेष मनोरंजन केंद्र
- विशेष विद्यालय
- शोध विद्यालय
- दिव्यांग उद्यमियों द्वारा कारखाने

भेदभाव रहित

- सार्वजनिक भवन, रेल के डिब्बे, बसें, जहाज और हवाई जहाज को दिव्यांग लोगों के लिए आसान पहुंच प्रदान करने के लिए डिजाइन किया जाएगा
- सभी सार्वजनिक स्थानों और प्रतीक्षा कक्षों में शौचालय व्हीलचेयर के लिए सुलभ होने चाहिए। सभी लिफ्टों में ब्रेल और ध्वनि चिह्न भी उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

- सार्वजनिक उपयोगिता के सभी स्थानों को रैंप उपलब्ध कराकर बाधा मुक्त बनाया जाएगा।

अनुसंधान और जनशक्ति विकास

निम्नलिखित क्षेत्रों में अनुसंधान को प्रायोजित और बढ़ावा दिया जाएगा:

- दिव्यांगता की रोकथाम,
- सहायक उपकरणों का विकास,
- नौकरी की पहचान,
- कार्यस्थल पर कार्यालयों और कारखानों में संशोधन।
- विशेष शिक्षा, पुनर्वास और जनशक्ति विकास के लिए अनुसंधान करने हेतु विश्वविद्यालयों, अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों, व्यावसायिक निकायों और गैर-सरकारी अनुसंधान इकाइयों या संस्थानों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

सामाजिक सुरक्षा

- दिव्यांग व्यक्तियों के पुनर्वास के लिए गैर-सरकारी संगठनों को वित्तीय सहायता
- दिव्यांग सरकारी कर्मचारियों के लाभ के लिए बीमा कवरेज।
- दिव्यांग व्यक्तियों को बेरोजगारी भत्ता जो एक वर्ष से अधिक समय से विशेष रोजगार कार्यालय में पंजीकृत हैं और कोई लाभकारी व्यवसाय नहीं पा सके हैं।

शिकायत निवारण

- इस अधिनियम में निर्धारित अधिकारों के उल्लंघन के मामले में, दिव्यांग व्यक्ति केंद्र में दिव्यांग व्यक्तियों के मुख्य आयुक्त या राज्य में दिव्यांग व्यक्तियों के आयुक्त को आवेदन दे सकते हैं।

इस अधिनियम के अंतर्गत सात दिव्यांगताएं आती हैं, जो हैं:

i. अंधत्व (Blindness)
ii. अल्पदृष्टि (Low Vision)
iii. श्रवण बाधा (Hearing Impairment)
iv. मानसिक दिव्यांगता (Mental Retardation)
v. मानसिक रोग (Mental Illness)
vi. गामक बाधा (Locomotar Impairment)
vii. कोढ़ उपचरित (Leprosy Cured)

भारत में इस समय दिव्यांग व्यक्तियों को जो सुविधाएं दी जाती हैं, उसके लिए जरूरी है कि वह दिव्यांग व्यक्ति उपर्युक्त सात दिव्यांगता में से किसी एक श्रेणी में हो तथा उसके दिव्यांगता का प्रतिशत कम से कम 40 हो।

4.4.5 राष्ट्रीय न्यास अधिनियम

राष्ट्रीय न्यास अधिनियम सन् 1999 में पारित हुआ तथा इसका पूरा नाम है- ''राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (स्वलीनता, प्रमस्तिष्क पक्षाघात, मानसिक दिव्यांग ता और बहु-दिव्यांग ता प्रभावित व्यक्तियों के कल्याण हेतु) 1999''। इसको संक्षेप में एन.टी. एक्ट, 1999 भी कहते हैं।

जैसा कि नाम से ही पता चलता है कि यह अधिनियम चार दिव्यांगताओं के लिए है जो है:

i. स्वलीनता (Autism)
ii. प्रमस्तिष्क पक्षाघात (Cereble Palsy)
iii. मानसिक दिव्यांगता (Mental Retardation)
iv. बहु दिव्यांगता (Multiple Disabilities)

इस अधिनियम के कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- दिव्यांग व्यक्ति जिस समुदाय के हैं, उसमें यथा संभव पास रह सकें, स्वतंत्रता व पूर्णता के साथ जी सकें। इतना उन्हें समर्थ व सशक्त किया जाए।
- दिव्यांग व्यक्तियों को सहारा देने योग्य सुविधाओं का प्रबलीकरण हो।
- दिव्यांग व्यक्तियों के अभिभावक या संरक्षक की मृत्यु हो जाने पर उनकी देखभाल व संरक्षण की व्यवस्था करना।
- दिव्यांग व्यक्तियों को समान अवसर, उनके अधिकारों की सुरक्षा एवं उनकी पूर्ण भागीदारी को साकार करने की सुविधाएँ प्रदान करना।

राष्ट्रीय न्यास अधिनियम 1999 के कुछ प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित हैं:

- संगठनों का पंजीकरण (अभिभावकों एवं गैर सरकारी संगठनों का)।
- स्थानीय स्तर की समितियों का गठन।
- अभिभावकों की नियुक्ति।
- आवासीय सुविधाओं सहित अन्य अनेक प्रकार की सेवाओं को समर्थन देना।
- होम विजिट/अभिरक्षक के कार्यक्रम
- जागरूकता एवं प्रशिक्षण सामग्री का विकास
- लोगों तक पहुँचने एवं राहत के लिए सामुदायिक कार्यक्रम।

4.4.6 दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति 10 जनवरी, 2006 को पारित हुआ। इस नीति का निर्माण दिव्यांग व्यक्तियों के लिए समान अवसर, उनके अधिकारों के संरक्षक और समाज में

पूर्ण भागीदारी के लिए वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से हुआ। इस राष्ट्रीय नीति की कुछ प्रमुख बातें निम्नलिखित हैं:

- दिव्यांगता की रोकथाम: दिव्यांगता की रोकथाम के लिए कार्यक्रम पर विशेष बल दिया गया है।
- पुनर्वास कार्रवाई: इस नीति में कहा गया है कि पुनर्वास कार्यवाही तीन ग्रुप में होगी।

i. शारीरिक पुनर्वास

ii. शैक्षिक पुनर्वास

iii. आर्थिक पुनर्वास

- दिव्यांग औरतों के बारे में इस नीति में कहा गया है कि इन औरतों को अपने बच्चों की देखभाल करने में परेशानी होती है अतः सरकार इनको आर्थिक मदद करे ताकि ये अपने बच्चों को देखने के लिए किसी को किराये पर रख सके। इस तरह की आर्थिक सुविधा केवल दो बच्चों के लिए तथा अधिकतम दो साल के लिए दिया जाएगा।
- दिव्यांग बच्चों के बारे में इस नीति में कहा गया है कि सरकार इन बच्चों की देखभाल व सुरक्षा सुनिश्चित करें तथा ये लोग समान अवसर एवं पूर्ण सहभागिता के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकें।
- दिव्यांग व्यक्तियों के लिए सार्वजनिक स्थलों पर अवरोध मुक्त वातावरण बनाना।
- दिव्यांग व्यक्तियों को बिना किसी परेशानी के दिव्यांगता सर्टीफिकेट प्रदान करना।
- दिव्यांगता के क्षेत्र में काम करने के लिए गैर सरकारी संगठनों को प्रोत्साहित करने की बात भी इस नीति में कही गयी है।
- दिव्यांग व्यक्तियों के बारे में नियमित रूप से आँकड़े इकट्ठा करना।
- इस नीति में एक महत्वपूर्ण बात कही गयी है कि दिव्यांग व्यक्तियों से जुड़े हुए अधिनियमों जैसे आर.सी.आई. एक्ट, 1992, पी.डब्लू.डी. एक्ट 1995 तथा एन.टी. एक्ट 1999 में समय-समय पर संशोधन होते रहना चाहिए। इसी नीति के फलस्वरूप ही पी.डब्लू.डी. एक्ट 1995 में संशोधन हुआ तथा आर .पी डब्लू.डी. एक्ट 2016 आया ।

4.4.7 शिक्षा का अधिकार अधिनियम

शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 का पूरा नाम है- ‘‘बच्चों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009’’। इस अधिनियम के तहत, केंद्र और राज्य सरकारों को यह ज़िम्मेदारी दी गई है कि वे संविधान के अनुच्छेद 21ए में निहित मौलिक अधिकार को लागू करें शिक्षा का अधिकार अधिनियम 4 अगस्त, 2009 को पारित हुआ तथा 1 अप्रैल, 2010 से लागू हुआ। इस अधिनियम में 6-14 वर्ष तक के बच्चे को नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा देने की बात कही गयी जो कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21A में

लिखित है। इस अधिनियम को लागू करने के बाद भारत विश्व के उन 135 देशों में शामिल हो गया है जहाँ शिक्षा मूल अधिकार के रूप में है।

इस अधिनियम में कुल सात अध्याय हैं, जिसमें से अध्याय-2 : नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार पर है,अध्याय-3: उपयुक्त सरकार, स्थानीय प्राधिकरण, तथा माता-पिता के कर्तव्यों पर है, अध्याय-4:विद्यालयों एवं शिक्षकों के उत्तरदायित्वों पर है, अध्याय-5: प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं संपादन पर है, तथा अध्याय-6: बच्चों के अधिकारों का संरक्षण पर है।

अगर हम दिव्यांग बच्चों के संदर्भ में बात करें तो इस अधिनियम में इनको स्पष्टतया एक अलग वर्ग के रूप् में सम्मिलित नहीं किया गया है, लेकिन अध्याय-1: प्रस्तावना के खण्ड 2 (d) में ''अलाभकारी समूह के बच्चे'' (चाइल्ड बिलाँगइंग टु डिसट्वैन्टिज ग्रुप) के बारे में चर्चा है। इसी खण्ड में कहा गया है कि उपयुक्त सरकार अधिसूचना के द्वारा स्पष्टीकरण करके किसी समूह को जो किसी दूसरे कारण से अलाभकारी है, को इस खण्ड में सम्मिलित कर सकता है। अर्थात उपयुक्त सरकार चाहे तो अधिसूचना के माध्यम से दिव्यांग बच्चों को अधिनियम के खण्ड 2 (d) में सम्मिलित कर सकता है।

इस अधिनियम के तहत, ये प्रावधान किए गए हैं:

- 6 से 14 साल के बच्चों को मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
- दिव्यांग और विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को भी समावेशी शिक्षा दी जानी चाहिए।
- निजी स्कूलों में आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के बच्चों के लिए 25% सीटें आरक्षित हैं।
- प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय, बच्चे के घर से क्रमशः 1 किलोमीटर और 3 किलोमीटर की दूरी के अंदर होने चाहिए।

शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009 की विशेषताएं। Features of Right to Education (RTE) Act, 2009

शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009 की प्राथमिक विशेषताएं यह हैं कि यह भारत में 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करता है। आरटीई की कुछ बुनियादी विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चे मुफ्त और अनिवार्य स्कूली शिक्षा के हकदार हैं।
- प्राथमिक विद्यालय पूरा होने तक कोई रोक या परीक्षा नहीं होगी।

सभी के लिए अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा। Compulsory and free education for all

- भारत में, सरकार को 1 किमी के दायरे में पड़ोस के स्कूल में कक्षा 8 तक प्रत्येक बच्चे को मुफ्त और आवश्यक प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है।

- मुफ्त शिक्षा में स्कूल की लागत के वित्तीय बोझ को कम करने के लिए दिव्यांग बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों, कपड़ों, स्टेशनरी और विशेष शिक्षा संसाधनों का वितरण भी शामिल है।
- किसी भी बच्चे को किसी भी शुल्क या अन्य व्यय का भुगतान करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता है जो उन्हें अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से रोक सकता है।

4.4.8 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016

- इस अधिनियम को दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर यू.एन.सी.आर.पी.डी(यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन ऑन द राइट्स ऑफ़ पर्सन्स विद डिसएबिलिटीज़) के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करने के लिए लाया गया था।
- इस अधिनियम का मसौदा विधेयक (ड्राफ्ट बिल) 2011 में बनाया गया था।
- विधेयक राज्य सभा द्वारा 14 दिसम्बर 2016 और लोक सभा द्वारा 17 दिसम्बर 2016 को पारित किया गया था।
- दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 30 दिसम्बर 2016 से लागू हो गया था।
- इसने दिव्यांग व्यक्ति अधिनियम 1995 का स्थान लिया है।

इस अधिनियम को एक विस्तृत अधिनियम माना जाता है, जिसका उद्देश्य दिव्यांग व्यक्तियों को समानता का अधिकार देना है।

इस अधिनियम के मुताबिक़ यदि कोई व्यक्ति किसी दिव्यांगजन को सार्वजनिक तौर पर अपमानित करता है या अपमानित करने के ध्येय से कुछ कहता है तो उसे इस अपराध के लिए उसे कारावास का दंड भी दिया जा सकता है।

- दिव्यांगजन के लिए रोज़गार के अवसरों को बढ़ाने के लिए इस अधिनियम ने आरक्षण कोटा को 3% से बढ़ा कर 4% कर दिया है। इसका तात्पर्य है कि सरकारी विभाग की नौकरियों में दिव्यांग लोगों के लिए 4% का आरक्षण होगा।
- इस अधिनियम में दिव्यांगजन के लिये विशेष न्यायालयों का प्रावधान किया गया है। ये न्यायालय जिले में दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम के उलंघन के मामलों में न्याय देंगे।
- भारत में बहुत बड़ी तादाद में दिव्यांग बच्चों को उचित शिक्षा नहीं मिल पाती। इस अधिनियम ने 6 साल से 18 साल तक के दिव्यांग बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया गया है।
- राज्य सरकारें दिव्यांग व्यक्तियों से जुड़े मुद्दों के लिए जिला स्तरीय समितियों का गठन करेंगी।
- दिव्यांग ता मुख्य आयुक्त और राज्य आयुक्त कार्यालयों के अधिकार बढ़ा दिए गए हैं।

- केंद्रीय और राज्य स्तर पर शीर्ष नीति-निर्माण निकाय के रूप में broad-based केंद्रीय और राज्य सलाहकार बोर्ड का गठन किया जाएगा।
- तेज़ाब हमले के पीड़ितों को दिव्यांग सूची में शामिल किया गया है। दुर्भाग्यवश भारत में पिछले कुछ वर्षों से तेज़ाब हमले के मामलों में बढ़ोतरी हुई है। इन हमलों के कारण अक्सर लड़कियाँ और महिलाएँ (और कभी-कभी पुरुष भी) गंभीर रूप से विकृत/अक्षम हो जाती हैं।
- बौनेपन और मस्कुलर डिस्ट्रॉफी को भी दिव्यांगता की एक अलग श्रेणी के रूप में शामिल किया गया है।
- थैलेसीमिया, हीमोफिलिया और सिकल सेल रोग — इन तीन रक्त विकारों को भी दिव्यांगता की श्रेणी में शामिल कर लिया गया है।
- दिव्यांगता की श्रेणियाँ अब 7 से बढ़ा कर 21 कर दी गई हैं। केंद्र सरकार के पास यह अधिकार है कि भविष्य में इसमें और श्रेणियों को सम्मिलित किया जा सके। फिलहाल निम्नलिखित 21 प्रकार की दिव्यांगताएँ आधिकारिक सूची में शामिल हैं:

☐ दृष्टिहीनता (Blindness)
☐ दृष्टि-बाधिता (Low-vision)
☐ कुष्ठ रोग से मुक्त व्यक्ति (Leprosy Cured persons)
☐ श्रवण विकार/दोष (Hearing Impairment / deaf and hard of hearing)
☐ चलन-सम्बंधी दिव्यांगता (Locomotor Disability)
☐ बौनापन (Dwarfism)
☐ बौद्धिक दिव्यांग ता (Intellectual Disability)
☐ मानसिक बीमारी (Mental Illness)
☐ ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (Autism Spectrum Disorder)
☐ सेरेब्रल पाल्सी (Cerebral Palsy)
☐ मस्क्यूलर डिस्ट्रॉफ़ी (Muscular Dystrophy)
☐ पुरानी तंत्रिका सम्बन्धी स्थितियाँ (Chronic Neurological conditions)
☐ स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटी (Specific Learning Disabilities)
☐ मल्टीपल स्कलेरॉसिस (Multiple Sclerosis)
☐ वाक् एवं भाषा दिव्यांग ता (Speech and Language disability)
☐ थैलेसीमिया (Thalassemia)
☐ हीमोफ़ीलिया (Hemophilia)
☐ सिकल सेल रोग (Sickle Cell disease)
☐ बहु-दिव्यांग ता (Multiple Disabilities including deaf-blindness)

- तेज़ाब हमले से प्रभावित (Acid Attack victims)
- पार्किन्संस रोग (Parkinson's Disease)

• दिव्यांग व्यक्तियों की सहायता के लिए केन्द्रीय और राज्य-स्तरीय निधि का निर्माण किया जाएगा।

• सार्वजनिक इमारतों (सरकारी एवं निजी दोनों) को एक निश्चित समय सीमा के भीतर सुगम (accessible) बनाने पर ज़ोर दिया गया है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

5. मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम किस वर्ष में पारित हुआ?

अ) 1975 ब) 1983

स) 1987 द) 1992

6. भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम कब बना था?

अ) 1987 ब) 1992

स) 1995 द) 1999

7. दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अधिनियम, 2016 के अंतर्गत कितनी दिव्यांगता आती हैं?

अ) 5 ब) 7

स) 21 द) 8

8. दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति कब बनी थी?

अ) 1995 ब) 1999

स) 2003 द) 2006

4.5 सारांश

प्रस्तुत ईकाई में हमने विशेष एवं समावेशित शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय नीतियों एवं कानूनों का अध्ययम किया। अंतरराष्ट्रीय नीतियों एवं कानूनों में हमने प्रमुखतः दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ का घोषणा पत्र (1975), बच्चों के अधिकारों पर अधिवेशन (1989), सभी के लिए शिक्षा (1990), सालामांका स्टेटमेंट (1994), बिवाको मिलेनियम फ्रेमवर्क (2002) तथा यू.एन.सी.आर.पी.डी. (2008) का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया। राष्ट्रीय नीतियों एवं कानूनों में हमने भारतीय संविधान में वर्णित कुछ संवैधानिक प्रावधानों, मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम (1987), आर.सी.आई. एक्ट (1992), पी.डब्लू.डी. एक्ट (1995), आर.पी.डब्लू.डी.एक्ट (2016) एन.टी. एक्ट (1999),

तथा दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति (2006) तथा आर.टी.ई. एक्ट (2009) का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया।

4.6 शब्दावली

1. विशेष शिक्षा- विशेष शिक्षा से तात्पर्य वैसी शिक्षा से है जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (जैसे- दृष्टिबाधित बच्चे, मानसिक मंद बच्चे, श्रवण बाधित बच्चे) को विशेष स्कूल में दी जाती है।
2. समावेशित शिक्षा- समावेशित शिक्षा से तात्पर्य है- ऐसी शिक्षा जो विशेष एवं सामान्य बच्चों को एक साथ एक ही सामान्य स्कूल में दी जाती है।

4.7 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. 1975
2. 1990
3. 1994
4. 2007
5. स
6. ब
7. स
8. द

4.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

•जुलका ए. (2005). एडुकेशनल प्रोविजन्स एण्ड प्रैक्टिसेस फॉर लरनर्स विद डिसबेलटिज इन इंडिया, पेपर प्रजेन्टेड एट द इन्क्लूसिव एण्ड सुर्पोटिव एडुकेशन कांग्रेस 2005, यूनिवर्सिटी ऑफ स्ट्रेथक्लेड, ग्लासो।

•मुखोपाध्याय, एस (2005). रीथिंकिंग एबाउट इन्क्लूसनः इमर्जिग एरिया फॉर पॉलिसी रिसर्च, नई दिल्लीः न्यूपा

•राव, एल.गो. (2010). निःशक्त बच्चों की शिक्षा का आधार पाठ्यक्रम, नई दिल्लीः इग्नू

- पी.डब्लू.डी. एक्ट (1995). नई दिल्लीः भारत सरकार
- आर.सी.आई एक्ट (1992). नई दिल्लीः भारत सरकार
- आर.टी.ई. एक्ट (2009). नई दिल्लीः भारत सरकार
- आर .पी.डब्लू.डी. एक्ट (2016). नई दिल्लीः भारत सरकार

- MAED-206, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
- नेशनल पॉलिसी फॉर परसन्स विद डिजबेलिटी (2006). नई दिल्लीः भारत सरकार
- नेशनल ट्रस्ट एक्ट (1999). नई दिल्लीः भारत सरकार
- यू.एन.सी.आर.पी.डी. (2008). न्यूयार्कः युनाइटेड नेशन
- संयुक्त राष्ट्र संघ (www.un.org/en)
- राष्ट्रीय न्यास (www.thenational trust.co.in)
- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय (www.socialjustic.nic.in)
- भारतीय पुनर्वास परिषद (www.rehabcoucil.nic.in)

4.9 निबंधात्मक प्रश्न

1.दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा पत्र की प्रमुख बातों का उल्लेख करें।

2. सभी के लिए शिक्षा से आप क्या समझते हैं? इस पर हुए सम्मेलन पर प्रकाश डालें।

3. यू.एन.सी.आर.पी.डी. के प्रमुख अनुच्छेदों का वर्णन करें।

4. भारतीय संविधान में बच्चों के अधिकारों से संबंधित कुछ प्रमुख प्रावधानों का उल्लेख करें।

5. पी.डब्लू.डी. एक्ट1995 एवं दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति की मुख्य बातों की व्याख्या करें।

6. आर.पी.डब्लू .डी.एक्ट 2016 की नीतियों का उल्लेख कीजिए।

इकाई -5 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दे और चिंताएं

इकाई संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 शिक्षा में विशेष आवश्यकताओं को समझना

5.4 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी मुख्य मुद्दे और चिंताएं

5.4.1 सीखने की विविध शैलियाँ और ज़रूरतें

5.4.2 मानकीकृत पाठ्यचर्या में लचीलेपन की कमी

5.4.3 व्यवहारिक और भावनात्मक चुनौतियाँ

5.4.4 सामाजिक और सम्प्रेषण संबधी बाधाएँ

5.4.5 पाठ्यचर्या सामग्री की पहुँच

5.4.6 शिक्षक प्रशिक्षण और सहायता

5.4.7 निर्देश की गति

5.4.8 सामाजिक कलंक और समावेशन

5.4.9 माता-पिता की भागीदारी

5.5 पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दे और चिंताओं पर काबू पाने की रणनीतियाँ

5.6 सारांश

5.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

5.8 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

शिक्षा प्रणाली लंबे समय से समावेशिता के लिए प्रयासरत है, विशेष रूप से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकताओं को संबोधित करने में। विशेष आवश्यकताओं में शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक और विकासात्मक अक्षमताओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जो बच्चों की सीखने की शैली, क्षमताओं और कक्षा में अनुभवों को प्रभावित करती है। पाठ्यचर्या , जो शिक्षण और अधिगाम के लिए आधार के रूप में कार्य करता है, यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे कितनी अच्छी तरह शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, पारंपरिक पाठ्यचर्या अक्सर इन बच्चों की ज़रूरतों के अनुकूल नहीं होते हैं, जो शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए कई चुनौतियाँ पेश करते हैं।

इस इकाई में हम पाठ्यचर्या के संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामने आने वाले विभिन्न मुद्दों और चुनौतियों के विषय में चर्चा करेंगे । यह प्रभावी सीखने में आने वाली बाधाओं, प्रणालीगत और संसाधन-संबंधी मुद्दों की जाँच करेगा और इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा कि पाठ्यचर्या को और अधिक समावेशी बनाने के लिए कैसे संशोधित किया जा सकता है। इसके अलावा, यह उन रणनीतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं पर चर्चा करेगा जिन्हें शिक्षक एक ऐसा वातावरण बनाने के लिए नियोजित कर सकते हैं जो सभी शिक्षार्थियों के लिए सफलता को बढ़ावा देता है, चाहे उनकी व्यक्तिगत ज़रूरतें कुछ भी हों।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :-

1. शिक्षा में विशेष आवश्यकताओं को समझ सकेंगे ।
2. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी मुख्य मुद्दों को सूचीबद्ध कर सकेंगे की व्याख्या कर सकेंगे ।
3. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दों की व्याख्या कर सकेंगे ।
4. पाठ्यचर्या संबंधी चिंताओं पर काबू पाने की रणनीतियों के विषय में जान पाएंगे ।
5. पाठ्यचर्या संबंधी चिंताओं पर काबू पाने की रणनीतियों का वर्णन कर पाएंगे ।

5.3 शिक्षा में विशेष आवश्यकताओं को समझना

1.1 विशेष आवश्यकताओं की परिभाषा

"विशेष आवश्यकाताएं" शब्द शारीरिक, भावनात्मक और विकासात्मक स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला को संदर्भित करता है जिसके लिए विशिष्ट शैक्षिक हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है । कुछ विशेष आवाशाकताएं निम्नवत हैं, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं हैं:

- शारीरिक अक्षमता**(Physical Disabilities)**: ऐसी स्थितियाँ जो गतिशीलता या विकास के अन्य शारीरिक पहलुओं को प्रभावित करती हैं (जैसे, सेरेब्रल पाल्सी, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी)।
- सीखने की अक्षमता (**Learning Disabilities**:): संज्ञानात्मक विकार जो सूचना को संसाधित करने की क्षमता को बाधित करते हैं (जैसे, डिस्लेक्सिया, डिस्कैलकुलिया)।
- बौद्धिक अक्षमता (**Intellectual Disabilities**) : ऐसी स्थितियाँ जो समग्र बौद्धिक कार्यप्रणाली को प्रभावित करती हैं (जैसे, डाउन सिंड्रोम, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार)।
- संवेदी अक्षमता (**Sensory Disabilities**) : ऐसी स्थितियाँ जो सुनने या देखने जैसी इंद्रियों को प्रभावित करती हैं (जैसे, अंधापन, बहरापन)।
- भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकार (**Emotional and Behavioral Disorders**): ऐसी स्थितियाँ जो भावनात्मक नियंत्रण या व्यवहार को प्रभावित करती हैं (जैसे, एडीएचडी, चिंता विकार, अवसाद)।
- ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (**Autism Spectrum Disorders (ASD)**: ऐसी स्थितियाँ जो संचार, सामाजिक संपर्क और व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

विभिन्न शैक्षिक और चिकित्सा अध्ययनों के अनुसार, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की संख्या वैश्विक स्तर पर बढ़ती जा रही है। इस बढ़ते प्रचलन के कारण शिक्षकों, स्कूलों और नीति निर्माताओं पर ऐसे पाठ्यचर्या का विकास करने की जिम्मेदारी होती है जो विभिन्न आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी हो।

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को अक्सर सामान्य पाठ्यचर्या तक पहुँचने में कठिनाइयों का अनुभव होता है। चाहे शारीरिक बाधाओं, सामाजिक-भावनात्मक चुनौतियों या संज्ञानात्मक बाधाओं के माध्यम से, शिक्षण के लिए पारंपरिक दृष्टिकोण अक्सर उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त होता है। इन चुनौतियों का प्रभाव कम शैक्षणिक उपलब्धि, उच्च ड्रॉपआउट दरों और स्कूल की गतिविधियों में सीमित भागीदारी के रूप में देखा जा सकता है।

5.4 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी मुख्य मुद्दे और चुनौतियाँ

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पारंपरिक पाठ्यचर्या से जुड़ने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। दिव्यांगता की प्रकृति और गंभीरता के आधार पर ये चुनौतियाँ व्यापक रूप से भिन्न हो सकती हैं, लेकिन ऐसे कई सामान्य मुद्दे हैं जिन्हें शिक्षकों, माता-पिता और देखभाल करने वालों को संबोधित करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन बच्चों को सीखने और आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या से संबंधित कुछ प्रमुख मुद्दे और चुनौतियाँ इस प्रकार हैं:

5.4.1 सीखने की विविध शैलियाँ और ज़रूरतें (Diverse Learning Styles and Needs)

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में अक्सर सीखने की भिन्नता होती है जिसके लिए भिन्नता के अनुरूप ही दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, ADHD वाला बच्चा ध्यान और एकाग्रता के साथ संघर्ष कर सकता है, जबकि ऑटिज़्म वाले बच्चे को संचार और सामाजिक संपर्क में कठिनाई हो सकती है। एक सामान्य पाठ्यचर्या इन विविध सीखने की शैलियों को समायोजित करने के लिए पर्याप्त लचीला नहीं हो सकता है। शिक्षकों को व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या को अनुकूलित करना चाहिए, जो कि अधिक समय लेने वाला और जटिल हो सकता है।

5.4.2 मानकीकृत पाठ्यचर्यामें लचीलेपन की कमी (Non-flexibilityof Standardised Curriculum)

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामने आने वाली सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है पारंपरिक पाठ्यचर्या की कठोर संरचना। अधिकांश शैक्षिक प्रणालियाँ शिक्षण के लिए “One size fits all” दृष्टिकोण को अपनाती हैं, जहाँ छात्रों से नियत समय पर , एक ही गति और एक ही तरीके से सीखने की अपेक्षा की जाती है। यह मॉडल विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की सीखने की विविध आवश्यकताओं को समायोजित नहीं करता है।

i. **विभेदीकरण का अभाव Lack of Differentiation**: सामान्य पाठ्यचर्या अक्सर "औसत" छात्र को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया जाता है और इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सीखने की अलग-अलग गति को ध्यान में नहीं रखा जाता है।
ii. **निर्धारित गति Determined Pace**: एक सामान्य पाठ्यचर्या में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अपने साथियों के साथ बने रहने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है।
iii. **वैकल्पिक शिक्षण विधियों का सीमित उपयोग Limited use of alternative teaching methods**: पाठ्यचर्या में व्याख्यान और पाठ्यपुस्तकों जैसे शिक्षण के पारंपरिक

तरीकों को प्राथमिकता दी जाती है, जो उन छात्रों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते हैं जिन्हें व्यावहारिक, दृश्य या इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभव की आवश्यकता होती है।

5.4.3 व्यवहारिक और भावनात्मक चुनौतियाँ (Behavioural and Emotional Challenges)

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे (CWSN) अक्सर अपनी विशेष संज्ञानात्मक, संवेदी और शारीरिक स्थितियों के कारण कई तरह की व्यवहारिक और भावनात्मक चुनौतियों का सामना करते हैं। ये चुनौतियाँ उनकी दिव्यांगता की प्रकृति के आधार पर बहुत भिन्न होती हैं, लेकिन वे बच्चे की सामाजिकता, शैक्षणिक प्रगति और सामान्य संतुलन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में व्यवहारिक और भावनात्मक मुद्दे आम हैं और यह पाठ्यचर्या से जुड़ने की उनकी क्षमता को गंभीर रूप से बाधित कर सकते हैं। ऑटिज़्म (Autism), ए.डी.एच.डी.(ADHD) या आघात संबंधी विकारों (Trauma related disorders) वाले कई बच्चे भावनात्मक नियंत्रण, आवेग पर नियंत्रण और सामाजिक संपर्क में कठिनाइयों का अनुभव कर सकते हैं। ये चुनौतियाँ उनके लिए समूह गतिविधियों में भाग लेना, निर्देशों का पालन करना या पाठों के दौरान ध्यान केंद्रित करना मुश्किल बना सकती हैं। व्यवहार संबंधी समस्याएँ कक्षा के वातावरण को बाधित कर सकती हैं, जिससे बच्चे के लिए अपने साथियों की तरह पाठ्यचर्या से जुड़ना मुश्किल हो जाता है। शिक्षकों को सीखने पर केंद्रित वातावरण बनाए रखते हुए व्यवहार को प्रबंधित करने के लिए रणनीतियों की आवश्यकता होती है।

- सीखने के माहौल में व्यवधान: व्यवहारिक चुनौतियाँ कक्षा में व्यवधान पैदा कर सकती हैं, जो न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को बल्कि उनके साथियों को भी प्रभावित करती हैं।
- भावनात्मक समर्थन की कमी: पाठ्यचर्या में शायद ही कभी सामाजिक-भावनात्मक सीखने के घटक शामिल होते हैं जो विशेष जरूरतों वाले छात्रों को उनकी भावनाओं और बातचीत को समझने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।
- सहयोग में चुनौतियाँ: विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए समूह कार्य और साथियों के साथ बातचीत करना विशेष रूप से कठिन हो सकता है, जिससे संभावित रूप से सामाजिक अलगाव हो सकता है।

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों में (CWSN) में व्यवहारिक और भावनात्मक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जहाँ बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं के विषय पर सहायक और सहानुभूतिपूर्ण वातावरण में विचार की जाने के साथ साथ उन्हें पोर्न भी किया जाए। इन बच्चों को भावनात्मक और सामाजिक रूप से विकसित होने में

मदद करने के लिए माता-पिता, शिक्षकों, चिकित्सकों और अन्य विशेषज्ञों के बीच सहयोग आवश्यक है।

5.4.4 सामाजिक और सम्प्रेषण संबधी बाधाएँSocial and Communication Barriers

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को सामाजिक और सम्प्रेषण संबंधी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, विशेष रूप से ऑटिज्म स्पेक्ट्रम वाले, भाषा दोष से ग्रसित बच्चे, श्रवण ह्रास से ग्रसित बच्चे । पारंपरिक कक्षा में बातचीत चुनौतीपूर्ण हो सकती है, जो समूह कार्य, चर्चाओं और सहयोगी शिक्षण गतिविधियों में शामिल होने की उनकी क्षमता को प्रभावित कर सकती है। सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यचर्या में गैर-मौखिक संचार, दृश्य सहायक सामग्री और व्यक्तिगत सहायता के लिए अधिक अवसर शामिल करने की आवश्यकता होती है ।

5.4.5पाठ्यचर्या सामग्री की पहुँचCurriculum Accessibility

सभी शैक्षिक सामग्री विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए सुलभ नहीं है। उदाहरण के लिए, दृष्टिबाधित बच्चों को पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों से जूझना पड़ सकता है, जबकि डिस्लेक्सिया वाले बच्चों को पढ़ने पर आधारित असाइनमेंट चुनौतीपूर्ण लग सकते हैं । सुलभ सामग्री की कमी - जैसे ब्रेल पुस्तकें, ऑडियो संसाधन, या डिजिटल प्रारूप - पाठ्यचर्या के साथ प्रभावी ढंग से जुड़ने की बच्चे की क्षमता को सीमित कर सकते हैं।

5.4.6 शिक्षक प्रशिक्षण और सहायताTeacher Training and Support

शिक्षक, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या को संशोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, अधिकांश शिक्षकों को विशेष शिक्षा में सीमित प्रशिक्षण प्राप्त होता है, जो पाठ्यचर्या को प्रभावी ढंग से संशोधित या विभेदित करने की उनकी क्षमता में बाधा डालता है।

- अपर्याप्त प्रशिक्षण: कई शिक्षकों को विभिन्न विकलांगताओं और कक्षा में विविध शिक्षार्थियों को समायोजित करने के लिए आवश्यक विशिष्ट रणनीतियों के ज्ञान की कमी होती है।
- थकान और तनाव: संसाधन की कमियों के कारण शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों से जुडी चुनौतियों की वजह से थकान और तनाव महसूस करते हैं ।
- सहयोग और टीमवर्क: विशेष शिक्षा के लिए सामान्य शिक्षा शिक्षकों, विशेष शिक्षा कर्मचारियों, भाषा चिकित्सकों और अन्य पेशेवरों के बीच एक समूह की तरह काम करने की आवश्यकता होती

है। हालाँकि, कई स्कूलों में, इस सहयोग को हमेशा पर्याप्त रूप से बढ़ावा या समर्थन नहीं दिया जाता है।

5.4.7 निर्देश की गति Pacing of Instruction

- विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को अपने साथियों की तुलना में अवधारणाओं को समझने के लिए अधिक समय की आवश्यकता हो सकती है । यह उन्हें सामान्य पाठ्यचर्या को मानक गति से पढ़ाए जाने पर पिछड़ने का कारण बन सकता है। शिक्षकों को गति को समायोजित करना चाहिए, पाठों को छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित करना चाहिए, और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे बिना घबराए या पीछे छूटे बिना अपनी गति से आगे बढ़ सकें।

5.4.8 सामाजिक कलंक और समावेशन Social Stigma and Inclusion

सामाजिक कलंक और बहिष्कार भी एक बड़ा मुद्दा है, जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए शैक्षिक अनुभव को और जटिल बना सकता है। दिव्यांग बच्चों को अक्सर अपने साथियों से सामाजिक अलगाव, बदमाशी या नकारात्मक लेबलिंग का सामना करना पड़ता है, जिसका उनकी शैक्षणिक सफलता और आत्मसम्मान पर गहरा असर पड़ सकता है। बच्चा अलग-थलग या हाशिए पर महसूस कर सकता है, खासकर अगर उनमें स्पष्ट या अधिक स्पष्ट दिव्यांगताएं हों ।

- साथियों के साथ संबंध: विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामाजिक या सम्प्रेषण चुनौतियों के कारण दोस्ती बनाने या समूह गतिविधियों में भाग लेने में मुश्किल हो सकती है।
- पाठ्यचर्या में शामिल करना: अक्सर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अलग-अलग कक्षाओं में रखा जाता है या उन्हें अलग-अलग पाठ्यचर्या दिए जाते हैं, जिससे उनके साथियों से उनका अलगाव और बढ़ सकता है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ सामाजिक कलंक जुड़ा हो सकता है, जो नियमित कक्षा की गतिविधियों में भाग लेने की बच्चे की क्षमता को प्रभावित कर सकता है। पाठ्यचर्या प्रारूप को अकादमिक पहलु से परे जाकर सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा और समावेशन के अवसरों को शामिल करना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए कि विशेष जरूरतों वाले बच्चे पीछे न छूट जाएं यह महत्वपूर्ण है कि एक कक्षा में वातावरण समावेशी बनाया जाए जो कि समझ, सहानुभूति और सहयोग को बढ़ावा देता है।

5.4.9 माता-पिता की भागीदारी (Parental Involvement)

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के माता-पिता अक्सर घर पर अपने बच्चों की पढ़ाई का समर्थन करने और उचित सेवाओं के समर्थन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, संसाधनों, ज्ञान या

समय की कमी के कारण उनकी भागीदारी सीमित हो सकती है। माता-पिता को शैक्षिक प्रक्रिया में भागीदार होने की आवश्यकता है। पाठ्यचर्या को शिक्षकों, माता-पिता और सहायक कर्मचारियों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएँ बनाई जा सकें और यह सुनिश्चित किया जा सके कि उद्देश्य बच्चे की ज़रूरतों के अनुरूप हों।

5.5 पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दे और चिंताओं पर काबू पाने की रणनीतियाँ (Strategies for Overcoming Curricular Issues and Concerns)

5.5.1 विभेदित निर्देश

छात्रों के सीखने अलग अलग ज़रूरतों को संबोधित करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक विभेदित निर्देश है। इस दृष्टिकोण में कक्षा में विभिन्न क्षमताओं और सीखने की शैलियों को स्थान देने के लिए शिक्षण विधियों, सामग्रियों और आकलन को समायोजित करना शामिल है।

- लचीला समूहीकरण: शिक्षक समान आवश्यकताओं या रुचियों के आधार पर छात्रों को समूहबद्ध कर सकते हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी छात्र अलग-अलग दृष्टिकोणों और सीखने की शैलियों से अवगत हों इन समूहों में बार-बार फेरबदल कर सकते हैं
- विविध मूल्यांकन: केवल पारंपरिक परीक्षणों पर निर्भर रहने के बजाय, शिक्षक छात्र की प्रगति का आकलन करने के लिएलचीले मूल्यांकन के तरीकेजैसे परियोजना-आधारित मूल्यांकन, मौखिक प्रस्तुतियाँ या पोर्टफोलियो-आधारित मूल्यांकन का उपयोग कर सकते हैं, जो उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं को बेहतर ढंग से दर्शाता है।
- सामग्री का अनुकूलन: शिक्षक सीखने को अधिक सुलभ बनाने के लिए संसाधनों में बदलाव कर सकते हैं, दृश्य सहायक सामग्री प्रदान कर सकते हैं या सहायक तकनीक (Assistive Technology)का उपयोग कर सकते हैं।

5.5.2 सहायक तकनीक का उपयोग Use of Assistive Technology

सहायक तकनीक विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए सीखने के अनुभव को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकती है। इस तकनीकी के उपयोग से समान अवसर प्रदान की जा सकते हैं, जिससे कि छात्र पाठ्यचर्या तक ऐसे तरीकों से पहुँच सकते हैं, जिनका पारंपरिक सामग्री समर्थन नहीं करती।

- स्क्रीन रीडर: JAWS या Kurzweil 3000 जैसे उपकरण दृष्टि दोष या डिस्लेक्सिया वाले छात्रों को लिखित सामग्री तक पहुँचने में मदद कर सकते हैं।

- स्पीच-टू-टेक्स्ट:' ड्रैगन नेचुरली स्पीकिंग' जैसे सॉफ़्टवेयर लेखन कठिनाइयों वाले छात्रों को हाथ से लिखने के बजाय उन्हें अपना काम बोलकर बताने की अनुमति देकर सहायता कर सकते हैं।
- इंटरैक्टिव लर्निंग टूल: बोर्डमेकर जैसे प्रोग्राम, जो जानकारी देने के लिए चित्रों और प्रतीकों का उपयोग करते हैं, ऑटिज़्म या अन्य सम्प्रेषण कठिनाइयों वाले बच्चों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

5.5.3व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ (**Individualized Education Plans**) **(IEPs)**:

ये व्यक्तिगत योजनाएँ विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए कानूनी रूप से आवश्यक हैं और यह बच्चे की आवश्कता जे अनुरूप शिक्षा के लिए विशिष्ट समायोजन, संशोधन और लक्ष्यों की रूपरेखा तैयार करती हैं।

5.5.4 शिक्षण के सहयोगात्मक मॉडल Collaborative Models of Teaching

सहयोगात्मक शिक्षण जैसे कि सह-शिक्षण मॉडल, समावेशिता को बढ़ावा दे सकते हैं और विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए एक समृद्ध शैक्षिक अनुभव प्रदान कर सकते हैं। सह-शिक्षण वातावरण में, एक सामान्य शिक्षा शिक्षक और एक विशेष शिक्षा शिक्षक दोनों मिलकर योजना बनाने और निर्देश देने का काम करते हैं।

- टीम शिक्षण: दोनों शिक्षक पाठ पढ़ाने और छात्र की प्रगति की निगरानी करने की जिम्मेदारी साझा करते हैं।
- समानांतर शिक्षण: शिक्षक कक्षा को दो समूहों में विभाजित करते हैं और सभी छात्रों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक ही विषय-वस्तु को एक साथ अलग-अलग तरीकों से पढ़ाते हैं।
- एक पढ़ाता है, एक सहायता करता है: एक शिक्षक पाठ पढ़ाने है जबकि दूसरा शिक्षक, ऐसे छात्र जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होती है , उन छात्रों को व्यक्तिगत सहायता प्रदान करता है,

5.5.5 सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) को बढ़ावा देना Promoting Social-Emotional Learning (SEL)

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या में सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) को शामिल करना महत्वपूर्ण है। **SEL** छात्रों को आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण , सामाजिक जागरूकता, संबंध-निर्माण और जिम्मेदारीपूर्वक निर्णय लेने जैसे कौशलों को विकसित करने में मदद करता है। विद्यालय दैनिक गतिविधियों में SEL सिद्धांतों को शामिल कर सकते हैं, जिससे सहानुभूति, सम्प्रेषण और सहयोग को बढ़ावा मिलता है।

5.5.6 समावेशी वातावरण का निर्माण Building an Inclusive Environment

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है कि कक्षा में समावेशी वातावरण का निर्माण किया जाए , जहाँ सभी छात्र मूल्यवान और समर्थित महसूस करते हैं। इसे निम्न के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है:

- सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन **Universal Design for Learning** (UDL): यह ढांचा शिक्षकों को ऐसे पाठ्यचर्या डिजाइन करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो लचीले और समावेशी हों औरजो प्रतिनिधित्व, अभिव्यक्ति और जुड़ाव के कई साधन प्रदान करते हों।
- सहकर्मी सहायता कार्यक्रम **Peer Support Programs**: साथियों की सलाह या मित्र प्रणाली, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामाजिक कौशल विकसित करने और कक्षा में अपनेपन की भावना बढ़ाने में मदद कर सकती है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या की चुनौतियाँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे दुर्गम नहीं हैं। लचीली शिक्षण पद्धतियों को अपनाकर, सहायक तकनीक का उपयोग करके, तथा समावेशी, सहायक कक्षा वातावरण को बढ़ावा देकर, शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी बच्चों को, चाहे उनकी आवश्यकताएं कुछ भी हों, सार्थक और समृद्ध शिक्षा तक पहुँच प्राप्त हो। सहयोग, विभेदीकरण, तथा विविध शिक्षण आवश्यकताओं को समझने और उनका समर्थन करने की प्रतिबद्धता विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए एक प्रभावी पाठ्यचर्या के आवश्यक घटक हैं। पाठ्यचर्या के संबंध में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक सहयोगात्मक, लचीले और छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। शिक्षार्थियों की विविधता को पहचानकर तथा शिक्षण रणनीतियों, सामग्रियों और कक्षा के वातावरण में आवश्यक समायोजन करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी बच्चों को, उनकी चुनौतियों के बावजूद, सफल होने का अवसर मिले।

5.6 सारांश

विशेष आवश्यकताओं में शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक और विकासात्मक अक्षमताओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जो बच्चों की सीखने की शैली, क्षमताओं और कक्षा में अनुभवों को प्रभावित करती है । पाठ्यचर्या , जो शिक्षण और अधिगाम के लिए आधार के रूप में कार्य करता है, यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे कितनी अच्छी तरह शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, पारंपरिक पाठ्यचर्या अक्सर इन बच्चों की ज़रूरतों के अनुकूल नहीं होते हैं, जो शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए कई चुनौतियाँ पेश करते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पारंपरिक पाठ्यचर्या से जुड़ने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। दिव्यांगता की प्रकृति और गंभीरता के आधार पर ये चुनौतियाँ व्यापक रूप से भिन्न हो सकती हैं,

लेकिन ऐसे कई सामान्य मुद्दे हैं जिन्हें शिक्षकों, माता-पिता और देखभाल करने वालों को संबोधित करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन बच्चों को सीखने और आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें।

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों में कई प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, मुख्य रूप से मानकीकृत पाठ्यचर्या में लचीलेपन की कमी के कारण जो विविध शिक्षण शैलियों या गति को समायोजित नहीं करता है। भावनात्मक और व्यवहार संबंधी कठिनाइयाँ, अक्सर सीखने में बाधा डालती हैं और पाठ्यचर्या में सामाजिक-भावनात्मक समर्थन के माध्यम से शायद ही कभी संबोधित की जाती हैं। पहुँच एक और प्रमुख मुद्दा है, जिसमें कई शिक्षण सामग्री और तकनीक , शारीरिक, संवेदी या सीखने की अक्षमताओं वाले छात्रों के लिए अनुकूल नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, अधिकांश शिक्षकों के पास विशेष शिक्षा में पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं है, जिससे व्यक्तिगत सहायता प्रदान करने और तनाव का प्रबंधन करने में कठिनाई होती है। सामाजिक कलंक और बहिष्कार इन छात्रों को और अधिक प्रभावित करते हैं, उनकी भागीदारी, साथियों के साथ संबंध और समग्र शैक्षणिक विकास को सीमित करते हैं। इन शिक्षार्थियों को आगे बढ़ने के लिए सुनिश्चित करने के लिए एक अधिक समावेशी, लचीला और सहायक शैक्षिक दृष्टिकोण आवश्यक है।

5.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यूनेस्को, (2001), अंडरस्टैडिंग एंड रेस्पॉडिंग टू चाइल्ड नीड्स इन इनक्लूसिव क्लासरूम, यूनेस्को से प्रकाशित।
2. मुखोपाध्यासय, एस0 एण्ड मनी, एम0एन0जी0 (2002) एडुकेशन ऑफ चिन्ड्रेनन विद् स्पेफशल नीड्स , नई दिल्ली: आक्स.फोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. यूनेस्को, (2004), इमब्रासिंग डायवर्सिटि टूलकिट फॉर क्रिएटिंग इनक्लूसिव लर्निंग फ्रेंडली इनवायरमेंट यूनेस्को की वेबसाइट से लिया गया।
4. रेनाल्डस सी.आर. एंड जानजेन इ.एफ. (Ed), (2007), इनसालक्लोपीडिया ऑफ स्पेशल एजुकेषन, जॉन वाइली एंड संस से प्रकाशित।
5. मंगल एस.के., (2007), विशिष्ट बालक, प्रेंटिल हॉल ऑफ इंडिया से प्रकाशित।
6. गोविन्दर राव, एल0 (2007), पर्सपेक्टिव ऑन स्पे शल एडुकेशन: हैदराबाद: नीलकमल पब्लिकेशन।
7. इग्नू फाउनडेशन कोर्स आन एडूकेशन ऑफ चिन्ड्रेन विद डिसएबिलिटीस। नई दिल्ली (2009) इग्नू।

5.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी क्या क्या मुख्य मुद्दे और चिंताएंहैं ? व्याख्या कीजिए।
2. पाठ्यचर्या संबंधी चुनौतियों पर काबू पाने की रणनीतियों का की व्याख्या कीजिए।

इकाई 6.समावेशी व्यवस्था में CWSN के शिक्षण की पद्धति

इकाई संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 समावेशी शिक्षा

6.4 समावेशी शिक्षा की अवधारणा:

6.5 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा

6.6 समावेशी शिक्षा की आवश्यकताएँ और महत्व

6.7 समावेशी शिक्षा के लाभ

6.8 समावेशी शिक्षा के सिद्धांत

6.9 समावेशी शिक्षा में सीडब्लूएसएन के सामने आने वाली समस्याएं

6.10 समावेशी कक्षाओं में शिक्षण के सिद्धांत

6.11 कक्षा में CWSN को समझना

6.12 सीडब्ल्यूएसएन को पढ़ाने की पद्धति

6.13**शिक्षण युक्तियाँ और रणनीतियाँ**

6.14 विशेष शिक्षा शिक्षक की भूमिका

6.15 सारांश

6.16 निबंधात्मक प्रश्न

6.17 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

6.1 प्रस्तावना

भारत का संविधान सभी व्यक्तियों की समानता, स्वतंत्रता, न्याय और सम्मान सुनिश्चित करता है। समतामूलक, समावेशी और बहुलवादी समाज के संवैधानिक दायित्व भारतीय शिक्षा प्रणाली को प्रकृति में समतामूलक और समावेशी बनाने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में उच्च गुणवत्ता वाली समत ामूलक और समावेशी शिक्षा प्रदान करके भारत को बदलने का एक दृष्टिकोण है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि विविध सीखने की ज़रूरतों वाले सभी छात्र अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए समावेशी वातावरण में समान सीखने के अवसरों के साथ शिक्षा प्रणाली में सफल हो सकें। जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है 2020, "भारत के लिए लक्ष्य तक एक ऐसी शिक्षा प्रणाली होना चाहिए जो किसी से कम न हो 2040, जिसमें सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी शिक्षार्थियों के लिए उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुँच हो 4 (एसडीजी) । सतत विकास लक्ष्य"में कहा गया है कि शिक्षा एक मानव अधिकार है और सतत विकास और शांति के लिए एक शक्ति है। शिक्षा के लिए महत्वाकांक्षाओं को अनिवार्य रूप से) 4 एजेंडा के सतत विकास लक्ष्य 2030एसडीजी (4में शामिल किया गया है, जिसका उद्देश्य 2030 तक समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने " है। "के अवसरों को बढ़ावा देना

इस इकाई में हम समावेशी सेटिंग्स में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों)CWSN) को पढ़ाने में शामिल पद्धतियों की चर्चा करेंगेइसका उद्देश्य शिक्षकों |, प्रशासकों और हितधारकों को सभी के लिए सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ प्रदान करना है।

6.2 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- समावेशी शिक्षा की अवधारणा और इसके महत्व को समझ सकेंगे।
- बच्चों में विशेष आवश्यकताओं की विभिन्न श्रेणियों जैसे), शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेदी, भावनात्मक, व्यवहारिककी पहचान कर (सकेंगे।
- विभेदित निर्देश और सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन रणनीतियों को लागू कर सकेंगे।
- समावेशी पाठ योजनाओं की योजना बना और उन्हें लागू कर सकेंगे।

6.3 समावेशी शिक्षा:

समावेशी शिक्षा एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग स्कूली शिक्षा के एक प्रकार का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जहाँ सभी छात्रों को, उनकी योग्यता या विकलांगता की परवाह किए बिना, उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच प्राप्त होती है। यह स्कूल और समुदाय के आधार पर कई तरीकों से किया जा सकता है।

समावेशी शिक्षा वह है जिसमें सभी छात्र एक स्कूल में भाग ले सकेंगे, एक साथ सीखने में लगे रहेंगे, अपनी क्षमता को प्राप्त करने के लिए जो उनकी जाति, वर्ग, रंग, लिंग, विकलांगता, यौन वरीयता, सीखने की शैली और भाषा के बावजूद पूर्ण शैक्षणिक और व्यावसायिक कौशल विकास को बढ़ावा देता है।

इसका तात्पर्य है कि सभी युवा शिक्षार्थी, विकलांग या बिना विकलांगता वाले युवा लोग शिक्षा के अधिकार और सभी के लिए शिक्षा के अनुसार समर्थन सेवाओं के उचित नेटवर्क के साथ सामान्य प्री-स्कूल और स्कूलों तक पहुँच के माध्यम से एक साथ सीखने में सक्षम होंगे, जिससे कोई भी पीछे न छूटे।

यह के रूप में समावेशिता की अवधारणा को "जो बच्चे एक साथ सीखते हैं वे एक साथ रहते हैं" बढ़ावा देता है।



dreamstime.com

समावेशी शिक्षा एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण है जो हर बच्चे के अधिकार को मान्यता देता है, चाहे उसकी योग्यता या विकलांगता कुछ भी हो, उसे एक सामान्य शिक्षण वातावरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। यह समानता, पहुंच और भागीदारी पर जोर देता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे न केवल कक्षाओं में मौजूद हों, बल्कि सार्थक रूप से शामिल और समर्थित भी हों।

6.4 समावेशी शिक्षा की अवधारणा:

समावेशी शिक्षा एकीकरण के विचार से आगे बढ़ती है और इसमें संबद्धता, स्वीकृति और समर्थन शामिल होता है। यह स्वीकार करता है कि शिक्षार्थी विविधतापूर्ण हैं और बच्चों से सिस्टम के अनुकूल होने की अपेक्षा करने के बजाय, शैक्षिक सेटिंग्स को अलगअलग ज़रूरतों को पूरा करने के लिए - अनुकूलित होना चाहिए।

समावेशी शिक्षा शिक्षण और सीखने के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है“, जो विविधता को अपनाती है और हर छात्र को, चाहे उसकी योग्यता कुछ भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच प्रदान करने का लक्ष्य रखती है।)“यूनेस्को, (2009।

समावेशी कक्षाओं के संबंध में“, CWSN के शैक्षिक अनुभवों को समृद्ध करना शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक एकीकरण और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने के लिए सर्वोपरि है। शोधकर्ताओं नेCWSN की भागीदारी और सफलता को बढ़ाने के लिए अनुकूली पाठ्यक्रम से लेकर शिक्षक पेशेवर विकास तक विभिन्न रणनीतियों की खोज की है।हॉकिन्स-फ्लोरियन और ब्लैक)", 2011; सालेंड, (2005।

मजबूत प्रगति के बावजूद, अभी भी कई बाधाओं को दूर करना बाकी है। इनमें अपर्याप्त शिक्षक तैयारी, सीमित संसाधन और प्रणालीगत बाधाएँ शामिल हैं जो समावेशी शिक्षा के पूर्ण कार्यान्वयन में बाधा डालती हैं।

ऐनस्को), 2005; स्ली, (2011

समावेशी शिक्षा की मुख्य विशेषताएँ हैंविविधता के लिए ,सभी के लिए सामान्य सीखने की जगहें- सीखने में बाधाओं को द,सम्मान ूर करना|सभी शिक्षार्थियों की भागीदारी ,

6.5 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा

यह उन छात्रों को संदर्भित करता है जो संवेदी क्षमताओं, शारीरिक विशेषताओं या दोनों में औसत या सामान्य बच्चे से भिन्न होते हैं। ये विशेषताएँ इस हद तक होनी चाहिए कि बच्चे को अधिकतम क्षमता तक विकसित होने के लिए स्कूल प्रथाओं या विशेष शैक्षिक सेवाओं में संशोधन की आवश्यकता हो।पूर्व की इकाइयों में आप विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के बारे में विस्तार से पढ़ चुके हैं|

6.6 समावेशी शिक्षा की आवश्यकताएँ और महत्व

समावेशी शिक्षा संवैधानिक जिम्मेदारियों को पूरा करती है जैसा कि विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016, अध्याय 3 शिक्षा द्वारा जोर दिया गया है। यह बच्चों को स्वस्थ नागरिकता के विकास, शिक्षा में सार्वभौमिकता प्राप्त करने और समान रोजगार के अवसरों और जीवन की दिशा में कौशल विकास के लिए अपने परिवारों के साथ रहने में सक्षम बनाता है। यह आत्मसम्मान की भावना विकसित करता है, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग और कार्यान्वयन के अवसर प्रदान करता है जो एक समावेशी समाज को बढ़ावा देता है, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को आत्मनिर्भर बनाता है और समाज में एक सम्मानजनक जीवन जीता है।

6.7 समावेशी शिक्षा के लाभ हैं

सभी छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करता है(Helps All Students Reach Their Full Potential)

समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को एक ऐसा सीखने का माहौल प्रदान करके लाभान्वित करती है जो प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरा करता है। समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को उनकी योग्यता या अक्षमताओं की परवाह किए बिना सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम तक समान पहुँच प्रदान करती है। यह दृष्टिकोण सभी छात्रों को सफल होने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करके उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करता है|

स्वीकृति और समझ की संस्कृति का निर्माण करता है(Creates a Culture of Acceptance and Understanding)

समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को, चाहे उनकी क्षमता कुछ भी हो, एक सीखने के माहौल में एक साथ लाकर स्वीकृति और समझ की संस्कृति बनाने का प्रयास करती है। ऐसा करके, समावेशी शिक्षा उन बाधाओं को तोड़ने में मदद करती है जो अक्सर विकलांग और बिना विकलांग छात्रों के बीच मौजूद होती हैं। यह बदले में, स्कूल समुदाय के सभी सदस्यों के बीच समुदाय और समझ की भावना को बढ़ावा देता है। समावेशी शिक्षा विकलांग छात्रों को अपने साथियों से सीखने की अनुमति भी देती है, जिससे उन्हें शैक्षणिक और सामाजिक रूप से लाभ हो सकता है।

सहपाठियों के बीच दोस्ती और बंधन बनाता है (Builds Friendships and Bonds Between Classmates)

समावेशी शिक्षा सहपाठियों को एकदूसरे के- साथ बंधन और दोस्ती बनाने में मदद करती है। सभी छात्रों को एक ही कक्षा में रखने से, चाहे उनकी योग्यताएँ कुछ भी हों, सहपाठियों को एकदूसरे को बेहतर - दूसरे से सीख सकते हैं-तरीके से जानने का अवसर मिलता है। वे एक, अनुभव साझा कर सकते हैं और

दोस्त बना सकते हैं। यह लोगों के विभिन्न समूहों के बीच मौजूद बाधाओं और पूर्वाग्रहों को तोड़ने में मदद कर सकता है।

छात्रों को स्कूल के बाद के जीवन के लिए तैयार करता है(Prepares Students for Life After School)

समावेशी शिक्षा छात्रों को विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों के साथ विभिन्न सेटिंग्स में सीखने की अनुमति देकर स्कूल के बाद के जीवन के लिए तैयार करती है। यह उन्हें वास्तविक दुनिया के लिए तैयार करता है, जहाँ वे सभी क्षेत्रों के लोगों से मिलेंगे। समावेशी शिक्षा छात्रों को यह सीखने में भी मदद करती है कि कैसे एक साथ काम करना है और दूसरों के मतभेदों का सम्मान करना है। यह एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल है जो उन्हें अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफल होने में मदद करेगा।

पूरे स्कूल समुदाय को लाभ(Benefits the Whole School Community)

समावेशी शिक्षा पूरे स्कूल समुदाय को अधिक सहिष्णु और समझदार माहौल बनाकर लाभ पहुँचाती है। जब सभी छात्रों को कक्षा में शामिल किया जाता है, तो यह सामाजिक बाधाओं को तोड़ने और समुदाय की भावना को बढ़ावा देने में मदद करता है। समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को एकदूसरे से सीखने का - अवसर भी देती है और सहानुभूति और करुणा विकसित करन ◌े में मदद करती है। सीखने की प्रक्रिया में सभी छात्रों को शामिल करके, हम उन्हें एकदूसरे का सम्मान करना और उन्हें वैसे ही स्वीकार करना - सिखा रहे हैं जैसे वे हैं। यह एक मूल्यवान सबक है जो उन्हें जीवन भर लाभान्वित करेगा।

छात्रों में आत्म सम्मान और आत्मविश्वास-में वृद्धि(Increased Self-Esteem and Confidence Among Students)

समावेशी शिक्षा छात्रों में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास में वृद्धि ला सकती है। एक स्वागत योग्य - और सहायक सीखने का माहौल प्रदान करके, समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को उनकी योग्यताओं या मतभेदों की परवाह किए बिना देखा और मूल्यवान महसूस करने में मदद कर सकती है। इससे आत्मविश्वास बढ़ सकता है, क्योंकि छात्र खुद को समुदाय के सक्षम और मूल्यवान सदस्य के रूप में देखते हैं। इसके अतिरिक्त, समावेशी शिक्षा छात्रों को सहानुभूति और सहयोग जैसे सामाजिक और भावनात्मक कौशल विकसित करने में मदद कर सकती है, जो आत्मसम्मान भी बढ़ा सकते हैं। संक्षेप - में, समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को कक्षा के अंदर और बाहर दोनों जगह आत्मविश्वास और मूल्यवान महसूस कराने में सहायक हो सकती है।

छात्रों के बीच बेहतर सामाजिक कौशल (Improved Social Skills Among Students)

समावेशी शिक्षा छात्रों के बीच सामाजिक कौशल में सुधार करने के लिए पाई गई है। ऐसा इसलिए है क्योंकि समावेशी शिक्षा यह सुनिश्चित करती है कि सभी छात्रों को, उनकी क्षमता की परवाह किए बिना,

मुख्यधारा की कक्षा में सीखने की अनुमति दी जाए। समावेशी शिक्षा विभिन्न क्षमता स्तरों के छात्रों के बीच अधिक महत्वपूर्ण बातचीत की भी अनुमति देती है, जो बाधाओं और गलत धारणाओं को तोड़ने में मदद करती है। नतीजतन, समावेशी शिक्षा कार्यक्रमों में छात्रों के पास उन लोगों की तुलना में बेहतर सामाजिक कौशल होते हैं जो समावेशी शिक्षा कार्यक्रमों में नहीं हैं। इसके अलावा, समावेशी शिक्षा छात्रों के बीच समुदाय की भावना को बढ़ावा देती है, क्योंकि वे सभी एक सामान्य लक्ष्य की दिशा में मिलकर काम करते हैं।

स्कूलों में विविधता का स्वागत करता है (Welcomes Diversity Within Schools)

समावेशी शिक्षा सभी छात्रों के लिए एक सुरक्षित और सहायक वातावरण प्रदान करके स्कूलों में विविधता का स्वागत करती है। समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को यह महसूस कराती है कि उन्हें स्वीकार किया जाता है, उनका सम्मान किया जाता है और उन्हें उनके व्यक्तित्व के लिए महत्व दिया जाता है। यह शिक्षा दृष्टिकोण एक अधिक सकारात्मक और समावेशी स्कूल वातावरण बनाने में मदद करता है, जो सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि सभी छात्रों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने का अवसर मिले|

बेहतर शैक्षणिक परिणाम(Improved Academic Outcomes)

समावेशी शिक्षा से विकलांग और बिना विकलांग छात्रों के बीच शैक्षणिक परिणामों में सुधार पाया गया है। नेशनल सेंटर फॉर एजुकेशन स्टैटिस्टिक्स द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि औसतन, समावेशी सेटिंग्स में छात्र मानकीकृत परीक्षणों पर अलगअलग सेटिंग्स में छात्रों की तुलना में बेहतर - प्रदर्शन करते हैं। यह इस तथ्य के कारण हो सकता है कि समावेशी सेटिंग्स छात्रों को अधिक विविध सीखने का अनुभव प्रदान करती हैं, जो उन्हें अलगसे अलग ताकत और कमजोरियों वाले सहपाठियों- सीखने और बातचीत करने की अनुमति देती है।

बदमाशी और उत्पीड़न को कम करने में मदद करें(Help to Reduce Bullying and Harassment)

समावेशी शिक्षा सभी छात्रों के लिए एक सुरक्षित और स्वागत करने वाला माहौल बनाकर स्कूलों में बदमाशी और उत्पीड़न को कम करने में मदद कर सकती है। यह सुनिश्चित करके कि सभी छात्र स्कूल समुदाय में स्वागत और शामिल महसूस करते हैं, समावेशी शिक्षा बदमाशी और उत्पीड़न को रोकने में मदद कर सकती है। इसके अलावा, समावेशी शिक्षा उन छात्रों को सहायता प्रदान करने में भी मदद कर सकती है जो बदमाशी या उत्पीड़न के शिकार हुए हैं। छात्रों को मदद के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करके, समावेशी शिक्षा छात्रों के जीवन पर बदमाशी और उत्पीड़न के नकारात्मक प्रभाव को कम करने में मदद कर सकती है|

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को नियमित कक्षाओं में रखना समावेशी शिक्षा का केवल एक पहलू है; दूसरा पहलू सभी के लिए पूरी शैक्षिक प्रक्रिया को बदलना है। यह छात्रों को उस अविश्वसनीय रूप से विविध दुनिया के लिए तैयार करता है जिसमें हम रहते हैं, समानता को बढ़ावा देता है, और करुणा सिखाता है। समावेशी शिक्षा को अपनाने से पूरे कक्षा समुदाय को लाभ होता है, न कि केवल कुछ चुनिंदा छात्रों को। यह अलगअलग चीजों -अलग फूलों से भरा बगीचा लगाने जैसा है। उन्हें कुछ अलग-की आवश्यकता होती है, लेकिन जब उनकी एक साथ देखभाल की जाती है, तो वे सभी खिलते हैं।

6.8 समावेशी शिक्षा के सिद्धांत

स्कूली शिक्षा में समावेश के सिद्धांत हैं

- छात्रों के साथ कोई भेदभाव नहीं
- कक्षा की दिनचर्या में सभी को समान शैक्षिक अवसर
- स्कूल छात्रों की ज़रूरतों के हिसाब से खुद को ढालता है
- सभी छात्रों के लिए समान शैक्षिक लाभ
- छात्रों के विचारों को सुना जाता है और उन्हें गंभीरता से लिया जाता है
- छात्रों के बीच व्यक्तिगत अंतर समृद्धि और विविधता का स्रोत है, न कि कोई समस्या।

6.9 समावेशी शिक्षा में सीडब्लूएसएन के सामने आने वाली समस्याएं

1. हीन भावना
2. समझ की कमी
3. समायोजन की समस्या
4. अलगथलग-थलग और अलग-
5. निर्देशों का पालन करने में पिछड़ जाना
6. अतिरिक्त बोझ की भावना
7. असुरक्षा
8. अभिव्यक्ति की कमी
9. अंतर्मुखी स्वभाव
10. नकारात्मक दृष्टिकोण
11. शर्मीलापन

6.10 समावेशी कक्षाओं में शिक्षण के सिद्धांत

समावेशी व्यवस्था में CWSN को पढ़ाने के लिए विशिष्ट सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक है:
समानता से अधिक समानता व्यक्तिगत :आवश्यकता के आधार पर सहायता के विभिन्न स्तर प्रदान करना।
बालप्रत्येक शिक्षार्थी की रुचियों :केंद्रित शिक्षाशास्त्र-, क्षमताओं और गति पर ध्यान केंद्रित करना।
शिक्षण के लिए सार्वभौमिक डिजाइन)UDL): एक लचीला ढांचा जो सभी शिक्षण शैलियों को समायोजित करता है।
सहयोग और टीमवर्कशिक्षक :, विशेष शिक्षक, मातापिता और चिकित्सक एक साथ काम करते हैं।-

6.11 कक्षा में CWSN को समझना

CWSN में निम्नलिखित शिक्षार्थी शामिल हो सकते हैं:
शारीरिक विकलांगता
बौद्धिक और विकासात्मक विकलांगता
संवेदी विकलांगता (श्रवण या दृष्टि)
ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार)ASD)
सीखने की अक्षमता जैसे), डिस्लेक्सिया, डिस्केल्कुलिया(
व्यवहारिक और भावनात्मक कठिनाइयाँ
इनमें से प्रत्येक बच्चे को उसकी ताकत और चुनौतियों के आधार पर एक अनुकूलित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

6.12 सी डब्ल्यू एसएन को पढ़ाने की पद्धति

भारत में समावेशी शिक्षा)Inclusive Education) के तहत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों)CWSN) के लिए शिक्षण विधियों को उनके विविध शैक्षणिक और शारीरिक आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जाता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी बच्चे समान अवसरों के साथ शिक्षा प्राप्त करें, निम्नलिखित प्रमुख शिक्षण विधियाँ अपनाई जाती हैं:

- **मूल्यांकन और योजना**

प्रारंभिक मूल्यांकन बच्चे की ज़रूरतों को समझने के लिए नैदानिक :और कार्यात्मक मूल्यांकन।
व्यक्तिगत शिक्षा योजना लक्ष्यों :(आईईपी), समायोजन और शिक्षण रणनीतियों की रूपरेखा तैयार करने वाली एक संरचित योजना।

- **विभेदित निर्देश**

शिक्षक समायोजित करते हैं:

सामग्रीपाठ्यक्रम सामग्री को सरल या समृद्ध बनाना। :

प्रक्रियादृश्य सहायता - विभिन्न निर्देशात्मक विधियों का उपयोग करना :, कहानी सुनाना, हाथों से किए जाने वाले कार्य।

उत्पादछात्रों को कई तर :ीकों से सीखने को दिखाने की अनुमति देना मौखिक प्रस्तुतियाँ -, मॉडल, पोर्टफोलियो।

पर्यावरणपहुँच के लिए भौतिक स्थान को संशोधित करना। :गणित की अवधारणाओं को चित्रों, कहानी और खेलों के माध्यम से प्रस्तुत करना।

- **निर्देशात्मक रणनीतियाँ**

बहुदृश्य :संवेदी शिक्षण-, श्रवण और गतिज सीखने का संयोजन।

कार्य विश्लेषणजटिल कार्यों को प्रबंधनीय चरणों में तोड़ना। :

स्कैफ़ोल्डिंगधीरे हटा दी जाती है।-सहायता प्रदान करना जो छात्र के स्वतंत्र होने पर धीरे :

आईसीटी उपकरणों का उपयोगस्पीच-टू-टेक्स्ट :, ऑडियोबुक और अनुकूली सॉफ्टवेयर।

- **कक्षा प्रबंधन तकनीक**

पूर्वानुमानित दिनचर्या और दृश्य कार्यक्रम

सकारात्मक व्यवहार सुदृढ़ीकरण

सहकर्मी सलाह और सहकारी शिक्षा

सुरक्षित और लचीली बैठने की व्यवस्था

- **शिक्षकों और अभिभावकों का क्षमता निर्माण (Capacity Building of Teachers and Parents)**

शिक्षकों और अभिभावकों को समावेशी शिक्षा के लिए प्रशिक्षित करना।

उदाहरण: कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से जागरूकता और कौशल विकास।

- **समावेशी खेल और शारीरिक शिक्षा (Inclusive Play and Sports)**

सभी छात्रों के लिए अनुकूल खेल और शारीरिक गतिविधियाँ।

उदाहरण: अनुकूलित खेलों के माध्यम से टीम वर्क और आत्मविश्वास को बढ़ावा देना।

- **मल्टी-सेंसरी शिक्षण (Multi-Sensory Teaching)**

एक साथ कई इंद्रियों का उपयोग करके शिक्षण करना।

उदाहरण: बालकों को वर्णमाला सिखाने के लिए स्पर्श, श्रवण और दृश्य सामग्री का संयोजन।

. व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP)

- प्रत्येक CWSN के लिए एक व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना तैयार करना।
- **उदाहरण**: विशेष आवश्यकताओं के अनुसार लक्ष्यों और शिक्षण विधियों का निर्धारण।

6.13शिक्षण युक्तियाँ और रणनीतियाँ

नेशनल सेंटर फॉर लर्निंग डिसएबिलिटीज़(NCDL)द्वारा प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार, हर पाँच में से एक बच्चे को सीखने या ध्यान केंद्रित करने में कोई न कोई कठिनाई होती है, जो उनके कक्षा में सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है। इसलिए, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों)CWSN) का सहयोग करना अब मातापिता और शिक्षकों दोनों की ज़ि-म्मेदारी बन गई है।

यहाँ कुछ सरल उपाय दिए गए हैं, जिन्हें शिक्षक अपनाकर ऐसे बच्चों के लिए सीखने के अनुभव को बेहतर बना सकते हैं:

- **कक्षामेंसकारात्मकवातावरणबनाएं**
  यदि शिक्षक छात्रों की समग्र सफलता में योगदान देना चाहते हैं, तो उन्हें कक्षा में स्वागतयोग्य माहौल बनाना चाहिए। छात्रों को सुरक्षित और सहज महसूस कराना बहुत जरूरी है। साथ ही, हर छात्र को यह महसूस कराना चाहिए कि वे मूल्यवान हैं और पूरी कक्षा एक टीम के रूप में मिलकर एकदूसरे की मदद करेगी।-
- **छात्रोंकोउनकेसीखनेमेंसहयोगदें**
  छात्रों को समर्थन देना और उन्हें उपयुक्त संसाधन उपलब्ध कराना उनके सीखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों)CWSN) के सीखने की प्रक्रिया में हर कदम पर उनका सहयोग करना चाहिए। स्कैफोल्डिंग जैसी तकनीकों और उपयुक्त शिक्षण सामग्री का प्रयोग करके, शिक्षक सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी छात्र सीख रहें हैं और आगे बढ़ रहें हैं।
- **पाठयोजनाएंसमावेशीऔरसंरचितबनाएं**
  विकलांग छात्रों के लिए अलग पाठ योजना बनाने के बजाय, शिक्षकों को ऐसी संरचित योजना बनानी चाहिए जो सभी छात्रों के लिए समान हो। इससे सामान्य छात्र यह समझ पाएंगे कि विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों को किन संघर्षों का सामना करना पड़ता है।
- **स्पष्टरूपसेसंवादकरें**
  विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों को पढ़ाते समय संवाद बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सत्र की शुरुआत में ही शिक्षकों को अपनी अपेक्षाएं छात्रों और उनके मातापिता से स्पष्ट रूप - से साझा करनी चाहिए। इसके अलावा, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र यह समझें कि होमवर्क या असाइनमेंट के लिए उन्हें कैसे तैयारी करनी है।

- **विकलांग और सामान्य छात्रों को एक साथ समूह मेंरखें**
  शिक्षकों को कक्षा को अलग अलग समूहों में-नहीं बांटना चाहिए, बल्कि विकलांग और सामान्य छात्रों को एक साथ समूहों में रखना चाहिए। इससे सामान्य छात्रों को यह समझने में मदद मिलेगी कि CWSN किन कठिनाइयों का सामना करते हैं। साथसाथ सीखने और बढ़ने - से उनमें सहानुभूति भी विकसित होगी।
- **सभीछात्रोंकोसमानअसाइनमेंट दें**
  यह दिखाने के लिए कि विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र भी अपने साथियों के समान स्तर पर हैं, शिक्षकों को सभी छात्रों को एक जैसा असाइनमेंट देना चाहिए। अलगअलग प्रोजेक्ट - देने के बजाय, एक ही विषय पर कार्य दिया जाए और विकलांग छात्रों को उनके अनुसार उस कार्य को पूरा करने में मदद की जाए।
- **सभीछात्रोंकेलिएसंसाधनबनाएं**
  शिक्षकों को कक्षा में समावेशी माहौल बनाना चाहिए। बड़े अक्षरों की किताबें और थेरेपी सेवाएं सभी छात्रों को प्रदान करके वे यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि अंतर कम महसूस हों।
- **एकसमावेशीशिक्षणवातावरण का निर्माण**
  विशेष ध्यान और देखभाल की आवश्यकता वाले छात्रों के विकास के लिए समावेशी शिक्षण वातावरण का निर्माण अत्यंत आवश्यक है। कक्षा में छोटेछोटे बदलाव करके शिक्षक छात्रों - को सहारा दे सकते हैं। साथ ही, उन्हें अन्य छात्रों को यह समझने के लिए प्रेरित करना चाहिए कि विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की ज़रूरतें क्या हैं और उन्हें किस प्रकार सहयोग किया जा सकता है।

6.14 विशेष शिक्षा शिक्षक की भूमिका

विशेष शिक्षा शिक्षक शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, यह सुनिश्चित करके कि विकलांग, सीखने में अंतर और विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों को अकादमिक और सामाजिक रूप से सफल होने के लिए आवश्यक सहायता और समायोजन मिले। ये समर्पित शिक्षक विविध क्षमताओं वाले छात्रों की अनूठी सीखने की चुनौतियों का समाधान करने के लिए विशेष प्रशिक्षण और विशेषज्ञता से लैस हैं। समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देकर, वे प्रत्येक छात्र को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने और अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने में सक्षम बनाते हैं। विशेष शिक्षा शिक्षकों का प्रभाव कक्षा से परे भी जाता है, क्योंकि वे मातापिता-, प्रशासकों और अन्य पेशेवरों के साथ मिलकर व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ बनाते हैं और छात्रों के विकास के लिए निरंतर सहायता प्रदान करते हैं।

शैक्षिक सेटिंग्स में भूमिका

विशेष शिक्षा शिक्षक अत्यधिक प्रशिक्षित पेशेवर होते हैं जो विकलांग, सीखने में अंतर और विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों को व्यक्तिगत सहायता और निर्देश प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते

हैं। ये समर्पित शिक्षक विभिन्न शैक्षिक सेटिंग्स में काम करते हैं, जिनमें सार्वजनिक और निजी स्कूल, विशेष शिक्षण केंद्र और समावेश कक्षाएँ शामिल हैं। उनका प्राथमिक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक छात्र, चाहे उनके सीखने में अंतर और चुनौतियाँ कुछ भी हों, उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शैक्षणिक और सामाजिक विकास के अवसरों तक समान पहुँच मिले।

विशेष शिक्षा शिक्षक छात्रकेंद्रित दृष्टिकोण अपनाते हैं-, प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निर्देश और समायोजन तैयार करते हैं। वे व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम)IEP) विकसित करने और लागू करने के लिए छात्रों, अभिभावकों, सामान्य शिक्षा शिक्षकों और अन्य विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम करते हैं। ये व्यक्तिगत योजनाएँ छात्र की शैक्षिक यात्रा को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए आवश्यक विशिष्ट शिक्षण लक्ष्यों, सेवाओं और समायोजनों की रूपरेखा तैयार करती हैं। इसके अतिरिक्त, विशेष शिक्षा शिक्षक छात्रों के साथ छोटे समूहों में या एकएक आधार पर काम कर -से- सकते हैं, शैक्षणिक, व्यवहारिक और सामाजिकभावनात्मक आवश्यकताओं- को संबोधित करने के लिए विशेष निर्देश और हस्तक्षेप प्रदान कर सकते हैं।

6.15 सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, में उच्च गुणवत्ता वाली समतामूलक और समावेशी शिक्षा प्रदान 2020 करके भारत को बदलने का एक दृष्टिकोण है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि विविध सीखने की ज़रूरतों वाले सभी छात्र अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए समावेशी वातावरण में समान सीखने के अवसरों के साथ शिक्षा प्रणाली में सफल हो सकें।

समावेशी शिक्षा एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण है जो हर बच्चे के अधिकार को मान्यता देता है, चाहे उसकी योग्यता या विकलांगता कुछ भी हो, उसे एक सामान्य शिक्षण वातावरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। यह समानता, पहुंच और भागीदारी पर जोर देता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे न केवल कक्षाओं में मौजूद हों, बल्कि सार्थक रूप से शामिल और समर्थित भी हों।समावेशी कक्षाओं के संबंध में“, CWSN के शैक्षिक अनुभवों को समृद्ध करना शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक एकीकरण और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने के लिए सर्वोपरि है। शोधकर्ताओं ने CWSN की भागीदारी और सफलता को बढ़ाने के लिए अनुकूली पाठ्यक्रम से लेकर शिक्षक पेशेवर विकास तक विभिन्न रणनीतियों की खोज की है।हॉकिन्स-फ्लोरियन और ब्लैक)", 2011; सालेंड, (2005।

समावेशी शिक्षा के निम्न लाभ हैं-

- समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को एक ऐसा सीखने का माहौल प्रदान करके लाभान्वित करती है जो प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरा करता है।
- समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को, चाहे उनकी क्षमता कुछ भी हो, एक सीखने के माहौल में एक साथ लाकर स्वीकृति और समझ की संस्कृति बनाने का प्रयास करती है। ऐसा करके, समावेशी शिक्षा उन बाधाओं को तोड़ने में मदद करती है जो अक्सर विकलांग और बिना विकलांग छात्रों के बीच मौजूद होती हैं।
- समावेशी शिक्षा सहपाठियों को एकदूसरे के साथ बंधन और दोस्ती बनाने में मदद करती है। - समावेशी शिक्षाछात्रों को विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों के साथ विभिन्न सेटिंग्स में सीखने की अनुमति देकर स्कूल के बाद के जीवन के लिए तैयार करती है।
- समावेशी शिक्षा पूरे स्कूल समुदाय को अधिक सहिष्णु और समझदार माहौल बनाकर लाभ पहुँचाती है।
- समावेशी शिक्षा छात्रों में आत्मसम्मान आत्मविश्वास में वृद्धि ला सकती है। एक स्वागत योग्य और सहायक सीखने का माहौल प्रदान करके, समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को उनकी योग्यताओं या मतभेदों की परवाह किए बिना देखा और मूल्यवान महसूस करने में मदद कर सकती है। इससे आत्मविश्वास बढ़ सकता है, क्योंकि छात्र खुद को समुदाय के सक्षम और मूल्यवान सदस्य के रूप में देखते हैं।
- समावेशी शिक्षा छात्रों के बीच सामाजिक कौशल में सुधार करने के लिए पाई गई है।
- समावेशी शिक्षा सभी छात्रों के लिए एक सुरक्षित और सहायक वातावरण प्रदान करके स्कूलों में विविधता का स्वागत करती है।
- समावेशी शिक्षा से विकलांग और बिना विकलांग छात्रों के बीच शैक्षणिक परिणामों में सुधार पाया गया है।
- समावेशी शिक्षा सभी छात्रों के लिए एक सुरक्षित और स्वागत करने वाला माहौल बनाकर स्कूलों में बदमाशी और उत्पीड़न को कम करने में मदद कर सकती है।

6.16 निबंधात्मक प्रश्न

1. समावेशी शिक्षा की अवधारणा स्पष्ट कीजिए|
2. सीडब्ल्यूएसएन को पढ़ाने की पद्धतियों का वर्णन कीजिए|
3. समावेशी शिक्षा के लाभ बताइए|

6.17 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- NCERT Inclusive Education Handbook
- UDL Guidelines (CAST, 2018)

- RPwD Act, 2016 text
- समग्र शिक्षा योजना: Samagra Shiksha
- समावेशी शिक्षा के लिए दिशानिर्देश: Inclusive Education Guidelines
- CWSN के लिए ई:सामग्री- Diksha - CWSN
- National Center for Learning Disabilities

- CERT. (2014). *Including Children with Special Needs: Primary Stage*. New Delhi: NCERT.
- Government of India. (2016). *Rights of Persons with Disabilities Act, 2016*.
- UNESCO. (2009). *Policy Guidelines on Inclusion in Education*. Paris: UNESCO.
- Tomlinson, C. A. (2014). *The Differentiated Classroom: Responding to the Needs of All Learners*. ASCD.
- CAST. (2018). *Universal Design for Learning Guidelines version 2.2*. Wakefield, MA: CAST.
- Mittler, P. (2000). *Working Towards Inclusive Education: Social Contexts*. David Fulton Publishers.
- NCTE (2014). *B.Ed. Curriculum Framework*. New Delhi: National Council for Teacher Education.
- Learning For All: Equitable and Inclusive Education | Ministry of Education, GoI

इकाई 7. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक समस्याएँ

इकाई संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिकभावनात्मक- आवश्यकताओं का महत्त्व

7.4 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिकभावनात्मक- आवश्यकताओं की उत्पत्ति

7.5 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिकभावनात्मक-समस्याएँ

7.6 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की व्यावहारिकसमस्याएँ

7.7 अध्यापक एवं माता पिता की भूमिका

7.8 परामर्शदाता की भूमिका

7.9 सारांश

7.10 शब्दावली

7.11 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

7.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

7.13 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में हम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं के बारे में अध्ययन करेंगे। इन आवश्यकताओं के महत्व और इन व्यक्तियों में सामाजिक-भावनात्मक वश्यकताओं से संबंधित समस्याओं के उभरने के उपायों पर चर्चा करेंगे साथ ही सामाजिक-भावनात्मक विकास के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं से निपटने में मदद करने में माता-पिता, शिक्षकों और परामर्शदाताओं की भूमिका का भी वर्णन करेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न कार्य कर सकेंगे :

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं को समझ पायेंगे|
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामने आने वाली सामाजिक-भावनात्मक चुनौतियों को समझ पायेंगे|
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामने आने वाली सामाजिक-भावनात्मकसमस्याओं की उत्पत्ति को समझ पायेंगे|
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के भावनात्मक कल्याण, सामाजिक समावेशन और सकारात्मक पारस्परिक विकास को समर्थन देने के लिए रणनीतियों का पता लगा पायेंगे|
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों **की** सामाजिक-भावनात्मक **समस्याओं को नियंत्रित करने में** शिक्षक, माता पिता एवं परामर्शदाता की भूमिका को समझ पायेंगे|

7.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं का महत्त्व

प्रारंभिक वर्षों में सकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक विकास आजीवन विकास और सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। सामाजिक विकास से तात्पर्य एक बच्चे की वयस्कों और अन्य बच्चों के साथ सार्थक संबंध बनाने और बनाए रखने की क्षमता से है।

इसके अंतर्गत सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं को देखने का एक तरीका संदर्भ मास्लो (1954) द्वारा तैयार किया गया है|उनके मॉडल के अनुसार, उच्च क्रम की आवश्यकताएं जैसे अपनापन, प्रेम, आत्म-सम्मान और आत्म-बोध केवल तभी प्राप्त किया जा सकता है जब अधिक शक्तिशाली शारीरिक और सुरक्षा आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँ। उच्च क्रम की आवश्यकताओं में भी, उपलब्धि की आवश्यकता ,आत्म-बोध की ओर ले जाने वाला प्रत्येक स्तर पिछले स्तर की संतुष्टि पर निर्भर करता है. जिस प्रकार शारीरिक आवश्यकताओं और स्वास्थ्य की संतुष्टि जीवित रहने के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार भावनात्मक और सामाजिकविकास बच्चे के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बच्चे का मनोवैज्ञानिक विकास उसके जीवन में महत्वपूर्ण लोगों द्वारा प्यार या स्वीकार किए जाने की भावना से प्रेरित होता है जैसे कि उत्तेजित और सक्रिय होना।

शारीरिक और भावनात्मक सुरक्षा विश्वास के विकास के लिए एक आधार प्रदान करती है, जो बच्चे को पर्यावरण के पहलुओं का पता लगाने और जांचने और स्वयं की भावना विकसित करने की दिशा में प्रयास करने की अनुमति देती है। वैसे भी, विकलांग व्यक्तियों को अपनी विकलांगता के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनकी सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों पर ध्यान न देने से उनकी समस्याएं बढ़ सकती हैं। इसलिए यह आवश्यक है उनकी सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं को समझा जाय ताकि वे अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकें|

7.4 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिकभावनात्मक-समस्याओं की उत्पत्ति

किसी भी प्रकार की बाधा समाज में किसी व्यक्ति की गतिशीलता को कई तरीकों से सीमित करने के लिए पर्याप्त है।

एक विकलांग व्यक्ति की समाज में भूमिका, स्थिति और व्यवहार समाज के अन्य सदस्यों द्वारा दिखाया गया पारस्परिक व्यवहार, प्रभाव निर्माण, पसंद आदि से बहुत प्रभावित होता है।

सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रियाएँ, नकारात्मक या शत्रुतापूर्ण प्रतिक्रियाएँ या दूसरों द्वारा दिखाए गए व्यवहार में उदासीनता विकलांग व्यक्तियों के समाज के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक दुनिया में अलगाव, कुसमायोजन और गैर-भागीदारी होती है। विकलांगता वास्तव में एक चिकित्सीय मामला नहीं है, यह सामाजिक सरोकार का भी क्षेत्र है।

विकलांग व्यक्ति कुछ ऐसे कार्य नहीं कर सकते जिनकी सामान्य उपलब्ध समय में अपेक्षा की जाती है। वे आसपास के समाज द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रदर्शन के मानकों और व्यवहार के तरीकों को बरकरार नहीं रख पाते हैं ।

यह अक्षमता असुविधा और 'नजरअंदाज़ किए जाने' की भावना का कारण बन सकती है और व्यक्ति का आत्मसम्मान कम हो जाता है। यह कम आत्मसम्मान हीनता की भावना को जन्म देता है। लेकिन अगर विकलांग व्यक्तियों को उनके परिवार, अन्य लोग (जो उनके निकट संपर्क में हैं) द्वारा सम्मान दिया जाता है और उनके साथ व्यवहार किया जाता है विशेषकर उनके प्रारंभिक वर्षों के दौरान, तो यह उनकी 'स्वयं छवि' स्वयं के बारे में उनका चेतन और अवचेतन दृष्टिकोण पर सकारात्मक रूप से प्रभाव डालता है।

बार-बार असफलता का सामना करने पर एक बच्चा निराश महसूस करेगा. किसी भी बच्चे में, सफल गतिविधियाँ मनोबल और आत्मविश्वास का निर्माण करती हैं, जबकि असफल गतिविधियाँ प्रयास करने पर मान्यता या पुरस्कार न मिलने से उसका आत्मविश्वास कम हो जाता है जो आगे चलकर भविष्य की सफलता को प्रभावित कर सकता है|

माता पिता भी बच्चों की तुलना करते हैं विकलांग बच्चे को लगता है कि वह माता पिता की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पा रहा है इस प्रकार निम्न आत्म विश्वास के कारण खराब आत्म छवि बना लेता है|

भावनात्मक विकलांगता

भावनात्मक विकलांगता अक्सर उस विकलांगता से संबंधित होती है जो किसी व्यक्ति की दूसरों के साथ पारस्परिक संबंध बनाए रखने या बनाने की क्षमता को रोकती है। उन्हें अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में भी संघर्ष करना पड़ सकता है और वे अक्सर अपने जीवन में दुखी महसूस करते हैं। इसका मतलब यह है कि वे अक्सर सामान्य परिस्थितियों में अनुचित तरीके से कार्य करते हैं, या विशेष रूप से व्यक्तिगत मामलों के संबंध में भय या चिंता की भावनाओं से पीड़ित होते हैं।

शारीरिक विकलांगता

शारीरिक विकलांगता एक ऐसी स्थिति है जो किसी व्यक्ति की शारीरिक क्षमताओं, सहनशक्ति, गतिशीलता और उनके चलने और हाथों का उपयोग करने की क्षमता को प्रभावित करती है। कई स्पष्ट शारीरिक विकलांगताएं हैं, लेकिन मिर्गी जैसी स्थिति भी एक शारीरिक विकलांगता है।

संज्ञानात्मक चुनौतियाँ:

संज्ञानात्मक चुनौतियों वाले बच्चों में डाउन सिंड्रोम या ऑटिज़्म जैसी स्थितियाँ हो सकती हैं। ये स्थितियाँ सूचना को संसाधित करने, प्रभावी ढंग से संचार करने और दैनिक कार्यों को स्वतंत्र रूप से करने की उनकी क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं

सीखने की अयोग्यता :

डिस्लेक्सिया और डिस्कैल्कुलिया जैसी सीखने की अक्षमताएं बच्चों के लिए औसत या औसत से अधिक बुद्धि होने के बावजूद विशिष्ट शैक्षणिक कौशल हासिल करना मुश्किल बना देती हैं। इन बच्चों को अक्सर व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाओं और सहायता की आवश्यकता होती है।

7.5 **विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिक) भावनात्मक समस्याएँ-**Socio-Emotional Problems of children with special needs**(**

कलंक एवं निष्कासन)Stigmatization and Withdrawal(

किसी भी प्रकार की विकलांगता से जुड़े कलंक के कारण, विकलांग व्यक्तियों को समाज द्वारा मान्यता नहीं दी जाती है, समाज में लोग विकलांग व्यक्ति की योग्यता के बजाय उसकी अक्षमताओं को उजागर करने पर ज्यादा ध्यान देते हैं|परिणाम स्वरुप विकलांग व्यक्ति पीछे हट जाते हैं समुदाय सी अलग थलग हो जाते हैं|

कलंक की स्थिति प्रत्येक देश व स्थान में अलग अलग है भारत में तुलनात्मक रूप से सामाजिक कलंक अधिक है|विकलांगता के प्रति समाज की अज्ञानता के कारण इनको स्वीकार न किया जा सकता हैविकलांगताओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव को अभी भी उपेक्षित किया जाता है जिस कारण विकलांग अभी भी अलगाव और हताशा के जीवन के लिए अभिशप्त हैं।

कलंक के कारण विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों में आत्मविश्वास बढाने वाली गतिविधियों से बहिष्कार हो सकता है जैसे खेल, नेतृत्वकारी भूमिकाएं, या चुनौतीपूर्ण शैक्षणिक कार्य।

वयस्कों पर निर्भरता(Dependency in adult)

बातचीत के लिए शिक्षकों, माता-पिता या सहायकों पर अधिक निर्भर हो सकते हैं साथ ही स्वतंत्र सामाजिक निर्णय लेने में कठिनाई होती है|

संवेगात्मक समस्याएं(Emotional problems)

CWSN का मतलब है विशेष आवश्यकता वाले बच्चे। इन बच्चों को अपनी अनूठी चुनौतियों और जिस वातावरण में वे रहते हैं, उसके कारण विभिन्न भावनात्मक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। विकलांगता के प्रकार (शारीरिक, बौद्धिक, विकासात्मक, संवेदी, आदि) के आधार पर भावनात्मक मुद्दे व्यापक रूप से भिन्न हो सकते हैं, लेकिन कुछ सामान्य भावनात्मक समस्यायें इस प्रकार हैं:

अंतर्वैक्तिक संबंधों एवं सामाजिक समायोजन में समस्या (Problems in interpersonal relations and Social Adjustment)

विशेषआवश्यकता वाले बच्चों के माता पिता के बीच निरंतर निराशा और अस्वीकृति का माहौल विवाद का कारण बन सकता है, जो अक्सर एक-दूसरे को कमियों के लिए दोषी ठहराते हैं। माता-पिता के बीच मतभेद और विकलांग व्यक्तियों के प्रति भाइयों और बहनों की अनिच्छा विकलांग व्यक्ति की अस्वीकृति की भावना को और तीव्र बना देती है, संतोषजनक वयस्क संबंध काफी हद तक पूर्व संतोषजनक संबंध (माँ और बच्चे) पर निर्भर करते हैं। पूर्व में आपसी तालमेल विकसित नहीं होने से बाद में समायोजन की समस्या पैदा होती हैं। दूसरों से वंचितता और दुर्व्यवहार के कारण विकलांग व्यक्ति चिड़चिड़ापन, गुस्से का विस्फोट, आक्रामकता के साथ-साथ मूडीपन और भावनात्मक परिवर्तनशीलता जैसे असामाजिक लक्षण प्रदर्शित करते हैं।

संवाद संबंधी समस्याएं (Communication Problem)

संचार संबंधी कठिनाइयाँ सामाजिक अलगाव, हताशा और व्यवहार संबंधी समस्याओं को जन्म दे सकती हैं।

यह शैक्षणिक प्रगति में भी बाधा डाल सकता है और सीखने और विकास के अवसरों को सीमित कर सकता है।ये मुद्दे बच्चे की मजबूत व्यक्तिगत संबंध बनाने की क्षमता को भी प्रभावित कर सकते हैं।

CWSN में संचार समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप महत्वपूर्ण है।भाषण चिकित्सा, भाषा चिकित्सा और व्यावसायिकचिकित्सा बच्चों को उनके संचार कौशल विकसित करने में मदद कर सकती है।संचार उपकरण और दृश्य सहायता जैसी सहायक तकनीक भी फायदेमंद हो सकती है।संचार और बातचीत को बढ़ावा देने वाले सहायक और समावेशी वातावरण बनाना आवश्यक है।यह याद रखना चाहिए कि हर बच्चा अलग होता है और उसकी संचार संबंधी ज़रूरतें अलग-अलग होंगी।

CWSN को संचार संबंधी चुनौतियों से उबरने और अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करने के लिए अनुकूलित दृष्टिकोण और व्यक्तिगत सहायता महत्वपूर्ण है।

नकारात्मक आत्म प्रत्यय (Negative Self-concept)

सामाजिक अस्वीकृति, विकास में देरी और कलंक, ये सभी एक बच्चे के आत्मसम्मान को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं, और जब ये एक दूसरे से मिलते हैं (जो कि अक्सर विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के मामले में होता है), तो प्रभाव और भी ज़्यादा गंभीर हो सकते हैं। साथियों से नकारात्मक ध्यान बच्चे के आत्म-सम्मान को बहुत ठेस पहुंचा सकता है। यह इस विश्वास को मजबूत करता है कि **उसमें कुछ** "गलत" है।

समय के साथ, बार-बार अस्वीकार किए जाने से अलगाव, सामाजिक परिस्थितियों में चिंता, तथा नई चीजों को आजमाने में अनिच्छा पैदा हो सकती है - ये सभी कम तथा नकारात्मक आत्मसम्मान को मजबूत कर सकते हैं।जब बच्चे ऐसे दृष्टिकोण अपना लेते हैं जो उन्हें "कमतर", "कठिन" या "धीमा" बताते हैं, तो वे यह मानने लगते हैं कि ये लेबल सच हैं।सब मिलाकर कम आत्मसम्मान का चक्र बना सकते हैं|इनके संघर्ष को अस्वीकार कर दिया जाता है। वे हीन या शर्मिंदा महसूस करते हैं। वे चुनौतियों या सामाजिक स्थितियों से बचते हैं। वे बढ़ने, सफल होने या प्रशंसा पाने के अवसरों को खो देते हैं।उनका आत्मसम्मान और भी गिर जाता है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की व्यावहारिक समस्याएं (Behavioral Problems of CWSN)

सीडब्ल्यूएसएन में आम व्यवहार संबंधी समस्याएं इस प्रकार हो सकती हैं-

- शारीरिक (मारना, काटना, लात मारना) या मौखिक (चिल्लाना, गाली देना)
- अक्सर हताशा या संवेदी अधिभार की प्रतिक्रिया
- स्वयं को चोट पहुँचाने वाला व्यवहार- सिर पीटना, खुद को काटना या मारना, ऑटिज्म या गंभीर बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों में हो सकता है
- इनका गुस्साअक्सर, तीव्र और सामान्य गुस्से से अधिक समय तक चल सकता है
- अक्सर दिनचर्या में बदलाव या संवाद करने में असमर्थता से ट्रिगर होता है

- अति सक्रियता और असावधानी अक्सर एडीएचडी या सीखने की अक्षमता वाले बच्चों में आम होता है|
- स्थिर रहने, कार्य पूरा करने या निर्देशों का पालन करने में कठिनाई
- नियमों या निर्देशों का पालन करने से इनकार करना
- गलतफहमी या नियंत्रण की इच्छा से हताशा उत्पन्न हो सकता है
- अक्सर ऑटिज्म या भावनात्मक गड़बड़ी साथियों या वयस्कों के साथ बातचीत से बचते हैं|
- शरीर की बार-बार हरकतें या किसी खास विषय पर ध्यान केंद्रित करना, यह ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार वाले बच्चों में खास तौर पर प्रचलित
- अत्यधिक चिंता, भय या टालने वाला व्यवहार
- संवेदी संवेदनशीलता जो पिछले आघात के कारण भी हो सकती है

व्यवहार संबंधी समस्याओं के निम्न कारण हो सकते हैं -

- न्यूरोलॉजिकल या विकासात्मक स्थितियाँ
- संचार संबंधी कठिनाइयाँ
- संवेदी प्रसंस्करण समस्याएँ
- शैक्षणिक या सामाजिक संघर्षों से निराशा
- संरचित वातावरण का अभाव
- असंगत या अनुचित अपेक्षाएँ
- नकरात्मक सहकर्मी

व्यवहार संबंधी समस्याओं का प्रबंधन

- व्यवहार संबंधी समस्याओं के प्रबंधन और सहायता के लिए निम्न रणनीतियाँ

अपनाई जा सकती हैं-

- सकारात्मक व्यवहार का उपयोग किया जाय|
- व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ लागू की जाय|
- स्पष्ट संचार और दिनचर्या को प्रोत्साहित किया जाय|
- संवेदी ब्रेक या सुरक्षित शांत स्थान प्रदान किया जाय|
- संरचना और समझ के लिए दृश्य सहायता को लागू किया जाय|
- बहु-विषयक टीमों (शिक्षक, चिकित्सक, परामर्शदाता) को शामिल किया जाय|

रोजगार में समस्या (Problems in Employment)

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए रोजगार की समस्याओं में सामाजिक दृष्टिकोण, जागरूकता की कमी और अवसंरचनात्मक/रवैया संबंधी बाधाएं शामिल हैं जो रोजगार के अवसरों तक उनकी पहुंच में बाधा डाल सकती हैं।विकलांग व्यक्ति को नौकरी मिलने पर भी कम संतोषजनक लगता है, क्योंकि उसके साथ अवसाद और घबराहट की मानसिक स्थिति होती है!' यह प्रवृत्ति विकलांग व्यक्तियों को रोजगार बाजारों में प्रवेश करने से रोकती है। इससे कई भावनात्मक समस्याएं भी होती हैं।

7.7 अध्यापक एवं माता पिता की भूमिका (Role of parents and teachers)

7.7.1 अध्यापक की भूमिका:

- सुरक्षित और समावेशी माहौल बनाना

कक्षा में विविधता के लिए स्वीकृति और सम्मान को बढ़ावा देना

स्पष्ट अपेक्षाएँ निर्धारित करके और सहानुभूति को बढ़ावा देकर व्यवहार को नियंत्रित करना |

समावेशी समूह गतिविधियों और साथियों के साथ बातचीत को प्रोत्साहित करना

- **भरोसे योग्य सम्बन्ध बनाना**

प्रत्येक बच्चे के साथ मज़बूत, सहायक बंधन विकसित करना

धैर्य, सहानुभूति और निरंतर भावनात्मक समर्थन दिखाना

भावनात्मक संकट या सामाजिक अलगाव के संकेतों के प्रति चौकस रहना

- **सामाजिक कौशल सिखाना**

अध्यापक संरचित कार्यक्रमों या अनौपचारिक शिक्षण का उपयोग करके निम्न कौशल विकसित कर सकते हैं:

बारी-बारी से काम करना

सुनना और उचित तरीके से जवाब देना

सामाजिक संकेतों को समझना

भूमिका निभाने या सहकर्मी सलाह देने वाली गतिविधियों का आयोजन करना

- **भावनात्मक विकास का समर्थन करना**

छात्रों को अपनी भावनाओं को पहचानना और व्यक्त करना सिखाएँ

भावना चार्ट, कहानियाँ या कक्षा चर्चा का उपयोग करना|

उचित भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ और सामना करने की रणनीतियाँ मॉडल तैयार करना|

- **शिक्षण विधियों को अपनाना**

निराशा या चिंता को कम करने के लिए निर्देशों और कार्यों को संशोधित करें

दृश्य सहायता, हाथों से की जाने वाली गतिविधियाँ या संवेदी उपकरणों का उपयोग करें

लगातार प्रतिक्रिया दें और छोटी सफलताओं का जश्न मनाएँ

7.7.2 माता पिता की भूमिका:

- माता पिता घर में प्यार और सहयोग का माहौल बनाएँ।
- धैर्यवान, समझदार और भावनात्मक ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील बनें।
- बच्चों को अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- भावनाओं के बारे में बात करने के लिए कहानियों, खेल या दृश्य उपकरणों का उपयोग करें।
- साथियों या रिश्तेदारों के साथ खेलने या सामाजिक सैर-सपाटे की व्यवस्था करें।
- समूह गतिविधियों या शौक में भागीदारी को प्रोत्साहित करें।
- स्कूल में सिखाए गए सामाजिक और भावनात्मक कौशल का अभ्यास करें।
- भावनात्मक विनियमन और समस्या-समाधान के लिए सुसंगत रणनीतियों का उपयोग करें।
- शिक्षकों और विशेषज्ञों के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करें कि बच्चे की ज़रूरतें पूरी हों।
- ज़रूरत पड़ने पर स्कूल की बैठकों, IEP समीक्षाओं और थेरेपी सत्रों में भाग लें।
- भावनाओं और रिश्तों को प्रबंधित करने के स्वस्थ तरीके दिखाएँ।
- बच्चे अक्सर वयस्कों के व्यवहार की नकल करते हैं, खासकर माता-पिता की उनके सामने रोल मॉडल बनें|

7.8 परामर्शदाता की भूमिका (Role of a guidance counselor)

- परामर्शदाता CWSN को चिंता, कम आत्मसम्मान और हताशा जैसी भावनात्मक कठिनाइयों का प्रबंधन करने में मदद करते हैं। वे एक सुरक्षित स्थान प्रदान करते हैं जहाँ बच्चे अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं और स्वस्थ मुकाबला तंत्र सीख सकते हैं।
- व्यक्तिगत परामर्शदेना ,छात्रों को भावनाओं को पहचानने और व्यक्त करने में मदद करना , स्कूल से संबंधित तनाव को कम करसकते हैं |

- परामर्शदाता सामाजिक कौशल के विकास में सहायता करते हैं, जिसके लिए कई CWSN संघर्ष करते हैं, विशेष रूप से ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार, ADHD, या सीखने की अक्षमता वाले लोगों को। उनका महत्वपूर्ण कार्य है -सामाजिक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना ,समूह परामर्श या सहकर्मी बातचीत गतिविधियों का आयोजन करना ,संघर्ष समाधान और संचार कौशल सिखाना| इसके अतिरिक्त
- सीडब्ल्यूएसएन को अक्सर शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। काउंसलर छात्रों को यथार्थवादी शैक्षणिक लक्ष्य निर्धारित करने में मार्गदर्शन करते हैं और शिक्षकों और अभिभावकों के साथ समन्वय करके यह सुनिश्चित करते हैं कि समायोजन और सहायता प्रणाली मौजूद हैं। सीखने की बाधाओं की पहचान करनाव्यक्तिगत शिक्षा योजनाओं सहायता) करना,समावेशी मूल्यांकन और मूल्यांकन का समर्थन करना आदि कर सकते हैं| साथ ही
- जैसे-जैसे CWSN बड़े होते हैं, परामर्शदाता उन्हें कैरियर के रास्ते तलाशने और उनकी ताकत और रुचियों के आधार पर स्कूल के बाद के जीवन के लिए तैयार होने में मदद करते हैं।
- CWSN के लिए अनुकूलित कैरियर योग्यता परीक्षण, व्यावसायिक प्रशिक्षण सहायता, व्यावसायिक पुनर्वास कार्यक्रम के साथ सहयोग भी इनके द्वारा किया जा सकता है|
- परामर्शदाता स्कूल और घर के बीच सेतु का काम करते हैं। वे माता-पिता और शिक्षकों दोनों को बच्चे की भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षणिक ज़रूरतों को समझने में मदद करते हैं। साथ ही साथ माता-पिता कार्यशालाएँ और शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित करना, व्यवहार हस्तक्षेप रणनीतियाँ प्रदान करना,बाहरी पेशेवरों के साथ सहायता सेवाओं का समन्वय करना का कार्य भी करते हैं|

7.9 सारांश

किसी भी प्रकार की बाधा समाज में किसी व्यक्ति की गतिशीलता को कई तरीकों से सीमित करने के लिए पर्याप्त है।

एक विकलांग व्यक्ति की समाज में भूमिका, स्थिति और व्यवहार समाज के अन्य सदस्यों द्वारा दिखाया गया पारस्परिक व्यवहार, प्रभाव निर्माण, पसंद आदि से बहुत प्रभावित होता है।

किसी भी प्रकार की विकलांगता से जुड़े कलंक के कारण, विकलांग व्यक्तियों को समाज द्वारा मान्यता नहीं दी जाती है, समाज में लोग विकलांग व्यक्ति की योग्यता के बजाय उसकी अक्षमताओं को उजागर

करने पर ज्यादा ध्यान देते हैं|परिणाम स्वरुप विकलांग व्यक्ति पीछे हट जाते हैं समुदाय सी अलग थलग हो जाते हैं|

कलंक के कारण विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों में आत्मविश्वास बढाने वाली गतिविधियों से बहिष्कार हो सकता है जैसे खेल, नेतृत्वकारी भूमिकाएं, या चुनौतीपूर्ण शैक्षणिक कार्य।

इन बच्चों को अपनी अनूठी चुनौतियों और जिस वातावरण में वे रहते हैं, उसके कारण विभिन्न भावनात्मक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।अध्यापकों को इनके लिये सुरक्षित और समावेशी माहौल बनाना चाहिए|, कक्षा में विविधता के लिए स्वीकृति और सम्मान को बढ़ावा देना चाहिए| माता पिता घर में प्यार और सहयोग का माहौल बनाएँ। धैर्यवान, समझदार और भावनात्मक ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील बनें। बच्चों को अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

परामर्शदाता CWSN को चिंता, कम आत्मसम्मान और हताशा जैसी भावनात्मक कठिनाइयों का प्रबंधन करने में मदद करते हैं। वे एक सुरक्षित स्थान प्रदान करते हैं जहाँ बच्चे अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं और स्वस्थ मुकाबला तंत्र सीख सकते हैं।परामर्शदाता स्कूल और घर के बीच सेतु का काम करते हैं। वे माता-पिता और शिक्षकों दोनों को बच्चे की भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षणिक ज़रूरतों को समझने में मदद करते हैं। साथ ही साथ माता-पिता कार्यशालाएँ और शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित करना, व्यवहार हस्तक्षेप रणनीतियाँ प्रदान करना,बाहरी पेशेवरों के साथ सहायता सेवाओं का समन्वय करना का कार्य भी करते हैं|

7.10 शब्दावली

CWSN: Children with special need (विशेष आवश्यकता वाले बच्चे(

Stigma: कलंक

7.11 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. विशेष आवश्यकता वाले बच्चेसामान्य बच्चों से अलग होते हैंगलत/ सही |
2. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में कोई दक्षता नहीं होती हैगलत/ सही |
3. विशेष आवश्यकता वाले बच्चेसामान्य बच्चों में भावनात्मक समस्या नहीं होतीगलत/ सही|

7.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

- Sansosti, F. J., & Powell-Smith, K. A. (2006). Using Social Stories to improve the social behavior of children with Asperger Syndrome. *Journal of Positive Behavior Interventions*, 8(1), 43–57.
- Florian, L., & Black-Hawkins, K. (2011). Exploring inclusive pedagogy. *British Educational Research Journal*, 37(5), 813–828.
- NCERT. (2014). *Including children with special needs: Primary stage*. New Delhi: National Council of Educational Research and Training
- RCI. (2015). *Manual on Inclusive Education*. Rehabilitation Council of India.
- UNICEF India. (2019). *The State of the Education Report for India: Children with Disabilities*.
- MHRD. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Human Resource Development, Government of India.

7.13 निबंधात्मक प्रश्न

1. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में सामाजिक संवेगात्मक समस्याओं की उतपत्ति कैसे होती है?
2. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सामाजिक संवेगात्मक समस्याओं का वर्णन करें|
3. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता पिता की भूमिका का वर्णन करें |
4. टिप्पणी लिखिए:

I. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की व्यावहारिक समस्याएं

II. नकारात्मक आत्म प्रत्यय

इकाई 8. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता- पिता के मनोवैज्ञानिक मुद्दे

इकाई संरचना

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता के मानसिक मुद्दे

8.3.1 तनाव और चिंता

8.3.2 अवसाद

8.3.3 अपराधबोध और आत्म-अपराधबोध

8.3.4 वैवाहिक तनाव

8.3.5 सामाजिक एकाकीपन

8.3.6 आर्थिक तनाव

8.3.7 माता -पिता की थकान

8.4 मुकाबला करने की रणनीतियाँ और लचीलापन

8.5 सारांश

8.6 शब्दावली

8.7 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

8.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

8.9 निबन्धात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

बच्चे हमारी सबसे बड़ी खुशियों का स्रोत और सबसे बड़े दुखों का स्रोत हैं। दुनिया भर में पालन-पोषण की प्रथाओं के तीन प्रमुख लक्ष्य हैं: बच्चों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सुनिश्चित करना, बच्चों को उत्पादक वयस्कों के रूप में जीवन के लिए तैयार करना, और सांस्कृतिक मूल्यों का संचरण करना।

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की परवरिश और पालन-पोषण सामान्य पालन-पोषण से ज़्यादा तनावपूर्ण होता है। पालन-पोषण का मतलब है बच्चे को सुरक्षित, संरक्षित और पोषण करने वाला वातावरण प्रदान करके उसका पालन-पोषण करना। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे का जन्म माता-पिता के जीवन में ऐसे बदलाव लाता है जिसके लिए वे शायद तैयार न हों और भविष्य में उन्हें बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। बच्चे को जीवन भर विशेष देखभाल, दवा, सहायता और सेवाओं की आवश्यकता हो सकती है। बच्चे की विकलांगता का प्रकार और गंभीरता अक्सर पालन-पोषण में उच्च तनाव से जुड़ी होती है (गुप्ता, 2007)।

कई माता-पिता बच्चों का पालन-पोषण करना अपने जीवन का सबसे आनंददायक और संतुष्टिदायक-लेकिन सबसे तनावपूर्ण और चुनौतीपूर्ण-कार्यों में से एक मानते हैं। जैसे-जैसे उनके बच्चे बड़े और विकसित होते हैं, माता-पिता दुःख के दौर से गुजरते हैं, क्योंकि बच्चों को परिपक्व होने के साथ-साथ कठिनाई का अनुभव करते देखना हमेशा दर्दनाक होता है। प्रस्तुत इकाई में हम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता के मनोवैज्ञानिक मुद्दों के बारे में चर्चा करेंगे|

8.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप –

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता की मानसिक स्थिति समझ पाएंगे|
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता के मनोवैज्ञानिक मुद्दों को परिभाषित कर पायेंगे|
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता को तनाव प्रबंधन के तरीके बता पायेंगे|

8.3विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता के मानसिक मुद्दे

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता ऐसे कई मानसिक और भावनात्मक मुद्दों का सामना करते हैं, जो उनके मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। तनाव, चिंता, अवसाद, अपराधबोध, वैवाहिक तनाव, सामाजिक एकाकीपन और आर्थिक तनाव जैसी समस्याएं इन

माता-पिता में सामान्य हैं। इन समस्याओं को समाजिक दबाव, समझ की कमी और देखभाल की अत्यधिक आवश्यकता से भी बढ़ावा मिलता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पालने का मानसिक दबाव केवल माता-पिता तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे परिवार की संरचना को प्रभावित करता है। इस इकाई में हम उन मानसिक मुद्दों का गहराई से विश्लेषण करेंगे, जिनका सामना विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता करते हैं, जैसे तनाव, चिंता, अवसाद, अपराधबोध, वैवाहिक तनाव, सामाजिक एकाकीपन, आर्थिक दबाव और वे जो मुकाबला करने की रणनीतियाँ अपनाते हैं।

8.3.1तनाव और चिंता

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता में तनाव

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता के बीच सबसे सामान्य मानसिक समस्या तनाव है। यह तनाव कई कारणों से उत्पन्न होता है, जैसे कि बच्चे की चिकित्सा देखभाल, शैक्षिक आवश्यकताएँ और सामाजिक चुनौतियाँ, जिनका सामना बच्चा और परिवार दोनों करते हैं।

कई माता-पिता के लिए विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की देखभाल करने की जिम्मेदारी के कारण दिन-प्रतिदिन के जीवन में तनाव अत्यधिक हो सकता है। बच्चों के लिए चिकित्सा, उपचार, थेरापी और विशेष शैक्षिक सेवाओं को समायोजित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है, जो मानसिक दबाव को बढ़ा सकता है। इस स्थिति में, माता-पिता को अक्सर तनाव का सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्हें अपनी दिनचर्या में बहुत अधिक बदलाव लाना पड़ता है।उदाहरण: एक ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (ASD) वाले बच्चे की माँ को यह महसूस हो सकता है कि उसे अपने बच्चे के व्यवहार की देखभाल करने, विशेष शिक्षा की व्यवस्था करने और अन्य माता-पिता से सामाजिक समायोजन करने में अत्यधिक तनाव का सामना करना पड़ता है। इस लगातार बढ़ते दबाव के कारण तनाव हो सकता है।

अनुसंधान ने यह दिखाया है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता का तनाव उस तनाव से मेल खाता है, जो अन्य पुरानी बीमारियों के मरीजों के देखभाल कर्ताओं द्वारा अनुभव किया जाता है, जैसे कि अल्जाइमर या कैंसर के मरीज (Baker-Ericzen et al., 2009)।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता में चिंता

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता में चिंता भी एक गंभीर मानसिक समस्या है। बच्चे के भविष्य को लेकर निरंतर अनिश्चितता, उनकी देखभाल के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी, और उनके बच्चे की सामाजिक स्थिति को लेकर चिंता हो सकती है।

कुछ माता-पिता बच्चे के भविष्य को लेकर अत्यधिक चिंतित रहते हैं, खासकर जब बच्चे को शैक्षिक, सामाजिक और चिकित्सा समर्थन की आवश्यकता होती है। यह चिंता तब और बढ़ जाती है जब वे अपने बच्चे की जीवन भर की सामाजिक स्थिति और समाज में स्वीकृति को लेकर अनिश्चित रहते हैं।उदाहरण: एक पिता, जिसका बच्चा सेरेब्रल पाल्सी से ग्रस्त है, यह चिंता करता है कि जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होगा, उसकी गतिशीलता में कठिनाइयाँ बढ़ेंगी और वह समाज में और अधिक संघर्ष करेगा। वह यह भी चिंतित हो सकता है कि क्या स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली अपने बच्चे को आवश्यक सहायता प्रदान करेगी।

8.3.2 अवसाद

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता में अवसाद एक सामान्य मानसिक समस्या है। यह स्थिति अकेलेपन, निराशा और देखभाल की भारी जिम्मेदारी के कारण उत्पन्न हो सकती है। ये माता-पिता खुद को असहाय महसूस कर सकते हैं, खासकर जब उन्हें लगता है कि वे अपनी संतान के लिए पर्याप्त नहीं कर पा रहे हैं।

कभी-कभी माता-पिता अवसाद महसूस करते हैं क्योंकि वे अपने बच्चे की देखभाल की जिम्मेदारी को लेकर थक चुके होते हैं और यह स्थिति उनके मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है।उदाहरण: एक माँ, जिसका बच्चा एक गंभीर विकासात्मक विकार से ग्रस्त है, निरंतर चिंता और दुख महसूस कर सकती है, उसे यह महसूस होता है कि वह अपने बच्चे की देखभाल में बहुत सीमित है, और उसका सामाजिक जीवन भी प्रभावित हो गया है। इससे अवसाद हो सकता है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता में अवसाद का प्रभाव उनके जीवन की गुणवत्ता पर सीधा असर डालता है और यह उनकी देखभाल की क्षमता को भी प्रभावित कर सकता है।

8.3.3 अपराधबोध और आत्म-अपराधबोध

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता में अपराधबोध बहुत सामान्य है। माता-पिता अपराधबोध महसूस कर सकते हैं यदि वे यह मानते हैं कि वे अपने बच्चे के लिए पर्याप्त नहीं कर पा रहे हैं या यदि उन्हें लगता है कि बच्चे की स्थिति के लिए वे स्वयं जिम्मेदार हैं।

कई माता-पिता महसूस करते हैं कि वे अपने बच्चे के विकार के लिए जिम्मेदार हैं और कभी-कभी यह अपराधबोध इतना गंभीर हो सकता है कि वे अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाने वाले निर्णय ले सकते हैं।उदाहरण: एक पिता, जिसका बच्चा ADHD (अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर) से पीड़ित है, महसूस कर सकता है कि उसने समय रहते अपने बच्चे की

स्थिति को पहचाना नहीं और इसके लिए वह खुद को दोषी मान सकता है। यह अपराधबोध उसके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

आत्म-अपराधबोध

अपराधबोध के साथ-साथ आत्म-अपराधबोध भी एक बड़ी समस्या बन सकता है। माता-पिता अपने बच्चे की स्थिति के लिए खुद को दोषी मानने लगते हैं, भले ही उनका विकार किसी बाहरी कारण से हो। यह आत्म-अपराधबोध उन्हें और अधिक मानसिक दबाव का सामना करने के लिए मजबूर कर सकता है।उदाहरण: एक माँ, जो गर्भावस्था के दौरान किसी तरह की छोटी सी गलती को लेकर खुद को दोषी मानती है, उसे यह लग सकता है कि उसके बच्चे की स्थिति उसकी गलती का परिणाम है।

8.3.4 वैवाहिक तनाव

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की देखभाल माता-पिता के रिश्ते पर भारी प्रभाव डाल सकती है। बच्चों की देखभाल के तनाव और इसके कारण उत्पन्न होने वाली जिम्मेदारियों के कारण, माता-पिता के बीच अक्सर मतभेद हो सकते हैं। कभी-कभी एक साथी अधिक समर्थन की आवश्यकता महसूस कर सकता है, जबकि दूसरा साथी कम सहायक महसूस कर सकता है।

कई माता-पिता अपने बच्चे की देखभाल को लेकर तनाव का सामना करते हैं और इससे उनके रिश्तों में खटास आ सकती है। इसके अलावा, यह वैवाहिक तनाव कभी-कभी तलाक की स्थिति तक भी पहुँच सकता है। एक जोड़ा अपने बच्चे के व्यवहार को लेकर अक्सर विवाद करता हो सकता है, जिसमें एक माता-पिता अधिक सख्त अनुशासन लागू करना चाहता है जबकि दूसरा अधिक समझदारी से निपटना चाहता है। इस प्रकार के मतभेद परिवार के रिश्तों को प्रभावित कर सकते हैं।

बेन्सन (2012) ने बताया कि दीर्घकालिक विकलांगता वाले बच्चे की देखभाल अक्सर माता-पिता के जीवन केविभिन्न क्षेत्रों जैसे विवाह, करियर, रिश्तों को प्रभावित करती है, जिससे तनाव हो सकता है और परिवार के समग्र कामकाज पर असर पड़ सकता है।

8.3.5 सामाजिक एकाकीपन

मर्फी (1990) ने विकलांगता को 'सामाजिक संबंधों की बीमारी' के रूप में समझाया। माता-पिता दूसरों से बहुत सारे सवालों का सामना करते हैं और समूह में सामाजिक रूप से अलग-थलग पड़ जाते हैं। भारत में विकलांगता पर साहित्य ने कर्म की अवधारणा की ओर इशारा किया है, जिसने विकलांगता को पिछले जन्मों में किए गए किसी गलत काम के लिए अभिशाप या दंड के रूप में महत्व दिया है।

विकलांगता के प्रति समाज का दृष्टिकोण और विश्वास भी माता-पिता में तनाव के स्तर को बढ़ाता है। विल्सन (2019) के अध्ययन से पता चलता है कि हिंदू धार्मिक विश्वास किसी भी विकलांगता के प्रति प्रतिक्रिया को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

कई माता-पिता सामाजिक रूप से एकाकी महसूस करते हैं। वे अक्सर सामाजिक कार्यक्रमों से बचने लगते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके बच्चे का व्यवहार दूसरों द्वारा नहीं समझा जाएगा। कभी-कभी माता-पिता खुद को अलग-थलग महसूस करते हैं क्योंकि वे अपने बच्चे की स्थिति से संबंधित अन्य परिवारों के साथ जुड़ नहीं पाते हैं।उदाहरण: एक ऑटिज्म से ग्रस्त बच्चे की माँ स्कूल की घटनाओं में भाग लेने से कतराती है क्योंकि वह महसूस करती है कि अन्य लोग उसके बच्चे के व्यवहार को गलत समझेंगे या न्याय नहीं करेंगे।

8.3.6आर्थिक तनाव

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की देखभाल में उच्च लागत लग सकती है। चिकित्सा उपचार, थेरापी, विशेष उपकरण और शैक्षिक खर्चों के अलावा, माता-पिता को बच्चों की देखभाल के लिए काम का समय कम करने या छोड़ने की आवश्यकता हो सकती है, जिससे उनके परिवार की वित्तीय स्थिति पर असर पड़ता है।

इस आर्थिक तनाव से माता-पिता चिंतित होते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वे अपने बच्चों की देखभाल के लिए आवश्यक संसाधनों को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं।एक माँ, जो अपने बच्चे की चिकित्सा थेरापी और विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के लिए पैसे नहीं जुटा पा रही है, अपने परिवार की वित्तीय स्थिति को लेकर चिंतित हो सकती है।

8.3.7 माता -पिता की थकान

मातृ-पिता थकावट तब होती है जब माता-पिता लगातार देखभाल की भारी जिम्मेदारी के कारण शारीरिक और मानसिक रूप से थक जाते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता में थकावट सामान्य होती है, क्योंकि बच्चों की देखभाल में बहुत समय और ऊर्जा लगती है|उदाहरण: एक पिता, जिसका बच्चा गंभीर चिकित्सा स्थिति से जूझ रहा है, लगातार देखभाल करने के कारण थकावट महसूस कर सकता है, जो उसके मानसिक स्वास्थ्य और उसकी अपनी देखभाल को प्रभावित करता है।

8.4 मुकाबला करने की रणनीतियाँ और लचीलापन

इन मानसिक संघर्षों के बावजूद, कई माता-पिता अद्वितीय लचीलापन दिखाते हैं। लचीलापन का मतलब है विपरीत परिस्थितियों में अनुकूलन और उबरने की क्षमता। माता-पिता अक्सर मुकाबला करने की रणनीतियाँ विकसित करते हैं, जैसे कि सामाजिक समर्थन प्राप्त करना, बच्चे की स्थिति के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना या समाज में जागरूकता लाने के लिए वकालत करना।उदाहरण: एक माँ, जिसका बच्चा दुर्लभ आनुवंशिक विकार से पीड़ित है, अपनी ऊर्जा को इस स्थिति के बारे में जागरूकता फैलाने में लगा सकती है, जिससे उसे उद्देश्य और समुदाय का समर्थन मिलता है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता और प्राथमिक देखभाल करने वालों के लिए पालन-पोषण की सामान्य चुनौतियाँ जटिल हो जाती हैं। अनेक चुनौतियों में से ये हैं:

विकलांगता के बारे में सीखना, प्रभावी उपचारों और संसाधनों पर शोध करना, पता लगाना और उन तक पहुँच बनाना

किसी विकलांग व्यक्ति की देखभाल की भावनात्मक और शारीरिक मांगों का सामना करना, चिकित्सा प्रदाताओं, चिकित्सकों, अधिवक्ताओं और स्कूल कर्मियों के साथ असंख्य नियुक्तियाँ प्राप्त करना,उपयुक्त स्कूल हस्तक्षेप, आवास और/या प्लेसमेंट की वकालत करना

8.5 सारांश:

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता के मानसिक मुद्दे जटिल और विविध होते हैं, जिनमें तनाव, चिंता, अवसाद, अपराधबोध, वैवाहिक तनाव, सामाजिक एकाकीपन, आर्थिक तनाव और मातृ-पिता थकावट शामिल हैं। ये समस्याएँ समाज की गलत धारणाओं, कलंक और पर्याप्त समर्थन की कमी से और बढ़ जाती हैं। फिर भी, कई माता-पिता असाधारण लचीलापन दिखाते हैं और वे मुकाबला करने की रणनीतियाँ अपनाते हैं जो उन्हें इन चुनौतियों का सामना करने में मदद करती हैं। इन मानसिक समस्याओं को पहचानने और समझने से हमें इन परिवारों को अधिक प्रभावी ढंग से समर्थन देने में मदद मिल सकती है और यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि माता-पिता के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध हों।

8.6 शब्दावली

अवसाद: एक मानसिक विकार जो लगातार उदासी व अरुचि पैदा करता है|

चिंता:बैचेनी, भयका भाव

आत्म-अपराधबोध: किसी घटना या परिस्थिति के लिये खुद को दोषी मानना

ASD: ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार

ADHD: अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर

8.7 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

a. मर्फी (1990) ने विकलांगता को .....के रूप में समझाया।
b. लचीलापन का मतलब है ……..।

8.9 निबन्धात्मक प्रश्न

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता की कौन कौन सी चुनौतियां हैं?

1. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की देखभाल माता-पिता के रिश्ते पर किस प्रकार प्रभाव डालती है?
2. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता-पिता के लिये तनाव प्रबंधन के तरीके बताइये|

8.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Baker-Ericzen, M., et al. (2009). Parenting stress among mothers of children with autism and developmental disabilities. Journal of Autism and Developmental Disorders.
- Benson, P. R. (2012). Network characteristics, perceivedsocial support and psychological adjustment inmothers of children with autism spectrum disorder.
- Journal of Autism and Developmental Disorders42:2597–2610.

- Davis, E., & Carter, M. (2008). Parenting stress in mothers and fathers of children with autism spectrum disorder. Journal of Autism and Developmental Disorders.
- Gupta, V. B. (2007). Comparison of parenting stress indifferent developmental disabilities. Journal ofDevelopmental & Physical disabilities, 19: 417–425.
- Luther, L., et al. (2005). Parental stress and coping with children's disabilities: A meta-analysis. Journal of Child and Family Studies.
- Fisman, S. N., et al. (2000). Stress and coping in families of children with autism. Journal of Autism and Developmental Disorders.
- Baker-Ericzen, M., et al. (2009). Parenting stress among mothers of children with autism and developmental disabilities. Journal of Autism and Developmental Disorders.
- Murphy, N. A., & Christian, B. (2006). Families of children with special health care needs: The influence of family structure on well-being. Journal of Family Psychology.
- Hoffman, R. J., et al. (2014). Quality of life and its association with parents' well-being in families with children with a disability. Quality of Life Research.
- Kogan, M. D., et al. (2008). The financial burden of children with disabilities: A longitudinal study. Pediatrics.
- Pakenham, K. I., & Cox, S. (2011). The role of stress in parental burnout in families with children with disabilities. Journal of Intellectual Disability Research.
- Fisman, S. N., et al. (2000). Stress and coping in families of children with autism. Journal of Autism and Developmental Disorders.
- https://www.psy-ed.com/wpblog/navigating-emotional-challenges
- Murphy, R. F. (1990). The BodySilent, New York: Norton, 1990, Print.

इकाई 9:- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श तकनीक

इकाई संरचना

9.1 प्रस्तावना
9.2 उद्देश्य
9.3 बच्चों में विशेष आवश्यकताओं का परिचय
9.3.1 बौद्धिक अक्षमता
9.3.2 ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार
9.3.3 सीखने की अक्षमता
9.3.4 भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकार
9.3.5 शारीरिक अक्षमता
9.4 निर्देशन और परामर्श प्रदान करने का महत्व
9.5 विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के साथ प्रारंभिक हस्तक्षेप (CWSN) का महत्व
9.6 विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श के सिद्धांत
9.7 विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए परामर्श तकनीकों के प्रकार
9.8 परामर्श प्रक्रिया में परिवारों और समुदायों को शामिल करना
9.9 सारांश
9.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
9.11 निबंधात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे विभिन्न शारीरिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक और विकासात्मक चुनौतियों वाले एक विविध समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं और यह चुनौतियाँ समाज में सीखने, बातचीत करने और प्रभावी ढंग से संवाद करने की उनकी क्षमता को प्रभावित करते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विकास और कल्याण के लिए निर्देशन और परामर्श बहुत महत्वपूर्ण है। इन बच्चों को अक्सर अपने दैनिक जीवन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है - भावनात्मक, शैक्षणिक और सामाजिक और व्यावसायिक । उचित समर्थन और देखभाल से वे इन चुनौतियों पर विजय पा सकते हैं और आत्मविश्वासी, सक्षम व्यक्ति बन सकते हैं। निर्देशन और परामर्श उन्हें इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं। इस इकाई में हम विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए विभिन्न निर्देशन और परामर्श तकनीकों के विषय में अध्ययन करेंगे ।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :-

1. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श के महत्त्व को समझ सकेंगे।
2. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श के प्रमुख सिद्धांतों की पहचान कर सकेंगे।
3. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श के प्रमुख सिद्धांतों की की व्याख्या कर सकेंगे।
4. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए अनुकूलित विभिन्न परामर्श तकनीकों पर चर्चा कर सकेंगे।
5. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए एक सहायक वातावरण बनाने के लिए कौशल विकसित कर सकेंगे।
6. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के निर्देशन और परामर्श में परिवार, स्कूल और समुदाय की भूमिका को जान पाएंगे ।

9.3 बच्चों में विशेष आवश्यकताओं का परिचय

पहले हम विभिन्न प्रकार की विशेष आवश्यकताओं के विषय में जानेंगे -

- बौद्धिक अक्षमता
- ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार

- सीखने की अक्षमता
- भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकार
- शारीरिक अक्षमता

i. बौद्धिक अक्षमता: यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें बौद्धिक कार्यकलाप औसत से कम होता है और अनुकूली व्यवहार सीमित होते हैं, जिससे रोजमर्रा के कौशल जैसे सम्प्रेषण, खुद की देखभाल करना और सामाजिक मेलजोल प्रभावित होते हैं।

ii. ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD): यह एक विकासात्मक विकार जो सम्प्रेषण, व्यवहार और सामाजिक मेलजोल को प्रभावित करता है, जिसमें गंभीरता और लक्षणों के अलग-अलग स्तर होते हैं। ASD वाले लोगों को सामाजिक मेलजोल और दोहराव वाले व्यवहार में कठिनाई हो सकती है।

iii. सीखने की अक्षमता: यह तंत्रिका तंत्र संबंधी स्थितियाँ हैं जो मस्तिष्क की जानकारी को संसाधित करने, संग्रहीत करने या पुनः प्राप्त करने की क्षमता को प्रभावित करती हैं, जिससे औसत या औसत से अधिक बुद्धिमत्ता के बावजूद पढ़ने, लिखने, गणित या अन्य शैक्षणिक कौशल में कठिनाई होती है।

iv. भावनात्मक और व्यवहार संबंधी विकार: यह मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों की एक श्रेणी जिसमें लगातार भावनात्मक या व्यवहार संबंधी मुद्दे शामिल होते हैं, जिसमें चिंता, अवसाद, आक्रामकता और आत्म-नियंत्रण में कठिनाइयाँ शामिल हैं, जो दैनिक कामकाज और सामाजिक मेलजोल को प्रभावित करती हैं।

v. शारीरिक अक्षमता: यह ऐसी स्थितियाँ हैं जो शारीरिक गतिशीलता, समन्वय या शरीर के कामकाज को बाधित करती हैं, जैसे कि पक्षाघात, मस्तिष्क पक्षाघात या अंग विच्छेदन, जो किसी व्यक्ति की रोज़मर्रा की गतिविधियाँ करने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

9.4 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (Children with Special Needs- CWSN) के लिए निर्देशन और परामर्श का महत्व:

i. CWSN को अक्सर कलंक, कम आत्मसम्मान और सामाजिक बहिष्कार सहित अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। परामर्श इन बच्चों को एक सकारात्मक आत्म-छवि विकसित करने, तनाव का प्रबंधन करने और उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली किसी भी भावनात्मक कठिनाई से निपटने में मदद करता है।

ii. शैक्षणिक और सामाजिक एकीकरण: परामर्शदाता विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) शैक्षिक प्रणाली में मार्गदर्शन करने, शैक्षणिक लक्ष्य निर्धारित करने और यह सुनिश्चित करने में सहायता करते हैं कि उन्हें आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हों

।परामर्शसामाजिक एकीकरण में भी सहायता करता हैसाथ ही अपने समकक्षों के साथ संबंधों को समर्थन देकर और सामाजिक गतिविधियों में समावेश को प्रोत्साहित करने में सहायता देता है ।

iii. परामर्श CWSN को उनकी अक्षमता का प्रबंधन करने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में लचीलापन विकसित करने के कौशल से लैस कर सकता है। उदाहरण के लिए, शारीरिक अक्षमता वाले बच्चों को शारीरिक सीमाओं से निपटने की रणनीतियों से लाभ हो सकता है, जबकि सीखने की अक्षमता वाले बच्चों को उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए तकनीकें प्राप्त हो सकती हैं।

iv. परामर्शदाता विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए प्रतिनिधि के रूप में काम कर सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके अधिकारों को बरकरार रखा जाए और उन्हें आवश्यक संसाधन और सहायता मिले। वे वे परिवारों को अपने बच्चों की आवश्यकताओं को समझने तथा घर और समाज में उन्हें सर्वोत्तम तरीके से सहायता प्रदान करने में भी सहायता करते हैं।

v. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए निर्देशन कार्यक्रम अक्सर आवश्यक सामाजिक कौशल, सम्प्रेषण और साथियों के साथ बातचीत के विकास पर जोर देते हैं, जिससे स्कूल और समुदाय में बेहतर संबंध और अपनेपन की भावना को बढ़ावा मिलता है।

vi. बड़े बच्चों के लिए, निर्देशन और परामर्श उन्हें स्कूल के बाद के जीवन के लिए तैयार करने में आवश्यक हैं, जिसमें करियर परामर्श, व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्वतंत्र जीवन कौशल शामिल हैं। ये सेवाएँ CWSN को वयस्कता में उनको परिवर्तन के लिए तैयार करने में मदद करती हैं और यह सुनिश्चित करती हैं कि वे पूर्ण, स्वतंत्र जीवन जी सकें।

vii. परामर्श अक्सर परिवारों तक भी पहुंचता है, उन्हें अपने बच्चे के विकास और कल्याण का समर्थन करने के लिए उपकरण प्रदान करता है। इसमें संसाधनों के बारे में जानकारी प्रदान करना, चुनौतीपूर्ण व्यवहारों को प्रबंधित करने की रणनीतियाँ और विभिन्न परिस्थितियों में अपने बच्चे का समर्थन करने के तरीके के बारे में निर्देशन प्रदान करना शामिल हो सकता है।

9.5 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के साथ प्रारंभिक हस्तक्षेप का महत्व

प्रारंभिक हस्तक्षेप की विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए परिणामों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका है और इसको को व्यापक रूप से एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में मान्यता प्राप्त है। विकास संबंधी चिंताओं को शुरू में संबोधित करके, अक्षमता के प्रभाव को कम किया जा सकता है और बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास को काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है। CWSN के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप इतना महत्वपूर्ण क्यों है इससे सम्बंधित मुख्य कारण नीचे दी गए हैं -

- **मस्तिष्क के विकास को अधिकतम करना**- विकास के लिए शुरुआती वर्ष (जन्म से 5 वर्ष की आयु तक) मस्तिष्क के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि है। इस समय के मस्तिष्क अत्यधिक लचीला होता है , प्रारंभिक हस्तक्षेप तंत्रिका कनेक्शन को मजबूत करने, सीखने और विकास को बढ़ाने के लिए इस विकासात्मक समय का उपयोग करता है जो बाद में जीवन में अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है। शुरुआती वर्ष मस्तिष्क के तीव्र विकास की अवधि होती है। इस समय हस्तक्षेप बच्चों को विभिन्न कौशल सीखने विकसित करने में सहायता करता है जैसे कि - सम्प्रेषण, गामक कौशल, संज्ञानात्मक, सामाजिक और स्व -सहायता जैसे प्रमुख कौशल।
- **भाषा और संचार कौशल को बढ़ाना** - ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (ASD) या बौद्धिक अक्षमता वाले विशेष आवश्यकता वाले कई बच्चे सम्प्रेषण में चुनौतियों का सामना करते हैं। प्रारंभिक हस्तक्षेप भाषा और सम्प्रेषण कौशल के विकास में मदद करता है, जो सामाजिक मेलजोल और शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक हैं। प्रारंभिक हस्तक्षेप में अक्सर सामाजिक सम्प्रेषण को बेहतर बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए कार्यक्रम शामिल होते हैं, बच्चों को दूसरों के साथ उचित तरीके से बातचीत करना, भावनाओं को व्यक्त करना या साझा करना और दोस्ती विकसित करना सिखाते हैं। यह स्कूल और व्यापक समाज दोनों में उनके सामाजिक एकीकरण के लिए महत्वपूर्ण है।
- **गौण या द्वितीयक अक्षमताओं को रोकना**- प्रारंभिक हस्तक्षेप अक्षमता से संबंधित दुसरे मुद्दों, जैसे व्यवहार संबंधी समस्याओं, चिंता, अवसाद या आक्रामकता के विकास को कम या रोक सकता है। मूल आवश्यकताओं को जल्दी संबोधित करके, इन अतिरिक्त चुनौतियों की आशंका कम हो जाती है,जिससे बेहतर मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण होता है। जब किसी बच्चे की विकासात्मक ज़रूरतों को जल्दी संबोधित किया जाता है, तो उन्हें सामाजिक और शैक्षणिक कौशल हासिल करने में देर होने की संभावना कम होती है। इससे उन्हें अपने साथियों के साथ बने रहने में मदद मिलती है, जो आत्म-सम्मान और जीवन की समग्र गुणवत्ता को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।
- **स्वतंत्रता और स्वायत्तता को बढ़ावा देना**- जब विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को जल्दी सहायता मिलती है, तो उनमें उपलब्धि की भावना विकसित होती है, जो उनके आत्मविश्वास का निर्माण करती है। प्रारंभिक हस्तक्षेप कार्यक्रम अक्सर दैनिक कार्यों में स्वतंत्रता सिखाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसे कि कपड़े पहनना, खाना और बाथरूम का उपयोग करना। इससे उम्र बढ़ने के साथ उनकी स्वायत्तता बढ़ती है। प्रारंभिक हस्तक्षेप CWSN को व्यावहारिक जीवन कौशल सीखने में मदद करता है और उन्हें उम्र बढ़ने के साथ अधिक स्वतंत्र जीवन जीने के लिए तैयार करता है। इन कौशलों में समस्या-समाधान, आत्म-नियंत्रण

और आत्म-वकालत शामिल हो सकती है, जो बच्चों को भविष्य में अपने जीवन पर नियंत्रण रखने के लिए सशक्त बनाती है।

- **परिवार के समर्थन और भागीदारी को मजबूत करना**- प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाएँ न केवल बच्चे पर ध्यान केंद्रित करती हैं, बल्कि परिवारों को शिक्षित और सशक्त भी बनाती हैं। माता-पिता सीखते हैं कि घर पर अपने बच्चे के विकास का समर्थन कैसे कर सकते हैं तथा किन रणनीतियों और उपकरणों को बच्चों की दैनिक दिनचर्या में लागू कर सकते हैं। इससे परिवारों का तनाव कम होता है और यह सुनिश्चित होता है कि बच्चे को लगातार समर्थन मिलता रहे। प्रारंभिक हस्तक्षेप के माध्यम से, माता-पिता अपने बच्चे की ज़रूरतों और ताकतों को बेहतर ढंग से समझते हैं, जिससे वे अपने बच्चे के साथ एक मजबूत, अधिक सकारात्मक संबंध विकसित कर पाते हैं। यह बदले में, बच्चे के भावनात्मक विकास को बेहतर बनाने में मदद करता है।
- प्रारंभिक हस्तक्षेप कार्यक्रम अक्सर स्कूल की तैयारी के कौशल पर काम करते हैं, विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को औपचारिक शिक्षा में सफल प्रवेश के लिए तैयार करते हैं। सीखने में देरी और सामाजिक चुनौतियों को जल्दी से संबोधित करके, बच्चे स्कूल के माहौल में बेहतर ढंग से ढल पाते हैं, जिससे बाद में उपचारात्मक शिक्षा की ज़रूरत कम हो जाती है। जिन बच्चों को अंततः नियमित कक्षाओं में शामिल किया जाएगा, उनके लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप उनके संक्रमण को आसान बनाने में मदद करता है। यह उन्हें नियमित कक्षा सेटिंग की शैक्षणिक और सामाजिक मांगों से निपटने के लिए रणनीतियाँ प्रदान कर सकता है।
- जीवन की गुणवत्ता पर दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव-अध्ययनों से लगातार पता चलता है कि जिन बच्चों को प्रारंभिक हस्तक्षेप मिलता है, वे वयस्कता में शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक कौशल, स्वतंत्रता और रोजगार की संभावनाओं सहित कई क्षेत्रों में बेहतर परिणाम दिखाते हैं। हस्तक्षेप जितना पहले होगा, सकारात्मक दीर्घकालिक प्रभाव उतने ही महत्वपूर्ण होंगे।

प्रारंभिक हस्तक्षेप विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के विकास और कल्याण को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह बच्चों को महत्वपूर्ण शुरुआती वर्षों में विकास संबंधी चिंताओं को दूर करके, संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में सुधार करके और दीर्घकालिक कठिनाइयों के जोखिम को कम करके अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने का सबसे अच्छा मौका देता है। प्रारंभिक हस्तक्षेप परिवारों को उनकी ज़रूरत का समर्थन भी प्रदान करता है, जिससे बच्चे के विकास के लिए सकारात्मक वातावरण बनता है। अंततः, जितनी जल्दी सहायता प्रदान की जाएगी, बच्चे के जीवन भर में लाभ उतना ही अधिक होगा।

9.6 विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श के सिद्धांत

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श कुछ मूलभूत सिद्धांतों पर केंद्रित होते हैं जो इन बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पहचानते हैं। बच्चे के भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी परामर्श की पद्धतियों को इन सिद्धांतों में निहित होना चाहिए।

1. बाल विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण: निर्देशन और परामर्श के लिए एक समग्र दृष्टिकोण बच्चे के संपूर्ण विकास पर विचार करता है और इस बात को स्वीकार करता है कि एक बच्चे के विकास में शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक क्षेत्र शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक पहलू को चिकित्सा में एक साथ संबोधित किया जाना चाहिए। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए, यह एकीकृत दृष्टिकोण यह समझने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनकी विशिष्ट चुनौतियाँ उनके समग्र विकास को कैसे प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) वाले बच्चे सामाजिक मेलजोल में संघर्ष कर सकते हैं, और इस मुद्दे को संबोधित करते हुए संप्रेषण कौशल, शैक्षणिक प्रदर्शन और भावनाओं के नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है।
2. गोपनीयता, विश्वास और नैतिकपहलु : परामर्श में विश्वास का निर्माण सर्वोपरि है, विशेषकर उन विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए जिन्हें शैक्षिक या उपचारात्मक अनुभवों में पहले नकारात्मक अनुभव हो चुके हों। । यह आवश्यक है कि परामर्शदाता गोपनीयता बनाए रखें और बच्चे के सर्वोत्तम हित में कार्य करें। नैतिक दिशानिर्देशों का हर समय पालन किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चे के अधिकारों, गरिमा और गोपनीयता का सम्मान किया जा रहा है। संज्ञानात्मक या भावनात्मक चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों के लिए यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि वे गोपनीयता की सीमाओं और परामर्श के उद्देश्य को समझ सकें।
3. व्यक्तिगत दृष्टिकोण (व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ-Individualise Education Plans): विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के संदर्भ में एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है । व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ एक ऐसा उपकरण है जिसका आमतौर पर शैक्षणिक परिवेश में उपयोग किया जाता। यह बच्चे की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप विशिष्ट शैक्षिक लक्ष्यों और सेवाओं को निर्धारित करता है। इस योजना को परामर्श प्रक्रिया का मार्गदर्शन करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हस्तक्षेप बच्चे की ताकतों और चुनौतियों के अनुरूप हों । IEP प्रक्रिया में शिक्षकों, माता पिता और चिकित्सकों के साथ सहयोग-शामिल होता है, जिससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि बच्चे की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूरा किया जाए जो उसके लिए उपयुक्त और प्रभावी हो।

4. आत्म-सम्मान और आत्म-जागरूकता को बढ़ावा देना: विशेष आवश्यकता वाले बच्चे अक्सर अपने साथियों से अलग होने के कारण आत्म-सम्मान और आत्म-जागरूकता से संबंधित चुनौतियों का सामना करते हैं। निर्देशन और परामर्श का एक प्रमुख सिद्धांत आत्म-मूल्य की भावना को बढ़ावा देना और बच्चे को सशक्त बनाना है। इसमें बच्चों को अपनी ताकत, प्रतिभा और क्षमताओं को पहचानने में मदद करना शामिल है।
5. बहु-विषयक समूह का सहयोग: विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए सफल परामर्श के लिए एक पूरे बहु विषयक समूह की आवश्यकता होती है । शिक्षकों, भाषण चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित पेशेवरों का एक बहु-विषयक समूह के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है। यह सहयोगी दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि बच्चे को व्यापक देखभाल मिले और इसमें शामिल सभी पेशेवर एकजुट होकर बच्चे के विकास में सहयोग करें।

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श के लिए सिद्धांतों के एक अनूठे प्रारूप की आवश्यकता होती है जो समझ, वैयक्तिकरण और सहयोग को प्राथमिकता देते हैं। ये सिद्धांत सुनिश्चित करते हैं कि बच्चों को उनके सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने और अपनी पूरी क्षमता विकसित करने के लिए आवश्यक सहायता मिले।

9.7विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए परामर्श तकनीकों के प्रकार

1. व्यक्ति-केंद्रित परामर्श

कार्ल रोजर्स द्वारा विकसित, यह दृष्टिकोण बच्चे और परामर्शदाता के बीच एक भरोसेमंद संबंध बनाने, आत्म-अभिव्यक्ति के लिए एक सुरक्षित और सहायक वातावरण बनाने पर केंद्रित है।

- सहानुभूति, सक्रिय सुनना और बिना शर्त सकारात्मक सम्मान, ये व्यक्ति-केंद्रित चिकित्सा के मुख्य तत्व हैं। परामर्शदाता बच्चे की वास्तविक समझ और स्वीकृति प्रदर्शित करता है, जो विशेष रूप से विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है, जिन्होंने सामाजिक अस्वीकृति या संचार कठिनाइयों का अनुभव किया हो सकता है।
- बच्चे की समझ के स्तर के अनुसार तकनीक तैयार करना: परामर्शदाता बच्चे के संज्ञानात्मक और विकासात्मक स्तर को पूरा करने के लिए अपनी भाषा, लहजे और सामग्री (जैसे, दृश्य सहायता, सरलीकृत शब्दावली) को अनुकूलित करते हैं। उदाहरण के लिए, बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए चित्रों या कहानी की किताबों का उपयोग करना।

2. व्यवहार चिकित्सा (Behavioral Therapy)

यह इलाज का तरीका सीखने के सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें अच्छे व्यवहार को बढ़ावा देने और समस्याग्रस्त व्यवहार को घटाने की कोशिश की जाती है।

प्रेरणा और व्यवहार संशोधन:

ये तकनीकें ऑपेरेंट कंडीशनिंग (operant conditioning) पर आधारित होती हैं। इच्छित व्यवहार (जैसे कि चुपचाप बैठना, निर्देशों का पालन करना) को सुदृढ़ करने से उनके दोहराए जाने की संभावना बढ़ जाती है।

इसमें निम्न तकनीकें इस्तेमाल की जाती हैं-

- **सकारात्मक सुदृढीकरण (Positive Reinforcement):** इच्छित व्यवहार पर प्रशंसा या इनाम देना।
- **टोकन प्रणाली (Token System):** बच्चे अच्छे व्यवहार के लिए टोकन कमाते हैं, जिन्हें वे किसी इनाम के लिए बदल सकते हैं।
- **शेपिंग (Shaping):** किसी इच्छित व्यवहार के करीब पहुंचने वाले प्रयासों को धीरे-धीरे सुदृढ़ करना। यह बच्चों को नई कौशल सीखने में मदद करता है।

यह तकनीकें विशेष रूप से**ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)**या**एडीएचडी (ADHD)**वाले बच्चों के व्यवहार को प्रबंधित करने में प्रभावी होती हैं, जहाँ संरचना, निरंतरता और पूर्वानुमेयता (predictability) बहुत आवश्यक होती हैं।

3. संज्ञानात्मक-व्यवहार थेरेपी (Cognitive Behavioral Therapy - CBT)

CBT बच्चों को उनके नकारात्मक या गलत विचारों को पहचानने और बदलने में मदद करता है, ताकि वे बेहतर सोच और व्यवहार कर सकें।विशेष बच्चों के लिए चित्रों, आसान भाषा, और बार-बार दोहराने जैसी तकनीको का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें माता-पिता या देखभाल करने वालों को सत्रों में शामिल करना ताकि बच्चे घर पर भी अभ्यास कर सकें।

- **संज्ञानात्मक पुनर्गठन:** "मैं नहीं कर सकता" जैसे विचारों को "मैं कोशिश कर सकता हूँ" जैसे सकारात्मक विचारों से बदलना।
- **भावना नियंत्रण:**बच्चों को अपनी भावनाओं को पहचानना और गहरी साँस लेना या चित्र बनाना जैसे शांत होने के तरीके सिखाना।
- **सामना करने की रणनीतियाँ:**समस्या सुलझाने और खुद को शांत रखने की कला सिखाना, खासकर चिंता या भावात्मक नियंत्रण वाले बच्चों के लिए सहायक।

4. प्ले थेरेपी

विशेष रूप से छोटे बच्चों या जिन बच्चों को बोलने में कठिनाई होती है उनके लिए बहुत सहायक होती है। प्ले थेरेपी भावनात्मक तौर पर बच्चे को समझने के लिए उपकरण के रूप में खिलौने, खेल और कल्पनाशील गतिविधियों का उपयोग करती है।

खेल बच्चे की स्वाभाविक भाषा है; जिसके द्वारा वे अपनी भावनाओं और अनुभव को व्यक्त करते हैं , जिन्हें वे मौखिक रूप से व्यक्त करने में सक्षम नहीं कर पाते हैं। यह बिना डर के बच्चों को एक दुसरे के साथ मेलजोल और बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

- प्ले थेरेपी विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को डर, चिंता, ग़ुस्से से निपटने में मदद करता है साथ ही बच्चों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ाता है और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ा सकता है।

5. कला और संगीत चिकित्सा

यह थेरेपी बोलकर व्यक्त करने में कठिनाई का सामना करने वाले बच्चों को कला और संगीत के ज़रिए अपनी भावनाएँ व्यक्त करने में मदद करती है। ऐसे बच्चे जो बोल नहीं पाते या संवेदी समस्याओं से जूझते हैं या जिन्हें भावनात्मक नियंत्रण या विकास से जुड़ी कठिनाइयों का सामना करते है हैं, यह थेरेपी उनके लिए सहायक सिद्ध होती है

इसके मुख्य पहलू हैं -

- **कला चिकित्सा:**चित्र बनाना, पेंटिंग या मूर्तियाँ बनाना बच्चों को भावनाएँ व्यक्त करने का मौका देता है।
- **संगीत चिकित्सा:**गाना, ताल खेल, वाद्य यंत्र बजाना – ध्यान, भावनात्मक नियंत्रण और सामाजिकता बढ़ाने में सहायक है।

6. समाधान-केंद्रित थेरेपी

यह एक छोटी अवधि की थेरेपी है जो बच्चे की ताकतों और सफल अनुभवों पर ध्यान देती है। यह चिकित्सा समस्याओं की बजाय समाधान पर ध्यान देती है।बच्चे को अपने भविष्य की कल्पना करने और छोटे छोटे कदमों में आगे बढ़ने को प्रेरित करती है।

तकनीकें:

- **लक्ष्य तय करना:**बच्चे और परिवार के साथ मिलकर लक्ष्य बनाना।
- **ताकत पहचानना:**बच्चे की सफलताओं को पहचानना और आत्मविश्वास बढ़ाना।

9.8 परामर्श प्रक्रिया में परिवारों और समुदायों को शामिल करना

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए परामर्श हस्तक्षेप की सफलता काफी हद तक परिवारों और व्यापक समुदाय की भागीदारी पर निर्भर करती है। जब परिवार और सामुदायिक प्रणालियाँ परामर्श प्रक्रिया में शामिल होती हैं, तो बच्चों को परामर्श कक्ष से परे एक अधिक सुसंगत, सहायक वातावरण से लाभ होता है। यह अनुभाग भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास का समर्थन करने में परिवारों और समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिकाओं का पता लगाता है, और सहयोग को मजबूत करने की रणनीतियों पर प्रकाश डालता है।

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास में परिवार की भूमिका - परिवार प्राथमिक सामाजिक और भावनात्मक संदर्भ हैं जिसमें बच्चे विकसित होते हैं। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए, देखभाल करने वालों से लगातार मिलने वाला समर्थन चुनौतियों से निपटने, स्वस्थ संबंध बनाने और आत्म-सम्मान का निर्माण करने की उनकी क्षमता को बहुत प्रभावित कर सकता है। माता-पिता और देखभाल करने वालों को अक्सर बच्चे के व्यक्तित्व, ताकत और ज़रूरतों की सबसे गहरी समझ होती है, जो उन्हें उपचारात्मक प्रक्रिया में अमूल्य भागीदार बनाता है। एक मजबूत पारिवारिक आधार विकलांगता के भावनात्मक प्रभाव को कम कर सकता है और बच्चे में सुरक्षा और अपनेपन की भावना को बढ़ावा दे सकता है।

इसके विपरीत, तनाव में रहने वाले परिवार - चाहे देखभाल की माँगों, वित्तीय तनाव या सामाजिक अलगाव से - स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक भावनात्मक स्थिरता प्रदान करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। इसलिए परामर्शदाताओं को विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए सहायता योजनाएँ बनाते और लागू करते समय पूरे परिवार की भलाई पर विचार करना चाहिए।

1. **माता-पिता और देखभाल करने वालों के साथ साझेदारी बनाना-** परामर्श के दीर्घकालिक प्रभाव के लिए माता-पिता और देखभाल करने वालों के साथ प्रभावी साझेदारी विकसित करना आवश्यक है। यह सहयोगात्मक दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि घर में चिकित्सीय रणनीतियों को सुदृढ़ किया जाए और बच्चे की देखभाल में शामिल सभी पक्षों के बीच लगातार संचार हो।
2. **परिवारों को प्रशिक्षण देना और उन्हें सशक्त बनाना-** बच्चों को सहायता प्रदान करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है उनके परिवारों को सशक्त बनाना। परामर्शदाता देखभाल करने वालों को उनके बच्चे की स्थिति को बेहतर ढंग से समझने, व्यवहार प्रबंधन तकनीकों को सीखने और चिकित्सा के दौरान सिखाई गई मुकाबला रणनीतियों को लागू करने में मदद करने के लिए प्रशिक्षण और शैक्षिक संसाधन प्रदान कर सकते हैं। कार्यशालाएँ, वेबिनार और अभिभावक कोचिंग सत्र इस सहायता को प्रदान करने के व्यावहारिक तरीके हैं। जब देखभाल

करने वाले जानकार और सक्षम महसूस करते हैं, तो वे अपने बच्चे की ज़रूरतों पर प्रतिक्रिया देने और उचित सेवाओं की वकालत करने में अधिक आश्वस्त होते हैं।

3. **पारिवारिक परामर्श सत्र प्रदान करना-** बच्चे के लिए व्यक्तिगत चिकित्सा के अलावा, पारिवारिक परामर्श सत्र पारिवारिक प्रणाली के भीतर पारस्परिक गतिशीलता, संचार चुनौतियों और भावनात्मक तनाव को संबोधित कर सकते हैं। ये सत्र परिवार के सदस्यों को चिंताएँ व्यक्त करने, समझ में सुधार करने और भावनात्मक बंधनों को मजबूत करने की अनुमति देते हैं। अधिक सहायक घरेलू वातावरण को बढ़ावा देकर, पारिवारिक परामर्श अप्रत्यक्ष रूप से बच्चे की समग्र भलाई और व्यक्तिगत चिकित्सा से लाभ उठाने की क्षमता को बढ़ाता है।
4. **सामुदायिक संसाधन और सहायता समूह-** परामर्श में की गई प्रगति को बनाए रखने में व्यापक समुदाय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूल, स्थानीय संगठन और सहकर्मी सहायता नेटवर्क बच्चों और उनके परिवारों दोनों के लिए आवश्यक संसाधन और सामाजिक सहायता प्रदान करते हैं।

   स्कूल संपर्क के मुख्य बिंदु के रूप में कार्य करते हैं, अक्सर परामर्श सेवाओं तक पहुँच की सुविधा प्रदान करते हैं और स्कूल के दिनों में चिकित्सीय हस्तक्षेप को सुदृढ़ करते हैं। स्थानीय संगठन विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम, वित्त पोषण, राहत देखभाल और मनोरंजक अवसर प्रदान कर सकते हैं। सहायता समूह परिवारों को जुड़ने, अनुभव साझा करने और समान चुनौतियों का सामना करने वाले अन्य लोगों से भावनात्मक और व्यावहारिक सहायता प्राप्त करने के अवसर प्रदान करते हैं।

जब परामर्श को पारिवारिक सहायता और सामुदायिक संसाधनों के साथ एकीकृत किया जाता है, तो बच्चों को अधिक सुसंगत देखभाल मिलती है, जिससे विकास में बाधा डालने वाले विखंडन को कम किया जा सकता है। एक सहयोगात्मक दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि विशेष जरूरतों वाले बच्चों को न केवल नैदानिक सेटिंग्स में, बल्कि उनके जीवन के सभी क्षेत्रों में सहायता दी जाए।

9.9 सारांश

बच्चों में विशेष आवश्यकताएँ जैसे बौद्धिक अक्षमता, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार, सीखने की अक्षमता, भावनात्मकव्यवहार संबंधी विकार और शारीरिक अक्षमता पाई जाती हैं/, जो उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक, और शैक्षणिक विकास को प्रभावित करती हैं। ऐसे बच्चों को समाजिक बहिष्कार और आत्मसम्मान की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसलिए उनके लिए परामर्श और निर्देशन अत्यंत आवश्यक है। यह उन्हें भावनात्मक सहयोग, शैक्षणिक मार्गदर्शन, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समावेशन में सहायता करता है। प्रारंभिक हस्तक्षेप मस्तिष्क विकास, भाषा कौशल, द्वितीयक अक्षमताओं की रोकथाम, स्वायत्तता और स्कूल की तैयारी में विशेष भूमिका निभाता है, जिससे बच्चों

की जीवन गुणवत्ता में दीर्घकालिक सुधार संभव होता है। निर्देशन और परामर्श के सिद्धांतों में समग्र दृष्टिकोण, गोपनीयता, व्यक्तिगत योजनाएँ, आत्मविषयक सहयोग प्रमुख हैं। परामर्श -सम्मान और बहु-केंद्रित परामर्श-तकनीकों में व्यक्ति, व्यवहार चिकित्सा, संज्ञानात्मकव्यवहार थेरेपी-, प्ले थेरेपी, कला और संगीत चिकित्सा तथा समाधानकेंद्रित थेरेपी सम्मिलित हैं-, जो बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित की जाती हैं। ये सभी उपाय बच्चों को उनकी क्षमताओं को पहचानने, आत्मनिर्भर बनने और एक सकारात्मक जीवन की ओर अग्रसर होने में सहायता करते हैं।

9.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

8. यूनेस्को, (2001), अंडरस्टैडिंग एंड रेस्पॉडिंग टू चाइल्ड नीड्स इन इनक्लूसिव क्लासरूम, यूनेस्को से प्रकाशित।
9. मुखोपाध्याय, एस0 एण्ड मनी, एम0एन0जी0 (2002) एडुकेशन ऑफ चिन्ड्रेनन विद् स्पेफशल नीड्स , नई दिल्ली: आक्स.फोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. यूनेस्को, (2004), इमब्रासिंग डायवर्सिटि टूलकिट फॉर क्रिएटिंग इनक्लूसिव लर्निंग फ्रेंडली इनवायरमेंट यूनेस्को की वेबसाइट से लिया गया।
11. रेनाल्डस सी.आर. एंड जानजेन इ.एफ. (Ed), (2007), इनसालक्लोपीडिया ऑफ स्पेशल एजुकेशन, जॉन वाइली एंड संस से प्रकाशित।
12. मंगल एस.के., (2007), विशिष्ट बालक, प्रेंटिल हॉल ऑफ इंडिया से प्रकाशित।
13. गोविन्दर राव, एल0 (2007), पर्सपेक्टिव ऑन स्पे शल एडुकेशन: हैदराबाद: नीलकमल पब्लिकेशन।
14. इग्नू (2009) फाउनडेशन कोर्स आन एडूकेशन ऑफ चिन्ड्रे न विद डिसएबिलिटीस। नई दिल्ली, इग्नू।

9.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के संदर्भ में निर्देशन और परामर्श के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
2. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के साथ प्रारंभिक हस्तक्षेप के महत्त्व की वर्णन कीजिए।
3. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए निर्देशन और परामर्श के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।
4. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए परामर्श तकनीकों के प्रकारों की व्याख्या कीजिए।
5. परामर्श प्रक्रिया में परिवारों और समुदाय की भूमिका का वर्णन कीजिए।